NOT FOR SALE

शाक्त तंत्र साफल्य विशेषांक

मार्च 2005

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

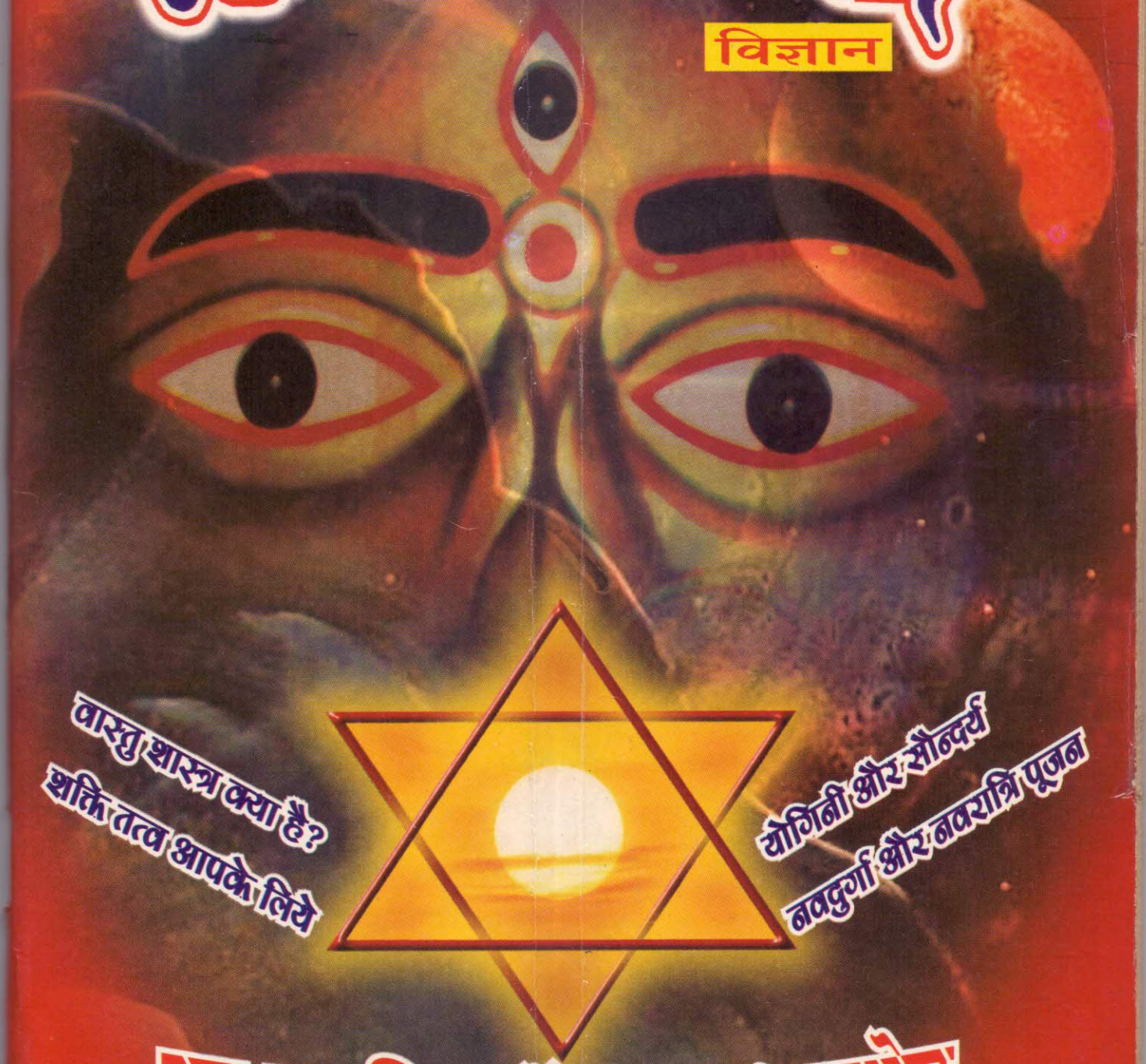

वास्तु शास्त्र क्या है?
शक्ति तत्व आपके लिये

योगिनी और सौन्दर्य
नवदुर्गा और नवरात्रि पूजन

दस महाविद्याओं पर ६१ प्रयोग

A Monthly Journal

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

स्वर्णाकर्षण गुटिका

व्यापार वृद्धि, कर्ज मुक्ति, आर्थिक लाभ की अद्भुत गुटिका

जिस प्रकार पारस पत्थर सामान्य धातु को भी स्वर्ण में परिवर्तित कर देता है उसी प्रकार लक्ष्मी की स्वरुप स्वर्णाकर्षण गुटिका मनुष्य के जीवन को दीनता, हीनता से मुक्ति दिलाकर उसे लक्ष्मी युक्त बना देती है।

यह प्रयोग जो कि लक्ष्मी से संबंधित है, कोई भी साधक आर्थिक लाभ, स्थाई सम्पत्ति, नौकरी लगने, प्रमोशन या व्यापार करने, ऋण मुक्ति, व्यापार में बिक्री की बढ़ोतरी तथा गृहस्थ सुख, वैभव-विलास प्राप्त करने हेतु सम्पन्न कर सकता है, आवश्यकता केवल शुद्ध रूप से साधना करने की है।

लक्ष्मी केवल धन की देवी ही नहीं अपितु यह तो सुख-सौभाग्य, कामना पूर्ति, यश वृद्धि की देवी है।

साधना प्रयोग

यह साधना साधक **किसी भी बुधवार को** शुभ नक्षत्र में प्रारम्भ कर सकता है, साधना के लिए किसी पंडित को बुलाने की आवश्यकता नहीं है, स्वयं प्रयोग करने तथा मंत्र जप करने से सफलता शीघ्र प्राप्त होती है, साधना प्रारम्भ करते समय गुरु का ध्यान कर आशीर्वाद प्राप्त कर जिस विशेष उद्देश्य हेतु प्रयोग सम्पन्न कर रहे हैं, उस उद्देश्य की पूर्ति करने का संकल्प अपने दाएं हाथ में जल लेकर अवश्य ही करना चाहिए।

स्नान कर साधक पीला वस्त्र पहिन कर अपने सामने लक्ष्मी चित्र स्थापित करें, कुंकुम, पुष्प, नैवेद्य चढ़ाए तथा सामने किसी भी प्रकार के तेल का दीपक लगा लेना चाहिए, दीपक के पास (दीपक के किसी भी तरफ) '**स्वर्णाकर्षण गुटिका**' स्थापित कर देनी चाहिए, यह काले रंग की छोटी सी गोली के समान होती है और धूप में इस गोली को देखे तो काले रंग की गोली होते हुए भी पीली, हरी या लाल झाई सी दिखाई देती है, यह गुटिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है और इस पर कई प्रयोग सिद्ध किये जाते है।

स्वर्णाकर्षण गुटिका को सामने रख कर निम्न मंत्र की '**कमलगट्टे की माला या अन्य किसी मंत्र सिद्ध माला**' से 11 मालाएं फेरने से ही लक्ष्मी साधना सम्पन्न की जाती है और शीघ्र ही वह इसके आश्चर्यजनक परिणामों से प्रभावित होता है।

मंत्र : *// ॐ ह्रीं ऐं अष्टलक्ष्म्यै धन धान्य समृद्धिं देहि देहि ऋणमोचन व्यापारोन्नति प्राप्त्यर्थ ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै नमः //*

साधना के बाद प्रातः काल उस गुटिका को अपने तिजोरी या पूजा स्थान में रख देनी चाहिए, इसके बाद नित्य इसकी पूजा आवश्यक नहीं होती, ऐसा करने पर यह गुटिका विशेष प्रभावयुक्त होकर साधक को मनोवांछित फल देने में सहायक होती रहती है।

भविष्य में यदि साधक चाहे तो इस गुटिका पर अन्य प्रयोग भी सम्पन्न कर सकता है, ऐसा करने पर पहले किये गये अनुष्ठान में कोई न्यूनता नहीं आती, इस प्रकार यह गुटिका 108 प्रकार की साधनाओं के लिए उपयुक्त मानी गई है।

स्वर्णाकर्षण गुटिका - 150/-

सम्पर्क : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)
फोन : 0291-2432209, 2433623 फैक्स : 0291-2432010

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन 5

स्तम्भ

गुरुवाणी 44
शिष्य धर्म 46
मैं समय हूं 59
नक्षत्रों की वाणी 60
जीवन सरिता 62
वाराहमिहिर 64
इस मास दिल्ली में 80
एक दृष्टि में 86

वर्ष 25 अंक 03
मार्च 2005 पृष्ठ 88

साधना

जया दुर्गा साधना 28
तंत्र की 9 साधनाएं 32
षोडश योगिनी साधना 37
दस महाविद्याओं पर 61 प्रयोग 47
नवदुर्गा साधना 75

पूजन

नवरात्रि पूजन 70

विवेचन

मां भगवती विदित है और जगति जय जननी है 23
वास्तुशास्त्र 'यह है क्या बला' 65

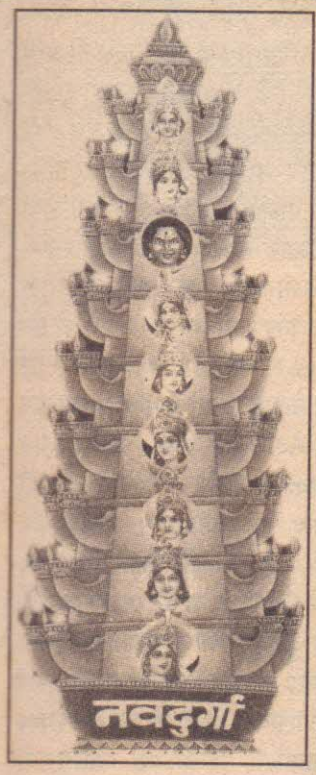

कवच

मातङ्गी - त्रैलोक्य मङ्गल-कवच 82

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

संयोजक व्यवस्थापक
श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक एवं स्वामित्व
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
द्वारा
सुदर्शन प्रिन्टर्स
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड़, नई दिल्ली-**87**
से मुद्रित तथा
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट
कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रतिः 18/-
वार्षिकः 195/-

:: सम्पर्क ::
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोनः 011-27182248, टेली फैक्सः 011-27196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोनः 0291-2432209, टेली फैक्सः 0291-2432010
WWW address – **http:/www.siddhashram.org** E-mail add. – **mtyv@siddhashram.org**

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद–विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी।
त्वमबाधा सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका॥
कार्यार्थं सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्।
परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी॥
तेजाः स्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रह।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा॥
सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमङ्गलमङ्गला॥

तुम्ही विश्वजननी मूलप्रकृति ईश्वरी हो, तुम्हीं सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्याशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती हो। यद्यपि वस्तुतः तुम स्वयं निर्गुण हो तथापि प्रयोजनवश सगुण हो जाती हो। तुम परब्रह्मस्वरूप, सत्य, नित्य एवं सनातना हो। परमतेज स्वरूप और भक्तों पर अनुग्रह करने के हेतु शरीर धारण करती हो। तुम सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार एवं परात्पर हो। तुम सर्वबीज स्वरूप, सर्वपूज्या एवं आश्रयरहित हो। तुम सर्वज्ञ, सर्वप्रकार से मङ्गल करने वाली एवं सर्वमङ्गलों की भी मङ्गल हो।

☆ व्यक्ति को पहचानिये ☆

दुर्योधन और युधिष्ठर के गुरु द्रोणाचार्य ने दोनों की शिक्षा पूरी होने पर उनके चरित्र विकास की स्थिति के आकलन के लिए अलग से परीक्षा ली, क्योंकि आगे चलकर वे शासन के प्रमुख होने वाले थे। गुरु द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को पहले अपने पास बुलाया और कहा - **'जाओ, एक अच्छे व्यक्ति को तलाश कर मेरे पास लाओ।'** दुर्योधन के जाने के बाद उन्होंने युधिष्ठिर को बुलाया और कहा कि **'जाओ एक बुरे व्यक्ति को तलाश कर लाओ'**। सायंकाल तक भटकने के बाद दोनों राजकुमार अकेले लौट आए। दुर्योधन ने गुरुदेव से शिकायत की कि आपने किस काम में लगा दिया, दुनिया में कोई भला आदमी भी हो सकता है? मैं सवेरे से शाम तक भटकता रहा, मुझे तो एक भी भला आदमी नजर नहीं आया, जिसे आपके पास लाता।

गुरुदेव ने युधिष्ठिर की तरफ दृष्टिपात किया तो युधिष्ठिर ने कहा, 'गुरुदेव! मैंने लोगों से बुरे व्यक्ति के बारे में पूछताछ की, मुझे लोगों ने कई नाम बताए, लेकिन जब मैं उनसे मिला तो मुझे आभास हुआ कि उनमें तो अनेक गुण मौजूद हैं। मुझे ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला जो सम्पूर्ण रूप से बुरा हो, इसलिए गुरुदेव मैं किसी को भी आपके पास लाने में असमर्थ रहा।'

वास्तव में मनुष्य की मन की दृष्टि पर ही निर्भर करता है कि वह जीवन में अच्छाई देखें या बुराई देखें। यदि हम बुराई देखना प्रारम्भ करेंगे, तो हर व्यक्ति में कुछ ना कुछ दुर्गण होंगे और यदि अच्छाई देखेंगे तो हर व्यक्ति में कुछ अच्छे गुण अवश्य दिखाई देंगे। अच्छे गुणों को देखने से स्वयं के भीतर भी अच्छे भाव उत्पन्न होते हैं।

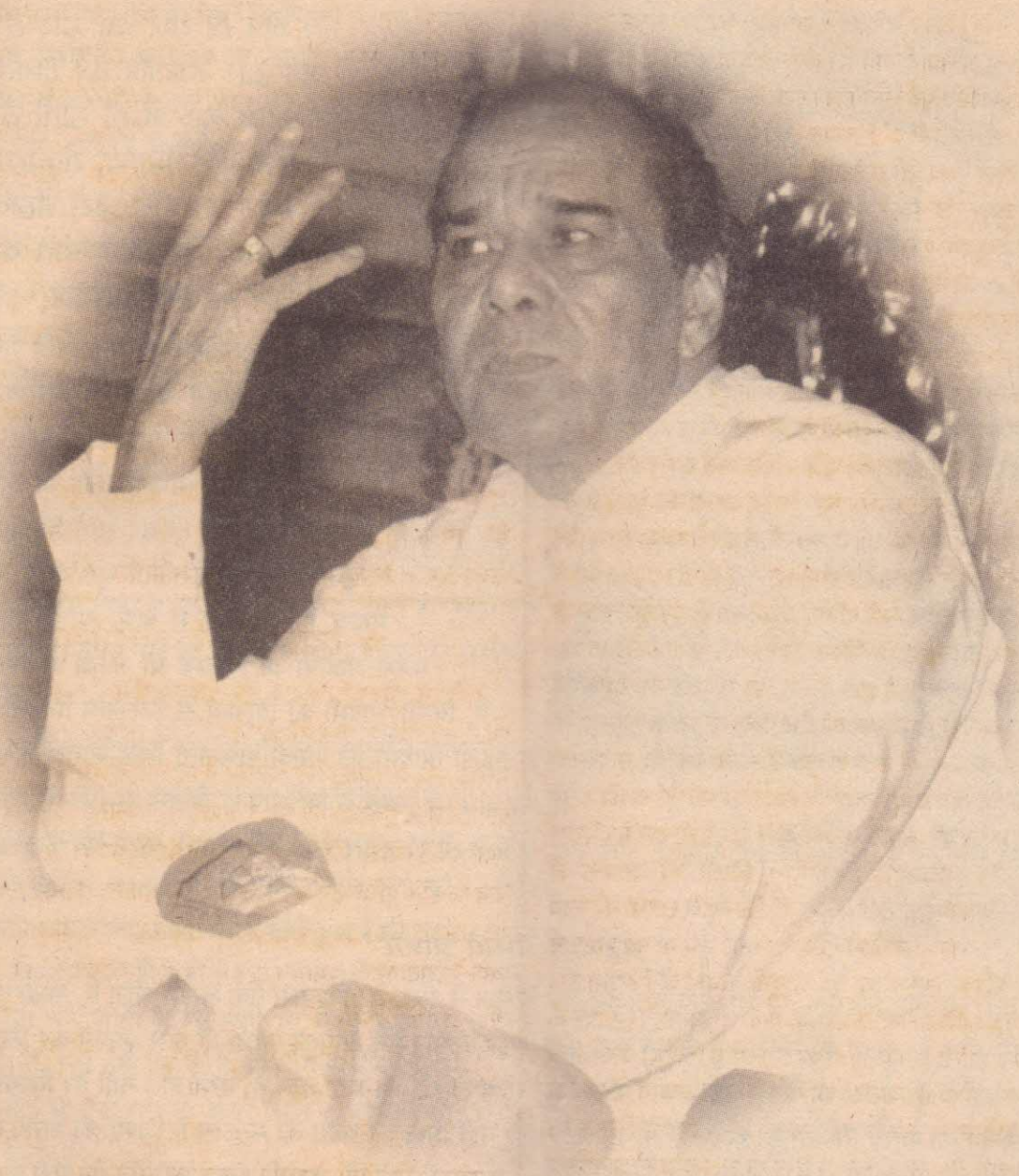

नयन बने आत्मद्वार

प्रेम ही जीवन का सत्य है और प्रेम प्रकट होता है, नेत्रों के माध्यम से और नेत्र ही मन का द्वार है। यह द्वार खोलने की क्षमता सक्षम गुरु में ही होती है। प्रेम, गुरु, शिष्य, संन्यास, श्रद्धा, समर्पण जैसे महान् विषयों पर सद्गुरुदेव का यह ओजस्वी प्रवचन -

गुरु दीक्षा का मतलब है गुरु तुम्हें अपने प्राणों से लगाकर अपना ही मान रहे हैं और आज से तुम कोई भी साधना, कोई भी कार्य करोंगे तो गुरु तुम्हारे साथ बिल्कुल उपस्थित रहेंगे इसलिये गुरु दीक्षा का महत्व है। साधना में कभी थोड़ा बहुत प्लस-माईन्स या विलम्ब या जल्दी हो जाता है, किसी आदमी को विलम्ब से सफलता मिलती है तो किसी आदमी को जल्दी सफलता मिल जाती है। यह तो इस बात पर निर्भर है कि आपका कितना समर्पण है, आप कितने समर्पित हैं, आपमें कितनी श्रद्धा है और श्रद्धा नहीं है तो दो हजार साल भी साधना करने पर कुछ नहीं मिल सकता।

''श्रद्धावान् लभ्यते ज्ञानम्''

ज्ञान, साधना, लक्ष्यता, पूर्णता, सफलता इन सब के मूल में श्रद्धा है। विश्वास एक अलग चीज है, श्रद्धा एक अलग चीज है। श्रद्धा का मतलब है आपने कहा और हमने किया। मैंने आपको आज्ञा दी और आपने कर लिया यह श्रद्धा है। विश्वास तो यह है कि उन्होंने कहा और सोच लेते हैं कि क्या बात है, क्या बात नहीं है। विश्वास में सोचने का समय मिलता है। श्रद्धा में सोचने का समय नहीं मिलता। श्रद्धा का मतलब है शिष्य की अगर मेरे प्रति श्रद्धा है, मेरी भी श्रद्धा आपके प्रति हो सकती है। यह जरूरी नहीं कि आपकी श्रद्धा मेरे प्रति हो। मेरी श्रद्धा भी आपके प्रति हो सकती है। गुरु के प्रति भी आपकी श्रद्धा है। आपने कहा और मैंने कर दिया आपका काम, आपकी तकलीफ है मैंने उसको निपटा दिया। मेरी श्रद्धा आपके प्रति उतनी है, आपकी श्रद्धा भी गुरु के प्रति उतनी ही होनी चाहिये, यदि आपने मुझे गुरु माना है या देवता माना है।

अब वो क्षण आपका नहीं रहा कि आप विश्वास करें। विश्वास से ऊपर उठकर आप वहां पहुचे हैं जहां श्रद्धा रहती है। अब सौंप दिया है आपको, तो सौंप दिया है। जो कुछ मिल जायेगा, जो नहीं मिलेगा, वह तो भाग्य में लिखा हुआ है ही कि नहीं मिल रहा है, इसीलिये तो तकलीफ भोग रहे हैं। ये हमारे जीवन में नहीं लिखा हुआ है। इसलिये तो हम तकलीफ पा रहे है धन या यश या प्रभुता या ऐश्वर्य या साधना यह तो है ही नहीं। विधाता ने लिखी ही नहीं कलम से यह बात, तो नहीं मिलेगा। आपके प्रति श्रद्धा है, श्रद्धा है मुझे मिल जाना चाहिये। केवल

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

शब्दों के माध्यम से नहीं, विचारों के माध्यम से, चिंतन के माध्यम से, अपनत्व के माध्यम से।

प्रत्येक प्रयोग, प्रत्येक साधना हम करें। क्योंकि कौन सा गेहूं का बीज हम बोते है, किसान डालता है मिट्टी में और कौन सा बीज बिल्कुल बरबाद हो जाता है और कौन सा बीज सौ बाली लेकर खड़ी हो जाती है, यह उसके ऊपर निर्भर है। इसलिये इन साधनाओं में कौन सी साधना आपको एकदम से सिद्ध कर देगी और सफलता दे देगी। आवश्यकता इस बात की है कि आपका और मेरा सम्बन्ध बना रहना चाहिये, और बना रहे, केवल इसलिये नहीं कि मैं आपका गुरु हूं, इसलिये नहीं कि आप मेरे शिष्य है। शिष्य के आगे एक समर्पण का भाव आता है।

शिष्यता तो आगे की चीज है। समर्पण का मतलब है कि अब मेरा मेरे पास कुछ नहीं है। मेरे मां-बाप, भाई-बहन मेरे कुछ नहीं है। यह केवल एक बंधन है जो मुझे अपना बेटा मानते है। मेरा दुनिया में कुछ नहीं है बस खत्म। इतना समर्पण आये, तब मैं तुम्हारे हृदय में लीन हो सकूंगा। लीन होना ही पड़ेगा, क्योंकि आपमें क्षमता है खींच कर के अपने हृदय में लीन करने की। कोई व्यक्ति वश में आना नहीं चाहता, कोई व्यक्ति आपके कंट्रोल में आना नहीं चाहता, कोई घर की पत्नी ही कहे तो आपके वश में आते-आते 20 साल लग जाते हैं कि आपकी बिल्कुल आज्ञा माने। कई बार लड़ाई-झगड़े करेगी, कई बार मानेगी, कई बार नहीं मानेगी और वह धक्का मुक्की चलती रहती है। बीस-चालीस साल में भी पूरा समर्पण नहीं हो पाता है और जहां समर्पण हो जाता है वहां लड़ाई झगड़ा होता ही नहीं। आप भी पूर्ण समर्पित नहीं हो पाते, वह भी पूर्ण समर्पित नहीं हो पाती।

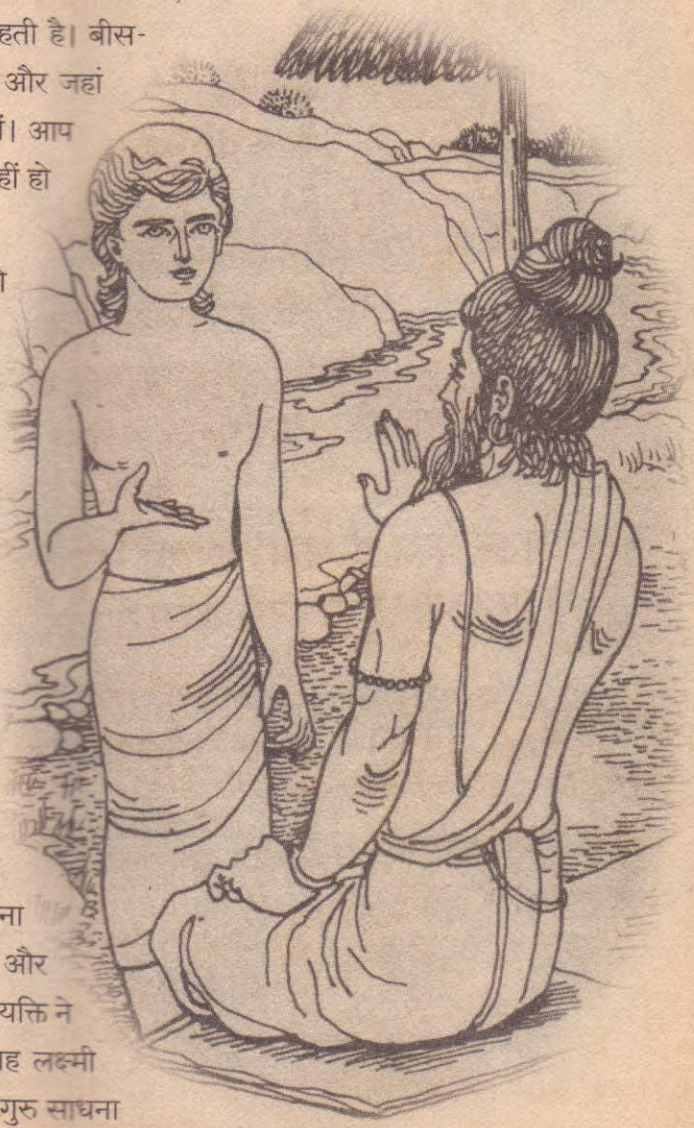

इसलिये आप भी गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित नहीं हो पाते तथा गुरु भी आपके प्रति पूर्ण समर्पित नहीं हो पाते। समर्पण पूर्ण होना चाहिये। स्वयं अर्पण, इक्वलीटी में आ कर के बिल्कुल अपने आप को समर्पित कर देना, छोड़ देना। कोई कुछ है ही नहीं जो कुछ होगा तो फिर होगा। इस लेवल में आपकी भावना बन जाती है कि कोई भी साधना अपने आप में न्यून नहीं रह पाती और सौ साधनाओं में से कोई भी एक साधना अगर सिद्ध हो गई यह ही हो जाती है।

यह कलियुग है कलियुग में इतना शुद्ध खान-पान नहीं मिलता। इतना विचार, इतना विश्वास, इतनी भावना, इतनी शुद्धता, इतनी पवित्रता नहीं बन पाती, तो विलम्ब हो जाता है और अगर एक भी साधना सिद्ध हो गई तो आपकी कई पीढ़ियां सिद्ध हो जायेगी और सफलता पा जायेंगी। आपमें से कोई भी व्यक्ति, एक व्यक्ति ने क्लिक कर दिया और साधना में सफलता, चाहे वह लक्ष्मी साधना हो, भैरव साधना हो, हनुमान साधना हो या गुरु साधना

हो यदि एक भी सिद्ध हो गई तो पूरा जीवन आपका सफल हो जायेगा, जो मेहनत की वह पूरी पक जायेगी।

नदी के बीच धार में रुकने से काम नहीं चलेगा, नदी के उस पार पहुंचना है। नदी के इस किनारे को आपने छोड़ दिया है और नदी के उस छोर पर गुरु जी खड़े हैं, इस पार आपका परिवार खड़ा था। आपने नदी में छलांग लगा दी है और बिल्कुल बीच में आकर खड़े हो गये हैं, और वापिस जाये तो परिवार वाले आपको संभालेंगे नहीं। कहेंगे कि जा रहे थे क्या हुआ? लो वापस गये। अब वो किनारा आपके पास नहीं बचा। अब वो ही किनारा, दूसरा किनारा जहां गुरुजी खड़े है वहां पहुंचना ही जरूरी है। इस बीच बहुत तूफान है, बहुत संघर्ष है, बहुत पानी का बहाव है, बहुत भंवरजाल है या तो आप डूब जायेंगे। मगर गुरु की दृष्टि आप पर है बराबर, डूबने आपको देंगे नहीं इस बात की गॉरन्टी है।

पहाड़ पर सिर्फ पहुंचना ही नहीं है, पहाड़ पर पहुंचने के लिये हिम्मत चाहिए, साहस चाहिए, संघर्ष चाहिये, क्षमता चाहिये, जीवट शक्ति चाहिये। जाना है उस पार, तो जाना ही है क्योंकि यही मेरा लक्ष्य है, यही मेरा चिंतन है यही मेरा जीवन है बाकी सब कुछ यहीं रह जायेगा। जो कुछ मेरा है, ये यौवन, ये शरीर यहीं रह जायेगा। मैं साथ में नहीं ले जा सकता ये सब, कपड़े भी मेरे साथ नहीं जा सकेंगे। अगर मैं मोह रखूं तो व्यर्थ है। मैं अभी आपके घर भेजता हूं, वापिस वो तुम्हारा घर है, वहां जाओ मगर वहां जाने के बाद भी आप अगर भूल जाते है। इस किनारे को तो आपकी सब मेहनत बेकार हो जायेगी। वहां जाने के बाद भी आप याद रखो कि मुझे यहां भेजा है वापिस उस भंवलजाल में, इस भौचाल से मुझे जूझना है। जूझके भी उस पार पहुंचना है भंवरजाल का मतलब इस पानी का भंवरजाल नहीं है। भंवरजाल आपका परिवार है, आपके आलोचक है, आपको गालियां देनेवाले हैं, आपकी प्रोब्लम हैं, आपकी समस्याएं हैं, आपकी न्यूनताएं है।

वो भंवरजाल है, इतने-इतने भंवरजालों को पार करता हुआ, यदि वह गुरु के पास पहुंचा है। उस पार पहुंचा है, तो वो आपकी तरह लड़का ही था। 20 साल का, 22 साल का, 24 साल का ही था, उसकी जवानी थी, उसकी भी पत्नी थी, उसका भी घर था। वो भी किनारा छोड़कर के कूदा था, अब वापिस किनारे आ जाता हैं तो भी भूखे तो मरता नहीं, वो खाना तो खा ही जाता। अब निश्चय ये था कि उस पार पहुंचना है, बीच में बहुत उलझनें थीं। अगर वो उस पार पहुंच गया तुम्हारा "**गुरु**", तो तुम

भी उस पार पहुंच सकते हो। क्योंकि उसको मालूम है कि तैरना कैसा होता है। घर कैसा होता है गृहस्थ कैसा होता है और घर की तकलीफें कैसी होती हैं, तनाव कैसा होता है, परेशानियां कैसी होती हैं। उनके बीच में यदि आपके प्रति वो समर्पित है तो आप भी उतना ही समर्पित होंगे और उसके लिए रोने की जरूरत नहीं हैं, उदास होने की भी जरूरत नहीं है, उसके लिए हर क्षण मुस्कुराहट जरूरी है और फिर होली के क्षण पर मैंने आपको बुलाया है।

उस समय तो बिल्कुल आपको नृत्यमय बनना है। हर क्षण नाचते हुए, झुमते हुए, उल्लासमय। आज के दिन के बाद लगे की वास्तव में इन्सानियत अभी बाकी बची हुई है। आपके लड़कों को भी पता चलेगा कि मस्कुराहट किसे कहते हैं। पता नहीं पड़ता, हंसी क्या होती है, अट्टाहास क्या होता है जोर से एकदम से हंसें, वैसे आपने अपनी पूरी जिन्दगी में देखा भी नहीं होगा कि अट्टाहास भी कुछ होता है। क्योंकि भूल गये हैं हम। मुम्बई में जो बान्द्रा में रहते हैं और नौकरी करते है चर्च गेट में, तो सुबह 5 बजे बिचारे बस में बैठते हैं और 6 बजे, 7 बजे अपनी ड्यूटी पर जाते हैं और वापसी वहां से 8 बजे की होती है। वापिस घर आते-आते 11 बजे जाते हैं। क्योंकि 2, 2.30 घण्टे का वो सफर का समय होता है। लड़का होता है, वो लड़का शाम को 8 बजे सो जाता है। बाप घर आता है 11 बजे। सुबह जो लड़का 6-7 बजे उठता है, बाप चला जाता है सुबह 5 बजे, तो बाप को देखता ही नहीं कि बाप कैसा होता है। सण्डे को देखता है तो कहता है '**सण्डे वाला पापा**' है, बस खत्म। ये कौन हैं? ये मेरे सण्डे वाला पापा जी हैं, ऐसी स्थिति तुम्हारी बन गई है। तुम भी अब घर जाते हो, तो सण्डे वाले पापा बनने की जरूरत नहीं है। बिल्कुल उसमें जूझिये और मुस्कुराइये, वो मुस्कुरा नहीं सकता, काम में दौड़ता है और उसकी जीवनी यही लिखी है। वो लोकल ट्रेन लिखी है, उसके भाग्य में। तुम्हारे भाग्य में मुस्कुराहट भी लिखी है, हंसी भी लिखी है, साधना भी लिखी है, समर्पण भी लिखा है, न्यौछावर कर देने की क्षमता भी लिखी है और आप करते हैं। मगर उसमें और ऊपर उठकर के समर्पण होना चाहिये।

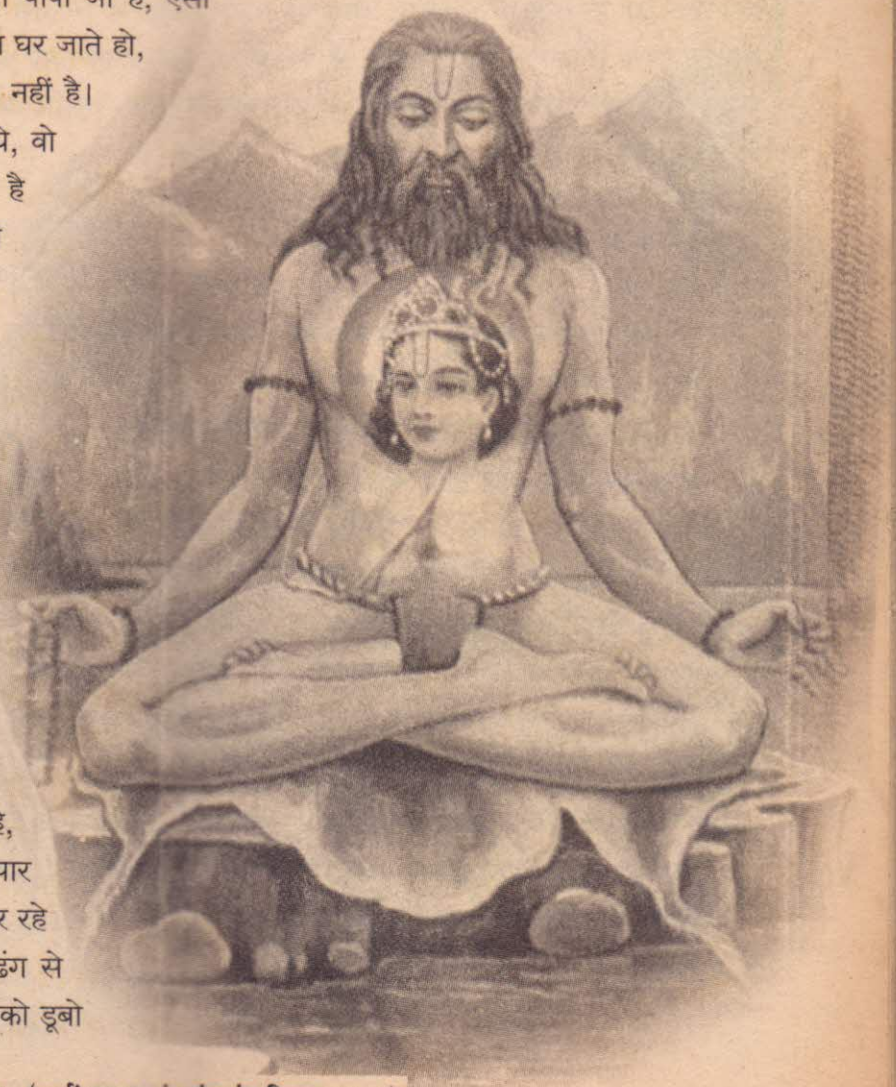

"**गुरु दीक्षा**" का तात्पर्य यही है, हम गुरु दीक्षा इसलिये ले रहे है कि आपका काफी कुछ काम मैं कर दूं। जो आप में कम है, जो आप नहीं कर पा रहे, उस रास्ते को मैं आपको सहारा देकर पार करा दूं, क्योंकि यदि आप किसी का कर रहे हो और सहारा दें और उसको सही ढंग से तैरना नहीं आये तो पहले तो आप उसको डूबो

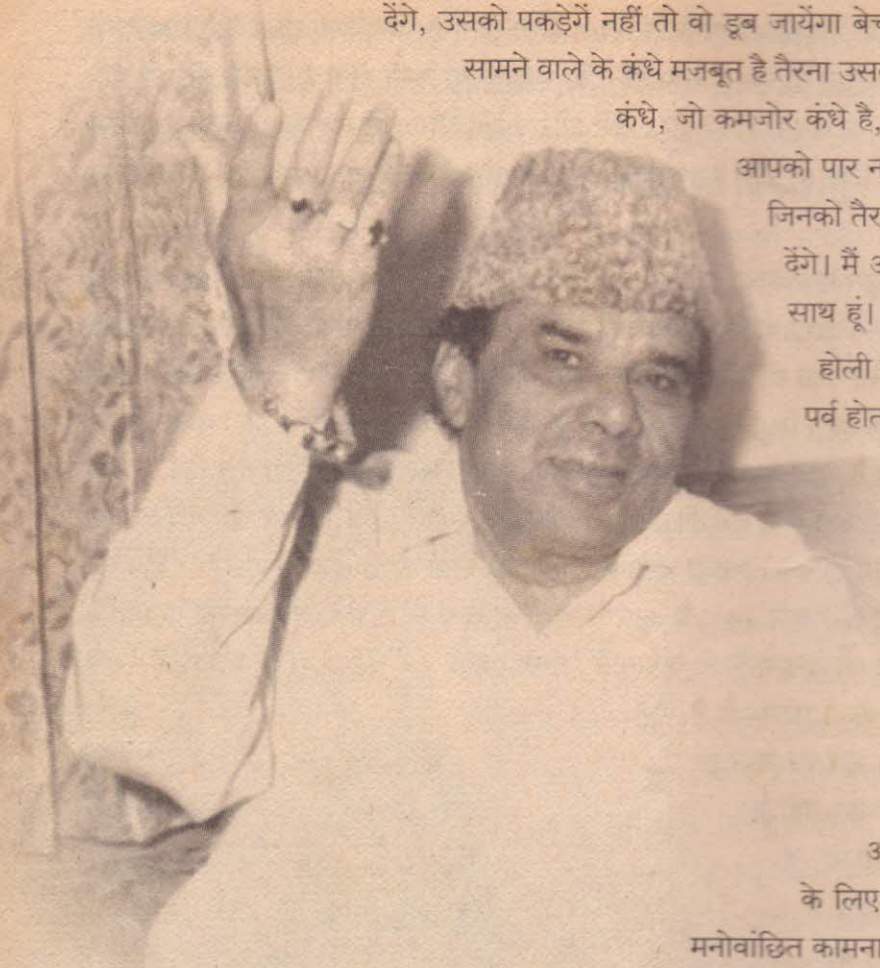

देंगे, उसको पकड़ेगें नहीं तो वो डूब जायेंगा बेचारा। फिर आप भी डूब जायेंगे। अगर सामने वाले के कंधे मजबूत है तैरना उसको आता है, तो आपको पार लगा देगा। कंधे, जो कमजोर कंधे है, उनका सहारा लेकर मत चलिये। वो आपको पार नहीं लगा सकते जिनके मजबूत कंधे है, जिनको तैरना आता है वो आपको जरूर पार लगा देंगे। मैं आपके साथ में हूं हर क्षण, हर जन्म में साथ हूं।

होली का पर्व ही अपने आप में एक महत्वपूर्ण पर्व होता है। क्योंकि यह एक ऐसे क्षण होते है, ऐसे दिन होते हैं, जब बसन्त ऋतु का प्रारम्भ हो चुका होता है, सूर्य उत्तरायण की तरफ आ चुका होता है और अन्य जितनी भी साधनाओं के लिये जो श्रेष्ठ ग्रह नक्षत्र होते हैं, खास करके अनुराधा, हस्त और पुष्य उन तीनों नक्षत्रों का परस्पर मेल होता है। वह केवल होली के अवसर पर ही होता है और 22-23 मिनट के लिए होता है। इसमें यदि किसी प्रकार की मनोवांछित कामना हो या कोई कार्य हो या कोई इच्छा हो या कोई साधना हो तो पूर्ण सफलता मिलती ही है।

इस होली के अवसर पर जब कुरुक्षेत्र का युद्ध प्रारम्भ हुआ तब श्री कृष्ण के पास या पाण्डवों के पास कोई बहुत बड़ी सेना थी नहीं और कौरवों के पास बहुत बड़ी सेना थी, 18 अक्षौहिणी सेना। इधर केवल पांच पाण्डव और कुछ लोग ही थे, उसमें उन्होंने एक मुहूर्त निकाला था। होली अवसर पर ग्रहण भी था और ठीक जब ग्रहण मध्यकाल में था और होली का वो टाईम आया था उस समय युद्ध प्रारंभ हुआ था। तब तक का समय उन्होंने गीता पर बोलते-बोलते पास किया। सेनायें तो पहले ही आकर के खड़ी हो गई थी। अब कृष्ण समझ रहे थे कि ठीक समय पर युद्ध प्रारम्भ नहीं हुआ तो न मैं विजय प्राप्त कर पाऊंगा, न ये पाण्डव विजय प्राप्त कर पायेंगे और उस के लिए विशेष मुहूर्त की आवश्यकता होगी। विजय काल की, विजय मुहूर्त की और ऐसा समय होली अवसर पर जब ग्रहण भी था। जो मैं आपको 22-23 मिनिट बता रहा था। उन विशेष क्षणों में जब युद्ध प्रारंभ हुआ तो इतिहास इस बात का साक्षी है कि उस 18 अक्षौहिणी की सेना को समाप्त करके पांडव विजयी हुए, विजय प्राप्त की।

इसलिये जब इन तीनों नक्षत्रों का मेल होता है होली के अवसर पर, तब किसी भी प्रकार का कार्य चाहे युद्ध हो, चाहे शांति हो, चाहे लक्ष्मी हो, चाहे किसी भी प्रकार की साधना या विचार या चिंतन या धारणा पूर्ण होती ही है। और एक नहीं, इतिहास में सैकड़ों उदाहरण है इस प्रकार के अवसर पर उन्होंने साधना की और सफलता पाई।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

जिन्दगी जिंदा दिली का नाम है,
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं।

और जब मैं जिंदादिली नहीं देखता हूं, जोश नहीं देखता हूं, उत्साह नहीं देखता हूं। जैसे आपके पीले वस्त्र है, वैसा ही आपका चेहरा भी पीला देखता हूं। तो मेरा उत्साह भी ठंडा हो जाता है। पीले वस्त्र पर जिस प्रकार लाल अक्षरों में गुरु मंत्र लिखा गया है उसी प्रकार आपके चेहरे पर गुरु मंत्र की लालिमा निरन्तर छायी रहेगी तभी तो आपका चेहरा देदीप्यमान हो सकेगा। मुर्झाए हुए चेहरे से, मुर्झायी हुई आंखों से, आकर्षण हीन चेहरे से जीवन नहीं जिया जा सकता। जीवन काटा जा सकता है। क्योंकि जीवन तो निरन्तर चलता ही रहेगा रात के बाद दिन, फिर रात, फिर दिन। लेकिन इसमें जीवन का सारभूत तथ्य नहीं है। जीवन का सारभूत तथ्य बल भी नहीं है, जीवन का सारभूत तथ्य बलवान शरीर भी नहीं है, जीवन का सारभूत तथ्य केवल और केवल यश और प्रतिष्ठा है। केवल यदि आपके शरीर में, जीवन में एक आकर्षण है तो कोई भी लक्ष्य आप प्राप्त कर सकते हैं। वैसे तो प्रभु ने आपको हजारों चक्षु दिये हैं। अपने शरीर में जितने भी पसीने के रंध्र है ये भी चक्षु हैं। लेकिन जो दो चरम चक्षु आपको परमात्मा ने प्रदान किये हैं। उन दो चरम चक्षुओं के माध्यम से, केवल उन दो चक्षुओं के माध्यम से व्यक्ति में वो आकर्षण, वो तेजस्विता, वो वशीकरण की क्रिया की जा सकती है जिससे हजारों लोग आपके अनुयायी बन सकते हैं, हजारों लोग आपको सुनने को आतुर हो सकते है।

यह हरीहर बाबा है, यह महाकाल बाबाजी हैं अथवा पंड़ित गोपीनाथ कविराज हैं और जो बड़े-बड़े संत महापुरुष, जो भी हुए हैं। हरीहर बाबा जी तो बड़े ही कृषकाय थे, लेकिन उनकी आंखों में इतना तेज था कि सामने वाला आंख से आंख मिलाकर करके बात नहीं कर सकता था और जब दीक्षा के समय बार-बार कहा जाता है कि तुम गुरुदेव के नेत्रों की ओर देखो। तो मुझे यही लगता है कि तुम केवल दृष्टिपात करते हो और ये

दिव्यपात करते हैं। केवल तुम्हें कहा जाता है 2 मिनट इन नेत्रों में देखो, इन नेत्रों की जो अग्नि स्फुलिंग है उसे अपने जीवन में ग्रहण कर लो। तो शायद तुम्हारे भीतर की अग्नि प्रज्ज्वलित हो जायें, तुम्हारी आंखों में भी वह आकर्षण उत्पन्न हो जाये, तुम्हारे अन्दर भी वशीकरण की वह क्रिया आ जाये। लेकिन तुम अपने नेत्रों का बिल्कुल उपयोग नहीं करते क्योंकि नेत्रों का उपयोग करना आपको आता ही नहीं। आप जब भी बात करते हैं तो दूसरी ओर देख कर बात करते हैं, आंख नीची करके बात करते हैं, आंख चुराकर के बात करते हैं। ये नेत्र मुझे सब भाषा कह देते है कि आपके मन में क्या भाव है, आप क्या कहना चाहते हैं? और यदि यही भाषा, नेत्रों की भाषा ही यदि आप पूर्ण रूप से नहीं समझ सकें, तो जीवन की भाषा भी नहीं समझ सकते।

तिब्बत में लामाओं के बड़े-बड़े मान्शट्री होती है वहां पहरेदार के रूप में कोई आदमियों को नियुक्त नहीं किया जाता, कुत्तों को भी नियुक्त नहीं किया जाता है, वहां बड़ी-बड़ी पहाड़ी बिल्लीयाँ होती हैं, वहां अपरिमित सम्पदा, वगैरह जो भी है। लामा तो साधनाओं में लीन रहते हैं, हिमालय में विचरण करते हैं। ये बिल्लीयाँ दस-दस घण्टे बिना पलक झपकायें परहा देती रहती हैं और यदि इन दस घण्टों के दौरान कोई आया या गया और लामा लोग जब वापस अपने मठ में आते है तो उनको सामान पहले देखने की जरूरत नहीं है, कि ताला बराबर लगा हुआ है कि नहीं लगा हुआ है। वे बिल्ली के नेत्रों में देख लेते हैं और देखते ही उनके सामने चलचित्र के समान स्पष्ट हो जाता है कि मेरी अनुपस्थिति में कौन आया था और कौन गया, क्या घटना क्रम यहां घटित हुआ था। इतनी बड़ी है नेत्रों की व्याख्या।

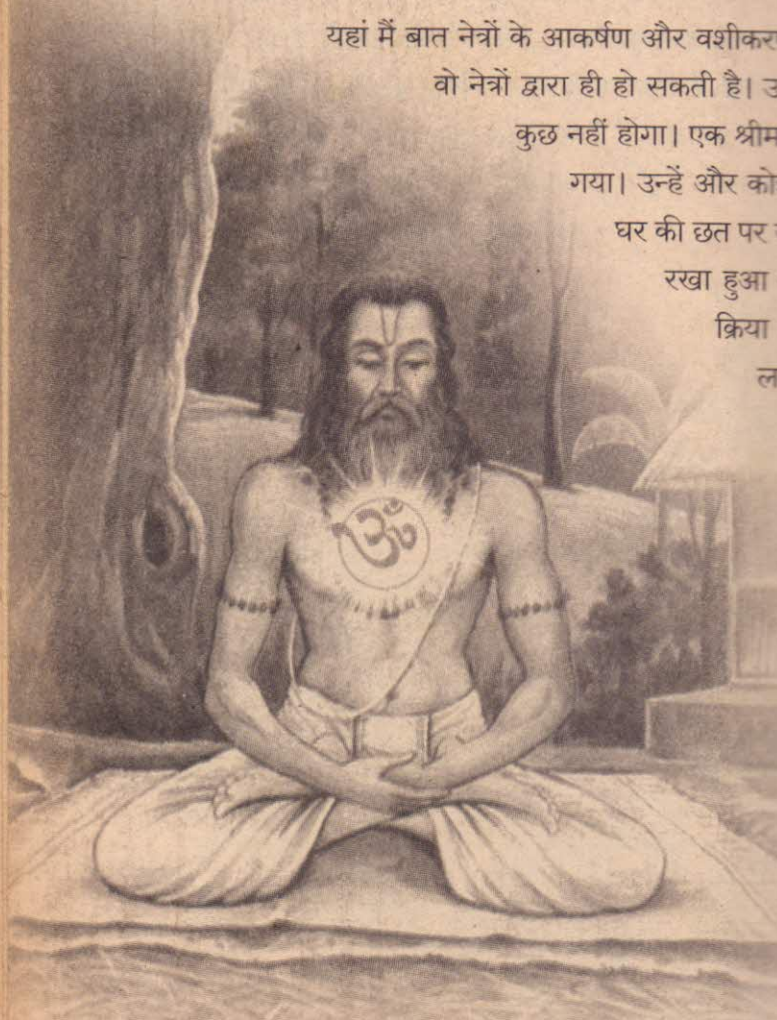

यहां मैं बात नेत्रों के आकर्षण और वशीकरण की कर रहा था। जो क्रिया नेत्रों द्वारा संभव है, वो नेत्रों द्वारा ही हो सकती है। उसमें आप चाहे कितनी ही पहलवानी करें, उससे कुछ नहीं होगा। एक श्रीमान् जी थे उन्हें अपने पड़ौस की लड़की से प्रेम हो गया। उन्हें और कोई भाषा तो आती नहीं थी, वो सुबह-सुबह अपने घर की छत पर जाते और छत पर उन्होंने लेख लिखने का सामान रखा हुआ था। वो सौ बार - दो सौ बार लेख लिखने की क्रिया करते। महीना बीत गया, दो महीना बीत गया, लड़की देखे ही नहीं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान कार्यालय पत्र भेजा। क्या किया जाये? पत्रिका पढ़ कर जो आपकी इच्छा हो कर लो। पत्रिका में पिछली बार बिल्ली की नाल का जो एक प्रयोग लिखा है। बिल्ली की नाल को मंत्र सिद्ध कर के यदि जमीन में गाड़ दिया जाये और उस पर कोई प्रेमिका पैर रख कर चले, स्त्री पैर रख कर चलें, तो मोहित होकर पीछे-पीछे आ जाती है। लिखा हुआ था पुराने ग्रंथों में।

उसने गाड़ दी। दीवार के पीछे छुप-छुप कर देखता रहा, प्रेमिका ठीक साढ़े दस बजे

निकलती है। पैर उसका वहां पड़ेगा ही पड़ेगा। वह निकली बेचारी कॉलेज का टाईम था। ठक-ठक करती निकली और सैड़ल उसके ऊपर रखा और आगे चलती बनी। उसने सोचा अब तो यह रुक जायेगी, सीधी दौड़ी-दौड़ी मेरे पास आयेगी। कुछ क्रिया नहीं हुई, तभी वो भाई मिलने आया मेरे पास। मैंने कहा - तू कहां था उस समय। उसने कहा मैं तो कोने में दीवार के पीछे छुप कर देख रहा था।

मैंने कहा मूर्ख भगवान ने तुझे दो नेत्र दिये हैं उन नेत्रों का उपयोग कर, खड़ाक कर के जा प्रेमिका के पास और उसके नेत्रों में देख कर के बोल कि मैं तुमसे प्रेम करता हूं।

आंख चुराने से आकर्षण की शक्ति नहीं आ सकती, वशीकरण की शक्ति नहीं आ सकती, पड़ौसी भी आपसे प्रभावित नहीं हो सकता है। प्रभावित तब होगा जब आपके अन्दर वशीकरण की शक्ति होगी, आपके भीतर शक्ति का अजस्र भण्डार है। उस शक्ति का प्रभाव नेत्रों के माध्यम से दूसरों पर आप प्रवाहित करेंगे और आकर्षण का, वशीकरण साधना का यही आधार है और उस आधारभूत तथ्य को समझने के लिये नेत्रों की क्रिया करनी पड़ती है।

नेति नेत्रोत्सव

नेत्रों में अग्नि भरनी पड़ती है और यदि आपमें आकर्षण, वशीकरण की शक्ति आ गई तो सम्मोहन तो बहुत छोटी बात हो जाती है। क्यों मुझे आपमें से सौ-दो सौ के ही नाम याद रहते है, क्यों हजारों नाम याद नहीं रहते। क्योंकि जब वे मेरे से बात करते हैं तो खुलकर बात करते हैं अपनी आकर्षण युक्त क्षमता के साथ बात करते हैं और जब जीवन में आकर्षण और वशीकरण की शक्ति आ जाती है तो आप केवल मास्टर, बाबू, क्लर्क या मजदूर बनकर नहीं रह सकते हैं क्योंकि आपको ऊंचा उठना ही पड़ेगा। क्योंकि आपमें दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता आ गई है। दूसरे आपकी बात को ध्यान से सुनेंगे। आप कुछ आदेश देने की क्षमता रखेंगे, जब आप कुछ आदेश देने की क्षमता रखेंगे। तो आपका धरातल अपने आप ऊपर उठ जायेगा और जब यह क्रिया मंत्र से नहीं हो सकती तो तंत्र से संभव है।

मंत्र, तंत्र और यंत्र से भी संभव नहीं है तो एक और स्थान है वहां संभव है, वो स्थान है गुरुदेव के पास। वहां कुछ भी असंभव है ही नहीं, क्योंकि उन्होंने मंत्र को भी समझा है, परखा है और अपने भीतर उतारा है। तंत्र,को भी समझा है और उसे बार-बार हजारों बार प्रयोग में लाये है और यंत्र के महत्व और उपयोग को भी समझा है

कि किस समय कौनसा यंत्र उपयोगी रहेगा, किस व्यक्ति के लिये कौनसी दीक्षा उपयोगी रहेगी, कौन व्यक्ति दीक्षा को कितनी तीव्रता से ग्रहण कर सकता है, तो अपने नेत्र खुले रखते हैं आप उन नेत्रों की शक्ति से कितना प्राप्त कर सकते हैं यह बहुत कुछ आप पर निर्भर करता है। लेकिन इस बार निश्चय ही आप एक समय भोजन करेंगे, दो रात जागेंगे। एकाध किलो वजन तो मैं आपका कम कर सकता हूं लेकिन इस वजन की पूर्ति, इतना विश्वास अवश्य दिलाता हूं कि मैं एक किलो शक्ति आपके नेत्रों में भर कर इस बार घर भेजूंगा। यह मैं वादा दिलाता हूं।

कर्त्तम वदाम
भक्ति सदैवम्
साधु वदाम्,
जीवन्त लक्ष्मी,
सदाम यशस्वी।

यह श्लोक शंकरभाष्य का बोल रहा हूं। शंकराचार्य जैसा व्यक्ति यह लिखता है कि संन्यासी, पूर्ण संन्यासी। आज भी संन्यासी उनकी मर्यादा के अनुसार चलकर के अपने आप को आंकते हैं कि मैं कितना संन्यासी हूं। उन्होंने अपनी जिन्दगी में संन्यास की उच्चतम स्थिति बनाई। यह बताया कि संन्यास किस प्रकार का होता है?, क्या होता है? उस व्यक्ति ने भी लिखा कि जीवन का आधार प्रेम है, हृदय का आधार प्रेम है, सफलता का आधार प्रेम है, भक्ति-साध्य और साधना का आधार प्रेम है और यदि जीवन में प्रेम नहीं है तो पुरुषत्व भी नहीं है, पौरुषता भी नहीं है, संन्यास भी नहीं है, सफलता भी नहीं है ऐसी बात शांकरभाष्य में लिखी। तो कई संन्यासियों ने आलोचना की कि संन्यासी प्रेम कैसे करेगा।

प्रेम का तात्पर्य लड़का या लड़की के आपस के सम्बन्ध को नहीं कहते। एक पुरुष का एक पुरुष से भी प्रेम हो सकता है, एक भक्त का भगवान से भी प्रेम हो सकता है, एक शिष्य का एक गुरु से भी प्रेम हो सकता है और कोई नहीं मिले तो अपने आप से भी प्रेम हो सकता है, कि मैं अपने आप से भी प्रेम करूं। मगर संन्यासी शंकराचार्य की यह बात सही है कि यदि प्रेम का उदय नहीं है तो जीवन नहीं है। यदि हमारे हृदय में प्रेम नहीं है, तो हमारे जीवन में किसी प्रकार का रस भी नहीं है, आनन्द भी नहीं है, उमंग भी नहीं है, जोश भी नहीं है आ ही नहीं सकता। केवल रोटी कमाना और रोटी बनाना और रोटी खाना और पैसा इक्ट्ठा करना और पत्नी ब्याहना ये प्रेम की क्रियाऐं नहीं है, ये मजबूरी की क्रियाऐं है और बाजार में प्रेम मिलता नहीं है। यदि आप कुछ रुपये लेकर जायें, किलो, दो किलो प्रेम खरीद कर ले आये, ऐसी कोई दुकान अभी तक बनी नहीं है कि प्रेम बिके और आप खरीद कर ले आयें और जैसा कि मैंने पहले बताया की वो

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

कॉलेज की लड़की से प्रेम करता था और उसको जाना चाहिये था सामने और हाथ पकड़ कर कहना चाहिये मैं तुमसे प्रेम करता हूं। तो ऐसा काम करना मत। क्योंकि उसको भी झापड़ मारने की साधना आती है। इसलिये एकदम से वो काम मत कर देना, यह ध्यान रखना चाहिये तुम्हे, ये मैं सलाह दे देता हूं। हां यह बात है कि इन दो दिनों में आपकी आखों में वह चिंगारी, वह प्रेम, वह अग्नि स्फूलिंग आ जाये तो फिर आपको हाथ पकड़ने की भी आवश्यकता नहीं है। वह अपने आप आपके सामने बातचीत करने के लिये उद्यत होगी या होगा ही।

जब विवेकानन्द अमेरिका गये, तो अमेरिका में उनको पूछा कि आपके यहां अजीब-अजीब तरह के देवता हैं। एक कृष्ण और हजार लड़कियां उनको लव करती हैं। 'हाऊ इट इज पॉशिबल', ये कैसे संभव है? एक आदमी हजार लड़कियों से कैसे प्रेम कर सकता है और हमने सुना कि कृष्ण गाते थे और गोपियां उनके पीछे-पीछे चलती रहती थी। आपके हिन्दुओं में ऐसा कैसा सिस्टम है?, क्या यह पॉशिबल है?

तो विवेकानन्द ने कहा कि आपकी बात सही है, सामने लैडिज भी बैठी थी, सौ, दो सौ, तीन सौ, जेण्ट्स भी बैठे थे वो अपना भाषण हिन्दुत्व पर बोलने के लिये गये थे, वे कृष्ण के बारे में बोलते गये और बात करते गये और मैदान बहुत था या पीछे टेन्ट नहीं था खुला मैदान था, बोलते गये और पीछे सरकते गये। उन्होंने इतनी रसदार बातें कहीं कि लोग भी आगे खड़े-खड़े, क्योंकि अंग्रेज लोग बैठ तो सकते नहीं उनके घुटने मुड़ते नहीं, कुर्सियां थी नहीं, पालथी वो मार सकते नहीं और पैंट में बैठना बड़ा मुश्किल होता है। धोती तो इसलिये पहनाते है कि आप बैठ सकें। पैंट में बैठ सकते नहीं और वह भी ऐसी टाइट की बैठते ही फट जाये। बोलते गये और पीछे सरकते गये। वो लोग भी सुनने के लिये पीछे सरकते गये। करीब आधे घंटे बाद एकदम से विवेकानन्द ने कहा कि आप कहां खड़े हो। तो उन्होंने देखा कि जहां से प्रवचन शुरु हुआ था वहां से आधा किलोमीटर करीब आगे आ गये। उन्होंने कहा कि मेरे जैसा आदमी आपको आधा किलोमीटर खींच सकता है तो कृष्ण तो आपको पूरी जिन्दगी खींच सकता है। इसमें बड़ी बात क्या है।

बात आपके आंख में कितना सम्मोहन है और कितना वशीकरण का प्रभाव है, सम्मोहन करना अपने आप में कोई कठिन नहीं गलत नहीं है। प्रेम करना तो बिल्कुल गलत है ही नहीं, जो प्रेम नहीं करते वो अपने आपमें इस पृथ्वी पर बोझ है, बेकार है, उनको जिंदा रहने का हक है ही नहीं। अगर आपके मानस में ये है की बुजुर्ग हो गये आप।

एक शायर ने कहा कि **''कौन कहता है कि बुजुर्ग प्यार नहीं करते, प्यार करते है पर बदनाम नहीं होते''**

ये बुजुर्ग बदनाम नहीं होते और ये कैसे करेगा बेचारा, ऐसा कैसे करेगा। उसके लिए फायदा हैं, सफेद बाल वालों को बहुत फायदा है। वे प्रेम कर भी ले तो भी बदनाम होते ही नहीं। मगर हमसे तो ज्यादा प्रेम करने की कोशिश करते है। ये बात सही है, खेखरा करके हां-हां करे, सिर पर हाथ फेर के, पीठ पर हाथ फेर के बेटी-बेटी करके, जो भी तरीका उनके पास है वो अस्त्र-शस्त्र आजमाते रहते है और तो कैसे करें?, लड़की को हाथ कैसे लगायें?, अच्छा बेटी इधर आ, तुम बहुत अच्छी हो, समझदार हो, क्या पढ़ती है बेटी?, कौनसी क्लास में पढ़ती है? बदनामी नहीं होगी बुजुर्ग है। बुजुर्गों को मना नहीं किया है, उस शंकराचार्य ने। युवकों को भी मना नहीं किया है। युवक बेचारे बदनाम होते है कि देखो ये लड़का घर के आगे खड़ा रहता है, ये गड़बड़ है और यदि ऐसी क्रिया में थोड़ा बहुत खर्च हो जाता है मतलब थोड़ी बदनामी मिल भी जाती है। तो 5 लोग बदनामी करेंगे, पर 20 लोग शाबास बहुत मर्द बच्चा है कर दिया काम, छोटा नहीं है क्या मर्द आदमी है। कर दिया जो कर दिया, देखा जायेगा 20 आदमी ऐसे भी निकलेंगे और तो आप बीच में खड़े है कुछ नहीं हो पायेगा। करेंगे तो देखा जायेगा, हाथ जलेंगे तो जलेंगे या फिर पार निकल जायेंगे।

मगर कोई ऐसा तरीका, क्या प्रेम करना जरूरी है? मैंने उस पर एक पूरा ग्रंथ लिखा है किताब लिखी है **''फिर दूर कहीं पायल खनकी''**। मेरे जैसा आदमी लिखे, कई लोगों ने पूछा अब आपको पायल खनकी क्या जरूरत पड़ गई? अब जरूरत पड़ गयी है, अब तक मैं बहुत बिजी था, पायल खनकाने का टाईम ही अब आया है। अब लड़के संभाल लेंगे तो पायल खनकते रहेंगे। बोलते रहेंगे, प्यार पर बोलना कोई गुनाह नहीं है कोई तकलीफ नहीं, किताब वहां है।

क्योंकि जितने भी संत हुये हैं। चाहे मीरा हुई हो, कबीर हुए हों, चाहे सूर हुए हों, चाहे तुलसी हुए हों, सबने एक ही बात कही है कि प्रेम करना तो अत्यधिक जरूरी है, आवश्यक है। जितने संन्यासी हुये उन लोगों ने भी एक ही बात कही है यदि हृदय में प्रेम नहीं है। तो जीवन में कुछ भी नहीं है। प्रेम,

प्यार, लव और अटैचमेन्ट, वशीकरण, सम्मोहन आप उसको कोई भी नाम दीजिये। कोई गलत नहीं है, कोई गुनाह नहीं है। गुनाह तब है जब आप किसी को धोखा दे, गुनाह तब है जब आप किसी के साथ विश्वासघात करें, गुनाह तब है जब आपकी आंख नीची हो।

जब कृष्ण की आंख नीचे नहीं थी तो हजार गोपियां उसके चारों तरफ आगे-पीछे घूमती थी। उसको इस बात की चिंता नहीं थी कि मैं बदनाम हो जाऊंगा। आज तक बदनाम हुये नहीं कृष्ण। इसलिये की उनकी आंख में सफाई थी, उस किताब में लिखा है कि प्यार क्या है प्रेम क्या है, प्रेम कैसे किया जाता है और सम्मोहन की प्रक्रिया क्या है और आखिर जिसको अग्रेंजी में लव कहते हैं, या जिसको प्यार कहते हैं या जिसको प्रेम कहते हैं, जिसको प्रणय कहते हैं अखिर ये क्या चीज है। कैसे अपनी आंखों में उस चीज को प्राप्त किया जा सकता है और किस प्रकार से उसके माध्यम से जीवन में सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

हमने जिस शब्द को अत्यंत घटिया मान लिया, ये हमारे युग का दोष है। ये अंग्रेजी सभ्यता का दोष है। क्योंकि उन्होंनें प्यार को एक शारीरिक आकर्षण मान लिया, फिजीकल अटैचमैंट मान लिया। आपका मेरा प्यार हो सकता है। मेरे बिना आप नहीं रह सकते, मैं भी आपके बिना नहीं रह सकता, मैं आपको देख लूं तो मुझे खुशी मिलती है। आपको भी मुझे देखने में खुशी मिलती है क्या ये प्यार नहीं है?, ये भी प्यार है। इसलिये मैं पूजा करता हूं और भगवान शिव की आराधना करता हूं। एकदम से मेरे आंखों में आंसू आ जाते है। ऐसा लगता है जैसे मैं साक्षात् भगवान शिव को सामने देख रहा हूं और मैं देखता हूं तो गारण्टी के साथ भगवान शिव भी मुझे देखते हैं और हम दोनों का आपस में प्रेम है और हम दोनों आपस में हंसी मजाक कर सकते है, जिसमें एक दूसरे के साथ बात की जा सकती है। मगर आज का युग और उस द्वापर युग में डिफ्रेंस है, युग धर्म जरूरी है।

द्वापर युग में कृष्ण पैदा हुये और उन्होंने गोपियों को शिक्षा देने को जब वो तालाब किनारे गई और तालाब किनारे अपने सारे कपड़े खोलकर रख दियें। फिर तालाब में स्नान करने लगी। फिर कृष्ण भगवान सारे कपड़े लेकर के कदम्ब के पेड़ पर चढ़ गये और बैठ गये, ऊपर चढ़ करके और वो बेचारी बाहर निकल नहीं सकी। ये तो आपने महाभारत और श्रीमद्भागवत में पढ़ा ही होगा, ये तो एक सुनी सुनाई कथा हैं, प्रामाणिक कथा है। गोपिकाएं कह रही है वस्त्र दे दो, वो कह रहे मैं

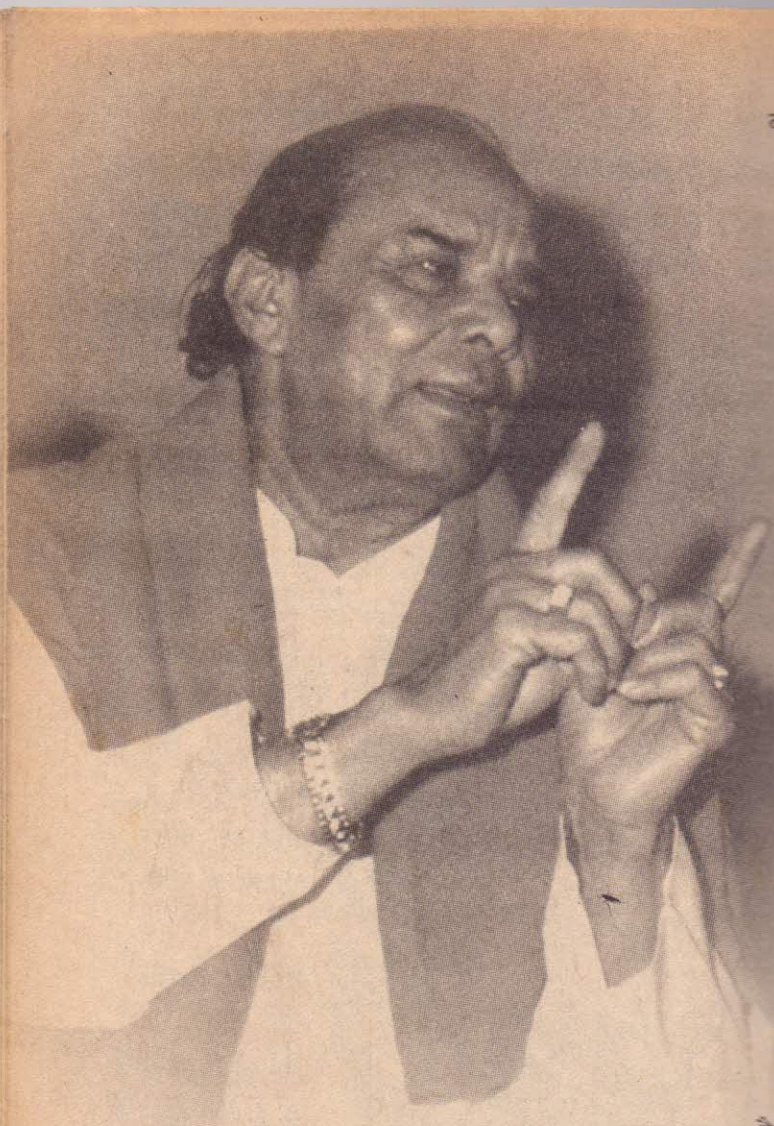

वस्त्र दूंगा नहीं, वो कह रहे हम बाहर निकल नहीं सकती। आप कपड़े दो, वो कहते मैं कपड़े दूंगा नहीं, आधा घण्टा लग गया। खैर उसने वस्त्र दिये और उसके बाद में गोपिकाएं निकली, वो तो कोई बात नहीं, वो तो द्वापर युग की बात है। आज के युग में तुममें से कोई कृष्ण बने और कोई स्नान करती हो और कपड़े लेकर पेड़ पर चढ़ जायें तो उसे पुलिस आकर के जेल में डाल देगी। कृष्ण भी आज ऐसा करले तो कृष्ण को भी जेल में डाल दें। उसको ये नहीं कहेगी चल भाई तू भगवान है, तू ऐसा कर सकता है। द्वापर युग में एक अलग सिस्टम था, कलयुग में एक अलग सिस्टम है। '**युग-धर्म**' अलग-अलग है। आज आप ऐसा नहीं कर सकते, जैसा कृष्ण ने किया। हमारे भगवान ने किया हम क्यों नहीं कर सकते। जब भगवान ने किया तो हम भी कर सकते है। भगवान को कोई गाली नहीं देता, हमें क्यों गाली दे रहे हो। पुलिस आपकी बात मानेंगी नहीं। '**युग-धर्म**' एक अलग है, इसलिए उन्होंने जिस प्रकार से प्यार किया, प्रणय किया, प्रेम किया, अटैचमेंट किया, उस तरीके से आप नहीं कर सकते और प्रेम के बिना जब जीवन व्यर्थ है। दूसरी तरफ से कह रहे हैं कि जब प्रेम नहीं है तो जीवन व्यर्थ है तो उसके लिए केवल एक मात्र शंकराचार्य ने कहा है कि उस स्थिति को, उस क्रिया को, उस मंत्र को, उस साधना को प्राप्त किया जाये, जिसके माध्यम से वह प्रणय प्राप्त हो, वह प्रेम प्राप्त हो और यदि आपने '**आनंद लहरी**' पढ़ी हो, '**सौन्दर्य लहरी**' पढ़ी हो दो ग्रंथ लिखे हैं। शंकराचार्य ने, '**आनन्द लहरी और सौन्दर्य लहरी**' शायद जितना प्यार का उच्चकोटि का प्यार का एकदम से वर्णन शंकराचार्य ने किया है। ऐसा आज तक किसी कवि ने भी नहीं किया होगा। बिल्कुल खुला, ओपन। एक संन्यासी इतना कामुक वर्णन भी कर सकता है। यह सुनकर ताज्जुब होता है और ताजुब हम लोगों को होता है। इसलिए हम लोगों को होता है कि हम प्यार शब्द या प्रेम शब्द कहते ही आंख में एक लड़की, एक लड़की बस, ये ही माईन्ड में आता है। उसने पार्वती का वर्णन किया है और पार्वती के प्रत्येक अंग, स्तनों का भी, हृदय का भी, नाभि का भी, जंघाओं का भी, पैर का भी, आंखों का भी, सब का वर्णन किया है और तीन-तीन, चार-चार श्लोकों में किया है और ऐसा वर्णन किया है कि एक बार से पढ़ने पर एकदम से सोचना पड़ता है कि आगे पढ़ूं कि नहीं पढ़ूं। तो क्या शंकराचार्य गंदा था, घटिया था। हम घटिया हैं इसलिए कि, हम प्रेम को समझे नहीं। प्रेम शब्द बोलते ही हमारे अंदर कई विकार पैदा हो जाते हैं, कई चिंतन पैदा हो जाते हैं। किसी लड़की से प्रेम करना भी कोई गुनाह नहीं और किसी पुरुष से प्रेम करना कोई गुनाह नहीं है और शादीशुदा भी प्रेम करें तो

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

कोई बुराई नहीं है। बिना शादी शुदा भी प्रेम करें तो बुराई नहीं है। नहीं करते हैं वे जीवन में न्यून है कि उनको ज्ञान नहीं है।

संन्यासी भी प्रेम कर सकते हैं और करते हैं। हमने आपको उदाहरण दिया, विवेकानंद ने भी उदाहरण देकर समझाया। कृष्ण ने भी किया, राम ने भी किया, महावीर ने किया, बुद्ध ने किया, ऐसा संसार में कोई देवी-देवता हुआ ही नहीं जिन्होंने प्रेम या प्रणय किया ही नहीं हो। हमारा चिंतन, हमारा ध्यान, हमारी धारणा गलत है।

अगर शंकराचार्य कहते हैं कि यदि प्रणय नहीं है जीवन में तो हमारा जीवन व्यर्थ है और वास्तव में जीवन व्यर्थ है। सूखे हुये पेड़ में यदि दूध डाल दे, पेड़ की जड़ में तो उसमें हरे पत्ते आते ही नहीं और हरे पत्ते नहीं आयेंगे तो उसकी छाया नहीं मिल सकती, उसके नीचे कोई विश्राम नहीं कर सकता, आपके नीचे भी कोई विश्राम नहीं कर सकता, क्योंकि ठूंठ की तरह जीवन बन गया है। उसमें सरसता नहीं है, उसमें आनंद नहीं है, उसमें उमंग नहीं, जोश नहीं है, एक जो चेहरे पर ओज होना चाहिए, माधुर्य होना चाहिये वो नहीं है।

किसी को याद करे और आंखों में एकदम से नूर आने लग जाता है। गुलाबी चेहरा हो जाता है। ऐसा क्यों होता है? यह स्थिति है, यह प्रणय की स्थिति है। यह प्यार की स्थिति है, प्रेम की स्थिति है। फिर भले ही आप अप्सराओं से प्रेम करें, फिर भले ही यक्षिणी से प्रेम करें चाहे आप अपनी पत्नी से प्रेम करें, चाहे आप प्रेमिका से करें, चाहे मुझ से करें, चाहे किसी संन्यासी से करें, चाहे राम से करें, चाहे कृष्ण से करें, चाहे शिव से करें। किसी भी जगह, किसी प्रकार से प्रेम किया जा सकता है, आप करें या नहीं करें। आपकी थाली में हलवा भी रखूं, गुलाब के फूल भी रखूं, आप गुलाब के फूल खाते हैं या हलवा खाते है। ये आपका सोचना है, कि किसको किस जगह यूज करना है? उस लड़की, जो अनजान लड़की उससे प्रेम करना क्या उचित है?, अनुचित है? मेरे लिए अनुकूल है या नहीं? आपको सोचना है। ये आपका विवेक है। कि पत्नी के रहते हुए भी दूसरी प्रेमिका से प्यार करके उसको घर में लाकर बिठा देना जरूरी है या लड़ाई-झगड़ा करना। ये आपका विवेक है। क्योंकि उस प्रेम में विवेक भी होना जरूरी है। कुछ लुका छुपी अगर होगी ही नहीं तो प्रेम हो ही नहीं सकता, ओपनली कह देने से - आई लव यू। अब बतावे इंग्लैंड वाला खेल तो है नहीं कि पकड़ा इधर आओं आर यु लव मी? यस आई लव यू और दोनों रवाना हो गये।

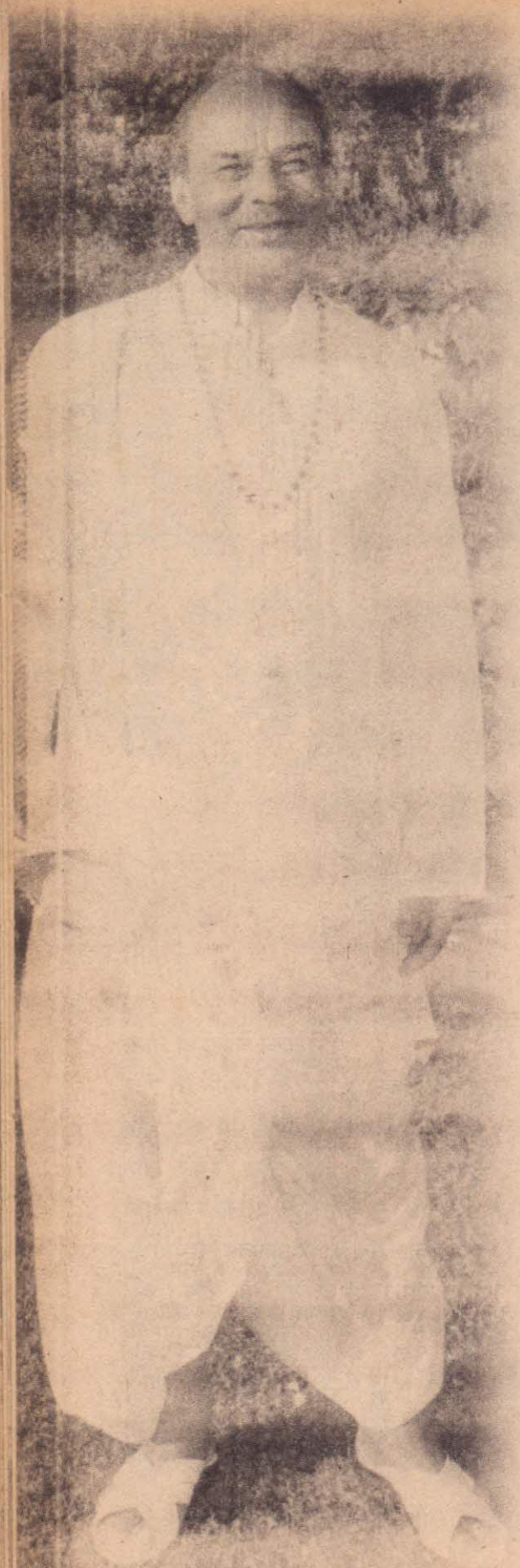

यहां बस! टाईम ही इतना लगता है। वो नदी किनारे बैठा है, वहां किनारे गये कोई लड़की को देखा, बस आपको सीधा पूछना है हाय!, हूं आर यु? वुड यु लाईक लव यस, आय लाईक टू, बस हो गया प्रेम 2 सैकेण्ड में हो गया। हमारे यहां तो बहुत पापड़ बेलने पड़ते है। बहुत लम्बा चौड़ा खेल है साल डेढ़ साल बाद मामला बैठे की नहीं बैठे, कभी शादी करके पूना चली जाती है। हम रोते ही रहते है। अब पूना कहां जायें, हैडक हो गई। ऐसा यहां नहीं चलेगा, इग्लैड के कानून यहां नहीं चल सकते।

यहां विवेक आपको अपनाना पड़ेगा। आपको विवेक है कि आप क्या करें, क्या नहीं करें, आपका धर्म क्या है, आपका चिंतन क्या है, आपका विचार क्या है। मगर प्रेम करना गुनाह नहीं है और अगर प्रेम करना गुनाह नहीं है तो फिर प्रेम कैसे किया जायें? अगर प्रेम ही करें, अप्सरा से आपका प्रेम है तो अप्सरा प्रत्यक्ष होगी ही होगी। फिर साधना में मंत्र से सफलता मिलेगी ही मिलेगी। भगवान शिव से प्रेम करते हो तो दर्शन होंगे ही होंगे। किसी से आप प्रेम करते हो तो वो मिलेगी ही मिलेगी या मिलेगा ही मिलेगा। और जब संन्यासी कहते है, पुरुष कहते है या प्रकृति कहते हैं वैसी कौनसी स्थिति है? वह कौन सा चिंतन है?, वह कौनसी विचारधारा है?, क्या कोई तरीका है इसका?

जिसके माध्यम से कृष्ण सैकड़ों, हजारों गोपियों को सन्तुष्ट कर सका, प्रेम कर सका और प्रत्येक गोपी एक ही बात समझती थी की कृष्ण मेरा है और किसी का है ही नहीं वे दूसरी तो केवल सैकेण्डरी है। नंबर वन मैं हूं। प्रत्येक गोपी ऐसा सोच रही थी और प्रत्येक को वो इम्प्रेशन यही दे रहा थे, मैं केवल तुम्हारा हूं। ऐसा कैसे?, एक पत्नी को हम संभाल नहीं सकते, वो हजार प्रेमिकाओं को संभाल रहा थे ये हमारे लिए तो आश्चर्य की बात है।

आश्चर्य की बात कुछ नहीं हैं। सांदीपन स्तोत्र है, सांदीपन संहिता है 40 पेज की किताब। उनके गुरु सांदीपन थे। उन्होंने सम्मोहन या वशीकरण या प्रेम के बारे में छः श्लोक लिखें है और उन छः श्लोकों में यह बताया है, कि वो कौनसी विधि है?, वो कौन सा मंत्र है?, जिसके माध्यम से हम खड़े हो और सामने वाला देखते ही आकर्षित हो जायें, हमें कुछ नहीं करना पड़े, हम आगे चलकर के कोई, प्रपोजल नहीं रखे। देखें और आकर्षित हो जाये। हमारे आंखों में, हमारे शरीर में, पर्सनलिटी में कुछ हो और यदि आपका ये माईन्ड है, पर्सनलिटी बहुत मोटी ताजी, एकदम 40 साल का जवान हो, 28 साल का जवान हो, तभी प्रेम हो सकता

है। तो पर्सनलिटी अपने आपमें कोई वैल्यू रखती ही नहीं, बहुत दुबला पतला भी बहुत सफलता से प्यार कर सकता है और बहुत मोटा ताजा भैंसा भी अपने आप में प्यार नहीं कर सकता, प्रेम के लिए शरीर अपने आपमें आकर्षक नहीं है, शरीर सैकेण्डरी हो गया है। मुख्य तो यह है कि आप अगर मुझे देखेंगे। अगर मैं बाहर से आता हूं तब सबसे पहले आपकी नजर मेरे आंखों पर पड़ेगी। बाद में आप मेरा कुर्ता देखेंगे, सफेद कुर्ता है, सफेद पाजयामा है, धोती है, क्या पहना हुआ है, अंगूठी है, ये सब बाद में क्रिया होगी। सबसे पहले आपका इफेक्ट मेरी आंखों पर होगा। आप पहले मेरी आंखों को देखेंगे, कोई चित्र भी देखेंगे, आप फोटो भी देखेंगे तो सबसे पहले उसकी आंख देखेंगे। पहली नजर आंख पर ही पड़ेगी, फिर देखेंगे क्या ड्रेस पहनी हुई है फोटो में, अच्छा है, क्या है, कैसी है।

इसका मतलब हुआ की पूरे शरीर में आंख एक ऐसी चीज है जो अपने आपमें फस्ट हिन्ट देने वाली है, पहला प्रभाव देने वाली है और यदि आपकी आंख में कोई ऐसी चीज हो कि आपको देखा और फिर उसके बाद में कोई सैकेण्ड अल्टरनेट रहे ही नहीं, विकल्प नहीं रहे। क्योंकि फर्स्ट दृष्टि उसकी आंखों पर पड़ेगी। आंख पर पड़ते ही वह अपने आपमें सम्मोहित हो, वशीकरण युक्त हो। फिर उसके बाद में जब आपके फिजिक्स पर उसकी नजर ही नहीं पड़ेगी, वहीं सम्मोहित होगी तो फिर आपकी हड्डियां निकली हुई है या कम है, आपका टेढ़ा शरीर है या ऊंचा शरीर है, या मूंछ है या नहीं है, या आप लम्बे हैं या चौड़े हैं, वो सब तो सैकेण्डरी चीज होगी। वह अपने आपमें कोई वस्तु नहीं रही इसलिए प्रेम का बेस जो है, आधार जो है आंख है। चाहे आप भी किसी को देखेंगे तो आंख में नजर पड़ेगी, आप मुझे देखेंगे या किसी को देखेंगे तो पहली साईट, पहली दृष्टि आपकी आंख पर ही पड़ेगी।

तो सांदीपन ने श्लोंको में बताया है कि किस क्रिया के माध्यम से उसकी आंखों में वह आकर्षण, वह सम्मोहन, वह वशीकरण, वह क्रिया दी जा सकती है।

आप सबके जीवन में वही दिव्य दृष्टि का संचार हो जिससे आपके नेत्रों में तेजस्विता, तीव्रता आ सके, आप आकर्षण युक्त होकर जीवन में सम्मोहन सिद्धि प्राप्त कर सकें। यही आशीर्वाद प्रदान करते हुए आपके मंगलमय जीवन की कामना करता हूं।

- सद्गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द परमहंस।

वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इससे प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

ज्वालामालिनी यंत्र

ज्वालामालिनी शक्ति की उग्ररूपा देवी हैं, परन्तु अपने साधक के लिए अभयकारिणी हैं। इनकी साधना मुख्य रूप से उन साधकों द्वारा की जाती है, जिससे वे शक्ति सम्पन्न होकर पूर्ण पौरुष को प्राप्त कर सकें। ज्वालामालिनी की पूजा साधना गृहस्थों के मध्य भूत-प्रेत बाधा, तंत्र बाधा आदि के लिए, शत्रुओं द्वारा किए गए मूठ आदि प्राणघातक प्रयोगों को समाप्त करने के लिए की जाती है।

साधना विधानः इस साधना को आप मंगलवार या अमावस्या की रात्रि को प्रारम्भ करें। यह **तीन रात्रि की साधना** है। सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न करें, उसके पश्चात यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प से करें और धूप दिखाएं। फिर किसी भी माला से निम्न मंत्र का 7 माला मंत्र जप करें।

मंत्र *// ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि सर्वभूत संहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट्//*

साधना के तीसरे दिन यंत्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें और जब भी अनुकूलता चाहे ज्वालामालिनी मंत्र की 3 माला मंत्र जप अवश्य कर लें।

पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता ग्रहण करने पर उपरोक्त यंत्र आप प्राप्त कर सकते है। अपनी मनोनुकूल इस यंत्र का नाम पोस्टकार्ड संख्या 4 पर लिख दें। वी.पी.पी. द्वारा सामग्री आपको सुरक्षित भेज दी जाएगी तथा वी.पी. छूटने पर वर्ष पर्यन्त पत्रिका नियमित रूप से भेजी जाएगी।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर भी प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं.**4** स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at :

वार्षिक सदस्यता शुल्क - **195/-** डाक खर्च अतिरिक्त - **45/-** Annual Subscription **195/- + 45/- postage**

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर **342001**, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) 0291-2432209, 2433623 **टेलीफैक्स** (Telefax) . 0291-2432010

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति

इसे प्राप्त करना तो आपका अधिकार है

क्योंकि शक्ति का तात्पर्य है 'मां भगवती' की आराधना

मां ही अपने कुपुत्र-सुपुत्र सबको समान प्यार करती है,

मां ही सबको आशीर्वाद की वर्षा प्रदान करती है

उस महाशक्ति के परमतत्व को समझे जो विदित है और जगति जय जननी है

भारतीय जीवन पद्धति में नवरात्रि पर्वों का जो महत्त्व है उसके पश्चात् नवरात्रि पर्वों के विषय में किसी परिचय की आवश्यकता नहीं रह जाती है, किन्तु क्या नवरात्रि पर्वों का उद्देश्य मात्र शक्ति तत्त्व की महत्ता से परिचित कराना ही होता है अथवा नवरात्रि पर्व वर्ष के दो महत्वपूर्ण संक्रमण कालों पर घटित होने वाले लोक उत्सव ही मात्र ही होते है? ये दोनों ही तथ्य अपने स्थान पर सही है, किन्तु नवरात्रि का पर्व तो इससे कही अधिक व्यापक भावभूमि को अपने में समाहित किए हुए **एक सम्पूर्ण वर्ष में (एक सम्वत् में)केवल एक बार ही नहीं वरन चार बार, दो बार चैत्र एवं आश्विन प्रकट नवरात्रियों के माध्यम से तथा दो बार गुप्त नवरात्रियों के माध्यम से आषाढ़ माह एवं माघ माह में घटित होती है।**

इन नवरात्रियों का वर्ष में चार बार उपस्थित होना ही अपने आप में अपना रहस्य एवं उसकी व्याख्या समेटे हुए है। सामान्य साधक के लिए जहां इनका अर्थ केवल नवार्ण मंत्र का जप करने अथवा कुछ शक्ति साधनाएं सम्पन्न करने तक ही विस्तारित होता है, वहीं सन्यासियों के मध्य इसके अर्थ वैशिष्ट्य लिए होते हैं। शक्तिमय होना यद्यपि जीवन की एक श्रेष्ठ अवधारण है, किन्तु जीवन के विशेषकर आध्यात्मिक जीवन के संदर्भ में मात्र शक्तिमय होना ही साधना की इतिश्री नहीं है। शक्तिमय होने के बाद ही तो अध्यात्म अथवा साधना के जगत में प्रवेश का द्वार खुलता है और संन्यासी साधक इसी प्रकार शक्तिमय होने के उपरान्त साधना की उन भावभूमियों की ओर उन्मुख हो जाते हैं, जिन्हें जीवन मुक्ति की परिपूर्णता की भावभूमि, इत्यादि संज्ञाओं से विभूषित किया गया है और जो 'स्व' से परोन्मुखी होती है, लघु से विराट बनने की संक्रिया होती है।

शक्तिमय होने का अर्थ, शासन करने की मनोवृत्ति से युक्त हो जाना नहीं वरन जगत के प्रति अनुचर बन जाना होता है। शक्तिमयता की पराकाष्ठा दम्भ में नहीं वरन महाकरुणा में होती है और इसी कारणवश जहां देवी का स्वरूप एक ओर विविध आयुधों से युक्त माना गया है, वहीं उन्हें *'कारूण्यवरांनिधिम्'* की संज्ञा से अनायास ही नहीं विभूषित किया गया है। शक्तिमय व्यक्तित्व में ही करुणा का विस्फोट होना सम्भव होता है अन्यथा शेष सभी तो दुर्बलता के कारण केवल अपने ही जीवन की विसंगतियों में सिमट गए मनुष्य ही होते है। करुणा ही अध्यात्म का आधार और वही अध्यात्म का चरम विकास भी होती है, किन्तु क्या यह सम्भव

है, कि एक शक्तिमयता के अभाव से परिपीड़ित व्यक्ति में करूणा का उद्भव सम्भव हो सके?

कभी स्वामी विवेकानन्द ने अध्यात्म के पथ पर बढ़ने के इच्छुक व्यक्तियों से तीन प्रश्न पूछे थे। उनका प्रथम प्रश्न था, कि क्या उन्हें (अर्थात् ऐसे इच्छुक व्यक्तियों को)यह बात उद्वेलित करती है, कि आर्यों की इस भूमि पर जो विविध दर्शनों की जननी रही है, आज बहुसंख्यक व्यक्ति दीन-हीन पतित स्थितियों में पशुओं से भी गया गुजरा जीवन व्यतीत करने को बाध्य है?

इसके पश्चात् उनका दूसरा प्रश्न था, कि क्या कभी यह बात उन गतिशील व्यक्तियों को अन्दर तक मथ गई है या ऐसे अनेक पीड़ितजनों की व्यथा समझ कर उनका हृदय विदीर्ण होने की स्थिति में पहुंच गया है अथवा इस विषय पर सोचते-सोचते उनकी रातों की नींद भी उनकी पलकों से ओझल हो गई है?

स्वामी विवेकानंद का तदुपरान्त अन्तिम और निर्णायक प्रश्न था, क्या वे ऐसे पीड़ितजनों के उत्थान हेतु अपना तन-मन-धन सर्वस्व न्यौछावार करने की स्थिति में आ गए है और उन्हें इस बात की भी चिन्ता नहीं रह गई है, कि क्या इस प्रयास में उनका जीवन शेष रहे अथवा समाप्त हो जाएगा? स्वामी विवेकानन्द केवल इस स्थिति में आरूढ़ व्यक्ति को ही अध्यात्म में प्रवेश का अधिकार देते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों को अध्यात्म के विषय में चर्चा करने का अधिकार है क्योंकि इतने आग्रह के बाद ही अध्यात्म की भावभूमि प्रारम्भ होती है।

शक्ति की सर्वव्यापकता

'शक्ति ही सब कुछ है। शक्ति के बिना हम न सोच सकते हैं, न बोल सकते हैं, न हिल-डुल सकते हैं, न देख सकते हैं, न सुन सकते हैं, न स्पर्श कर सकते हैं, न स्वाद ले सकते हैं, न जान सकते हैं और न समझ ही सकते हैं। हम शक्ति के बिना न तो खड़े हो सकते हैं और न चल फिर सकते हैं। फल, अन्न, शाक, भाजी, चावल, दाल, चीनी आदि सब शक्ति से ही उत्पन्न होते हैं। इन्द्रिय और प्राण भी शक्ति के ही परिणाम हैं। विद्युत-शक्ति आकर्षण शक्ति तथा चिन्तन शक्ति आदि सभी शक्ति के व्यक्त रूप हैं।'

जाड़े में गरीबों को कम्बल बंटवा देना या बाढ़ आने पर भोजन के पैकेट बंटवा देना सामाजिक दुष्टि से श्रेष्ठ कार्य तो हो सकते है, किन्तु वे अध्यात्म के अंग नहीं हो सकते। धर्मशाला बनवाना, प्याऊ लगवाना या किसी अस्पताल में अपनी दान की रकम घोषित करती संगमरमर की शिला लगवाना भी करूणा जनित अध्यात्म के अंश नहीं हो सकते। पुनः स्वामी विवेकानंद का ही स्मरण करें तो ऐसी स्थिति ही क्यों आए, कि हमें कसी भूखे को भोजन देकर या अनाथ व्यक्ति के लिए अनाथलय बनवा कर अपनी सदाशयता को प्रकट करना पड़े। क्यों न हम ऐसे समाज के निर्माण में संलग्न हों जिसमें न कोई भूखा नंगा हो या आप को जीवन भर अनाथ मानने की भावना से संतप्त रहे। अध्यात्म की पराकाष्ठा विश्वजनित करूणा में होती है और यही शक्तिमयता की भी पराकाष्ठा है।

'विदिता हो देवी विदिता हो' - कितना आग्रह और कितनी निश्छल कुहुक भरी है मैथिल कोकिल कहे जाने वाले कवि विद्यापति के इस स्वर में! लगभग पांच सौ वर्ष बाद ठीक यही स्वर सुनाई पड़ता है स्वामी विवेकानन्द की रचना के उस स्वर में जहां वे **'मां'** से अनुरोध करते है, कि वह एक बार नृत्य करें, ऐसा नृत्य करें, कि इस जगत के वैषम्य उसकी पद संचालन की क्रिया से भस्मीभूत हो जाए। विश्वजनित करूणा की भावना से युक्त व्यक्तित्व इस वैषम्य के मध्य किसी आनन्द की धारण ही नहीं कर सकता, वह स्वान्तसुखाय की भावना से लिप्त हो ही नहीं सकता - यही शक्तिमय साधक का यथार्थ स्वरूप है। वह शक्ति का विस्फोट अपने जीवन के क्षुद्र द्वन्द्वों को मिटाने के लिए वरन समस्त जगत के नैराश्य भावना को समाप्त करने के लिए आग्रहित होता है। इन्हीं भावनाओं की पुष्पाञ्जलि बनाकर ही वह जगतजननी के चरणों में अपना अर्घ्य चढ़ता है, जो शक्तिमय होगा वही **'मां'** के ममत्व में अपादमस्तक निमग्न होगा। फिर ऐसा निमग्न साधक ही आह्लदित भी हो सकेगा। आह्लाद से ही ऐसी करुणा का प्रस्फुटन होता है जो कोई वाग्जाल नहीं होती। 'मां' के ममत्व में लीन होना किसी साधना की अपेक्षा शिशुत्व से ही सम्भव हो पाता है और शिशुत्व आता है निर्मलत्व से।

श्री सद्गुरुदेव इसी निर्मलत्व की प्राप्ति अपने साधक-शिष्य को सम्भव करवा कर उसे करुणा के महापथ पर अग्रसरित करने की क्रिया ही तो विविध उपायो से करते है। उनकी प्रत्येक दीक्षा, प्रत्येक शक्तिपात, प्रत्येक साधना का यही तो मर्म है। हम अपने क्षुद्रचिन्तनों से उनका स्वरूप किसी भौतिक समस्याओं को दूर करने वाले व्यक्तित्व के रुप

में भले ही समझ लें, किन्तु उनकी क्रियाएं तो विश्व के रंगमंच पर किसी और प्रस्तुति की चेष्टाएं होती है। 'मां' को तो केवल निर्मल शिशु ही प्राप्त कर सकता है, किन्तु श्री सद्गुरुदेव भौतिकता के पथ में लिपटे किसी भी साधक शिष्य के लिए सहज उपलब्ध होते है। क्या उनकी यह क्रिया 'मां' से भी अधिक उदात्त और ममत्व में आपूरित नहीं है?

यही कारण है, कि श्री सद्गुरुदेव मात्र एक पुरुष न होकर शक्ति के कारण-भूत रूप से अनुधार्य है -

श्री गुरु सर्वकारण भूताशक्तिः।
तेन नवरन्ध्ररूपोदेहः

(भावोपनिषद्)

भौतिक रूप से केवल एक देह में आबद्ध प्रतीत होते श्री सद्गुरुदेव का मूल स्वरूप तो आकाश सदृश्य विस्तृत होता है - (व्योमवत्व्याप्तदेहाय) और वे उन्मनाकाशनंदनाथ, समनाकाशनंदनाथ, व्यापकाकाशनंदनाथ आदि नव नाथों के रूप में शिष्य की चेतना के आकाश में विस्तारित होकर उसे शक्तिमय बनाने की प्रक्रिया में, प्रथम दीक्षा के उपरान्त से ही संलग्न हो जाते है। इन **'अनहदाकाशानंदनाथ'** की **'ध्वनि'** अपने वित्त पर कौन कितनी अनुभव कर लेता है, यह तो उसका व्यक्तिगत विषय है। इस रूप में **'गुरु'** का **'प्रत्यक्ष'** हो जाने के उपरान्त ही व्यक्ति साधना के दायित्व से मुक्त होता है, इससे पूर्व नहीं।

... भगवतपाद आद्य शंकराचार्य ने जिस अवस्था में आकर 'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति' के वाक्य का स्फुरण किया था, उस अवस्था तक वे समस्त शास्त्रों का अध्ययन, विवेचन, सृजन करने के साथ-साथ आवागमन के साधक सुलभ न होने पर भी सम्पूर्ण भारत की अविजित यात्रा, सनातम धर्म की पुनस्थापना इत्यादि कार्य सम्पन्न कर चुके थे। जगतजननी की करुणा के साक्षीभूत हो चुके उन व्यक्तित्व को कदाचित यह पीड़ा शेष रह गई थी, कि वे तो 'मां' की करुणा के एक अंश का भी विस्तार न कर सके; अतः जब वे उपरोक्त वाक्य कहते हैं, तो उसमें उनका विगलित हृदय ही क्षमा याचना बन कर भगवती के चरणों में दिए जाने वाली गंगा जल की धारा के अर्घ्य के समान निर्मल व पवित्र प्रतीत होता है, किन्तु जब कोई सामान्य साधक प्रारम्भ से ही उपरोक्त वाक्य को उच्चरित कर गद्गद् हो जाता है, कि 'मैनें तो सब निवेदित कर दिया, अब मां संभाल ही लेंगी!' तो ऐसा लगता है, कि किसी देवमूर्ति के समक्ष सड़े-गले पुष्प चढ़ा दिए गए हो! ऐसा गाल बजाना धूर्तता की पराकाष्ठा हो सकती है, साधकत्व की लक्षण नहीं।

साधक अपने प्रयासों से निर्मल हो ही नहीं सकता। केवल श्रेष्ठ विचारों, संकल्पों और कार्यों से ही निर्मलत्व नहीं आ सकता, जो कि **'मां'** का अभीष्ट होता है। यथार्थ निर्मलत्व तो जीवन के उन छत्तीस संवेगों से मुक्त होने पर आ सकता है।

बहुधा ऐसा होता है, कि समस्त ज्ञान-विज्ञान निरर्थक लगने लग जाता है, बुद्धि स्वतः ही विश्राम करने लग जाती है, जगत को यद्यपि मिथ्या नहीं मानें, फिर भी उससे सम्बन्ध विच्छेद सा हुआ लगने लगता है और चित्त के कपाट एकाएक

खुल जाते हैं। योगियों की भाषा में कहें, तो चर्म चक्षु तो बंद हो ही जाते हैं, कदाचित ज्ञान चक्षु और दिव्य चक्षु भी निस्तेज हो जाते हैं तथा आत्म चक्षुओं के जाग्रत होने का अवसर आ जाता है।

यही वह अवसर होता है, जब जगज्जननी का साक्षात् या आभास होता है। तब मन अपार करुणा में भीग जाता है; द्वन्द्व, पीड़ा, चातुर्य और कभी-कभी तो स्वयं का बोध भी विलीन हो जाता है। हम अपने जीवन में जिस वस्तु को भी लेकर गर्वित हो रहे होते हैं - चाहे वह यौवन हो, रूप हो, धन हो बुद्धिमता हो, एक छोटे से खिलौने से अधिक नहीं लगती है... जब स्वयं 'मां' सामने आती हैं, तो किसी भी खिलौने का क्या मूल्य रह जाता है? भले ही वह कितना ही बेशकीमती क्यों न हो।

इसी कारणवश उनका वर्णन सम्भव ही नहीं, क्योंकि जब चित्त सभी प्रकार से शून्य हो जाता है, तभी उनका बोध होता है और ज्यों ही हम उनका वर्णन करने का प्रयास करते हैं, त्यों ही ज्ञान के अधीन होकर चित्त ही सहजता खो देते हैं। ज्ञान के द्वारा हम दस महाविद्याओं में से किसी का वर्णन तो कर सकते हैं, साधना की अत्यन्त श्रेष्ठ पद्धति तो खोज सकते हैं, किन्तु जगज्जननी के साक्षात् का वर्णन नहीं कर सकते।

जो भगवती है, वे अपने प्रिये को कभी भी कुछ देने नहीं आती, अपितु हर बार आकर उसका कुछ ले ही जाती हैं और शनैः-शनैः यह स्थिति आ जाती है, कि जीवन में कुछ नहीं बचता। तब टुकुर-टुकुर देखने के अतिरिक्त हमारे हाथ कुछ नहीं रह जाता। हम इस प्रकार से हो जाते हैं, कि न अपने ज्ञान का, न साधना का, न यौवन का या किसी भी प्रकार का गर्व कर सकें। एक प्रकार से बलात् उन पर आश्रित होने की बाध्यता हो जाती है और तब वे स्वतः ही पोषण का दायित्व संभाल लेती हैं। ठीक भी है, बिना शिशु हुए मातृत्व का आगमन हो भी कैसे? और हम तो दम्भ में इतना रच-पच गए हैं, कि सहज शिशु बनने को भी तैयार नहीं होते। किन्तु जो भगवती जगज्जननी हैं, उनके पास अपनी सभी संतानों के लिए अलग-अलग उपाय है।

यह एक मिथ्या बात है, कि साधक को अपना अहं छोड़ देना चाहिए। आज तक अपना अहं स्वयं कौन छोड़ सका है? यह तो **'मां'** ही है, जो सब कुछ छीन लेती है तब ज्ञात होता है, कि व्यर्थ में कितना अधिक बोझ ढो रहे थे, व्यर्थ में कितने अधिक मैं - मेरे के द्वन्द्व में पड़े थे और यह बोझ हटते ही जब चित्त स्वतंत्र होता है, तो स्वतः ही आंखों से अश्रु प्रवाह होने लग जाता है। पीड़ा होने लग जाती है, कि मैं तो सदा से आश्रित ही था, सदा से बलहीन ही था, फिर जीवन के इतने दिन मिथ्या क्यों गंवा दिए?

किन्तु जगज्जननी भगवती तो 'मां' हैं, उनकी दृष्टि में कोई भेद कहां? जो दिन भर उनके पास बैठा रहा, वह भी उनका अपना और जो दिन भर इधर-उधर की खाक छान कर लौटा, वह भी उनका अपना। हम सभी इधर-उधर की खाक छान कर लौटने वाले उन्हीं के पुत्र तो हैं।

> शक्ति मय होने का अर्थ शासन करने की मनोवृति से युक्त हो जाना नहीं वरन जगत के प्रति अनुचर बन जाना होता है। शक्तिमयता की पराकाष्ठा दम्भ में नहीं वरन महाकरुणा में होती है और इसी कारणवश जहां देवी का स्वरूप एक और विविध आयुधों से युक्त माना गया है वहीं उन्हें 'कारुण्यवारांनिधिम्' की संज्ञा से अनायास ही नहीं विभूषित किया गया है।

प्रत्येक साधक की अभिलाषा होती है, कि वह महाविद्या साधना करे, शक्ति साधना करे, क्योंकि साधना का मूल स्वरूप ही शक्तिमयता होता है, जिसकी पूर्णता इस प्रकार से सम्भव होती है, किन्तु क्या इसके रहस्य को समझने की कभी चेष्टा की गई? शक्ति साधना का सीधा सा रहस्य है, अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को कटिबद्ध हो जाना। 'सर्वस्व' का अर्थ धन-सम्पत्ति आदि नहीं, अपितु अन्तर्मन का सर्वस्व है। शक्ति साधना अर्जित करने की बात नहीं, अपितु निवेदित कर देने की बात है। शक्ति के चरणों में अपने को खाली करते ही अपार शक्ति का प्रादुर्भाव हो जाता हैं। हम जब शक्ति के स्वामी बनना चाहते है, तो कुछ-एक सिद्धियां ही हाथ लगती हैं, जबकि समर्पण कर देने पर विश्व की समस्त शक्तियां हमारी हो जाती हैं।

सम्भवतः साधक से अधिक स्थिर चित्त और कोई भी व्यक्ति इस संसार में नहीं होता होगा, क्योंकि जो भोगी हैं, वे जगत के विषयों में लीन हैं, जो योगी हैं, वे ईश्वर में लीन हैं,

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

किन्तु साधक न तो भोगी है और न ही योगी, अतः उसका चित्त घड़ी के पेण्डुलम की ही भांति योग और भोग दोनों के मध्य यात्रा करता रहता है। एक क्षण को उसे भोग सार्थक लगते हैं, तो दूसरे ही क्षण वह उनसे विरक्त होकर योग की ओर भागता है। ठीक इसी मनः स्थिति में आने पर शक्ति साधना या जगदम्बा साधना की आवश्यकता एवं महत्ता समझ में आती है। ऐसी स्थिति में भगवती जगज्जननी स्वतः अपने साधक के कल्याण करने का उपाय करती हैं। इसी कारणवश उनकी साधना के विषय में कहा गया है - ***'भोगस्थ मोक्षस्थ करस्थ एव'।*** वे ही अपनी क्रियाओं के द्वारा जीवन के दोनों आयामों का स्पर्श करवा कर साधक को वस्तुस्थिति का बोध कराती हैं। इसकी कोई व्याख्या नहीं की जा सकती, क्योंकि जैसा कि इस लेख के प्रारम्भ में ही कहा है, कि यह तो मां ही जानती है, कि उसकी कौन सी संतान किस प्रकार से संतुष्ट होगी।

अधिकांश साधक जगदम्बा के उस स्वरूप का दर्शन करने की इच्छा मन में संजोए रहते हैं, जब वे अष्टभुजी या चतुर्भुजी स्वरूप में 'प्रकट' होगी। मैं उनकी इस मनोभावना पर चोट करना नहीं चाहता, किन्तु यह अवश्य कहना चाहता हूं, कि इस प्रकार से वे ऐसे अनेक दुर्लभ अवसर खो देते हैं, जब 'जगदम्बा' विविध रूपों में न केवल साधक के समक्ष उपस्थित होती हैं, अपितु हित रक्षा का भी ध्यान रखती हैं। इसी कारणवश श्रेष्ठ साधक प्रत्येक नारी मूर्ति को ही जगदम्बा-भगवती का विग्रह मानते है और श्रेष्ठतम साधक सम्पूर्ण चराचर जगत का ही उनका स्वरूप मानते हैं, क्योंकि जगज्जननी का स्वभाव है अपने पुत्रों का पालन करना, अतः जिस रूप में हमारा पालन हो रहा है, वह एक प्रकार से उन मां भगवती का ही 'दर्शन' है।

'मां' को अपने पुत्र के समक्ष आने के लिए कोई आडम्बर नहीं रचना पड़ता, उन्हें आने के लिए कोई विशेष मुहूर्त भी नहीं देखना पड़ता और न ही अपनी कृपा प्रदान करने के लिए कोई आडम्बर रचना पड़ता है। बस हम जितना सहज होते जाते हैं, वे उतनी ही स्पष्ट होती जाती हैं। अनेक श्रेष्ठ साधकों ने इस बात को भली-भांति अनुभव किया है, कि जीवन की अनेक विकट घड़ियों में, जब कहीं से आशा की कोई किरण नहीं दिखाई पड़ती, तभी सहसा 'चमत्कार' सा होता है ओर हम उन विकट परिस्थितियों से निकल आते हैं। यदि कोई हमारा पल-पल ध्यान नहीं रख रहा है, तो ऐसा सम्भव कैसे होता है?

भगवती जगज्जननी की इस प्रकार प्रति क्षण सूक्ष्म या स्थूल उपस्थिति मानना ही यथार्थ में 'आस्था' है और इस प्रकार मानते हुए सदैव प्रमुदित रहना ही 'साधना' या 'उपासना' है, क्योंकि 'मां' को अपने शिशु से मुस्कान की अपेक्षा होती है, किसी आरती या धन्यवाद की नहीं।

चार नवरात्रियों के दिन भी छत्तीस होते है और स्पर्श, संख्या, परिणाम, संयोग, विभाग, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, धर्म, अधर्म, शम, आलोक, तितिक्षा, रूप, गंध, रस, बल भय, प्रयत्न, स्नेह, काठिन्य, लज्जा, कृपा, दम, मृदुत्व, द्रवत्व, गुरुत्व, गाम्भीर्य, सौन्दर्य, प्रेम, इच्छा, लिप्सा, द्वेष, क्रोध एवं संस्कार - छत्तीस ही संवेग भी होते है। श्री सद्गुरुदेव नवरात्रि पर्वों का आधार लेकर सूक्ष्म एवं मूक रूप में अपने शिष्यों के इन्हीं संवेगों को समाप्त करने की क्रिया में तत्पर होते हैं, क्योंकि यही संवेग जीवन में वृथा मोह, तनाव एवं द्वंद्व के कारण भी जो होते है।

- भगवती जगदम्बा इसी प्रकार हमारे जीवन में 'विदित होकर' समाहित हो सकें, हमारा स्वरूप समस्त संवेगों से रहित होकर गंगा की भांति निर्मल हो सके, श्री सद्गुरुदेव के चरणों में हमारी इस नवरात्रि में यही विनम्र याचना है।

फार्म नम्बर 4 नियम - 8 देखिए

1. प्रकाशन	-	दिल्ली
2. प्रकाशन अवधि	-	मासिक
3. मुद्रक	-	सुदर्शन प्रिन्टर्स, 487 पीरागढ़ी, रोहतक रोड, दिल्ली 41
4. सम्पादक का नाम	-	श्री नन्दकिशोर श्रीमाली
5. क्या भारत के नागरिक है?		हां
6. पूरा पताः		डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोनः 0291-2434209 306 कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34 फोनः 011-27182248

7. उन व्यक्तियों के नाम और पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों-
श्री नन्दकिशोर श्रीमाली, श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली, श्री अरविन्द श्रीमाली।
मैं कैलाश चन्द्र श्रीमाली एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिए गए विवरण सत्य हैं।
28.02.2005

कैलाश चन्द्र श्रीमाली
प्रकाशक

आप तांत्रोक्त शक्ति साधनाओं से इतना घबराते क्यों हैं?

शक्ति साधना तो आपका अधिकार है

तीव्र शक्ति साधना सम्पन्न करने से पहले सम्पन्न कीजिये

जया दुर्गा साधना

जो महाविद्या साधनाओं एवं तांत्रोक्त साधनाओं का प्रवेश द्वार है।

जिसको सम्पन्न करने से अन्य साधनाओं का द्वार अपने आप खुलने लगता है।

पूर्व जन्म की संचित साधना एवं संस्कारों के फलस्वरूप, साधक ऐसी साधना में प्रवृत्त अवश्य होता है, किन्तु यहां एक बात ध्यान में रखने योग्य है, कि भले ही साधक के कितने ही पूर्वजन्मों के संस्कार क्यों न हो, उसे भी वर्तमान जन्म में अपने को जाग्रत करने की क्रियाएं करनी ही पड़ती हैं, क्योंकि जहां एक ओर इस चित्त पर पूर्वजन्मों के शुभ संस्कार अंकित होते हैं, वहीं एक जन्म से अगले जन्म तक की यात्रा में अनेक अशुभ संस्कार भी अंकित हो ही जाते हैं।

शक्ति की अधिष्ठात्री देवी यदि आसीन होती हैं, तो केवल सिंह के स्कन्धों पर ही! साधक यदि उन्हें समाहित करना चाहता है, तो आवश्यक है, कि उसके पास ऐसी साधना का बल हो, जो सिंहत्व प्रदान कर सके! जीवन के शोक, दोष मिटाकर, इसी सिंहत्व प्राप्ति का रहस्य है जया दुर्गा साधना...

जब पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे विशिष्ट रुप से महाविद्या साधना में दीक्षित किया, तब साथ ही साथ यह भी आज्ञा दी, कि इस साधना को नित्य रात्रि घर से दूर किसी पवित्र एकान्त स्थली पर ही सम्पन्न करना। ऐसा उन्होंने इस कारणवश कहा था, जिससे स्थल की पवित्रता और शांति के साथ ही साथ विभिन्न सामाजिक विघ्न-बाधाओं से भी मुक्ति मिली रह सके। मैंने उनके निर्देशानुसार अपने घर से दूर, नगर से लगभग बाहर एक ऐसा स्थान ढूंढ भी लिया, जो लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना एक देवी का मन्दिर था तथा वहां उसके पुजारी के अतिरिक्त रात्रि में अन्य कोई नहीं रह जाता था। नगर से बाहर होने के कारण श्रद्धालुजन सायंकाल के बाद फिर प्रायः नहीं ही आते थे तथा पुजारी जी ने एक से भले दो सोच कर मुझे सहर्ष अनुमति दे दी थी।

मेरे नगर के बहुत बड़ा न होने के कारण यह असम्भव था, कि लोगों को शीघ्र ही इसकी खबर न लग जाती और शीघ्र ही मेरे सभी परिचित इस तथ्य से भी परिचित हो गए कि मैं रात्रि में मंत्र जपता हूं। उनके समक्ष महाहाविद्या साधना की उच्चता आदि का वर्णन करने से कोई लाभ नहीं था, क्योंकि वे इसी धारणा पर दृढ़ प्रतिज्ञ थे, कि मैं कोई सिद्धि प्राप्त करने जा रहा हूं। इसी कारणवश वे मुझे भय-घृणा मिश्रित भाव से मिला करते थे। इस काल के मध्य मुझे अनेक प्रकार की सलाह मशवरे और झिड़कियां मिली, लेकिन सबसे अद्भुत तो मुझे तब लगा, जब मेरे एक सहयोगी ने मुझसे यह कहा कि देवी की साधना कर रहे हो, संभल कर रहना कहीं उल्टा न हो जाएं।

मैं आश्चर्य से उनको देखता ही रह गया, कि साधना और देवी के विषय में लोगों ने कैसी-कैसी धारणाएं बना रखी है।

तंत्र के विषय में जो धारणाएं प्रचलित है, उनका तो फिर भी एक बार तर्क की दृष्टि से औचित्य माना जा सकता है, क्योंकि तथाकथित तांत्रिकों ने अपने आचार-विचार, वेशभूषा से ऐसा ही सिद्ध कर रखा है, किन्तु यदि यही धारणा देवी साधना के विषय में है, तो कितने अधिक खेद की बात है।

यह सत्य है कि देवी साधना अत्यन्त दुष्कर होती है, उसको सम्पन्न करते समय अनेक विशिष्ट आचार-विचारों का दृढ़ता से पालन करना ही होता है, किन्तु यदि इसी आधार पर देवी साधना का भयंकर, हानिप्रद, अनिष्टकारी और विपरीत प्रभावकारी वर्णित किया जाए तो विचार करना पड़ जाता है। मैं यहां वही रटी-रटाई बात भी नहीं कहने जा रहा, कि ***'माता कुमाता न भवति'*** किन्तु यही बात इस आधार पर इस प्रकार से कहने का इच्छुक हूं, कि यदि किसी कारणवश देवी साधना में सफलता न मिले, तो देवी पलट कर **'वार'** नहीं करती। यह किसी भी देवी या देवता के स्वभाव का अंग नहीं होता है। जिस **'देवत्व'** के आधार पर हम सामान्य बोलचाल में कहते है, कि अमुक व्यक्ति एकदम देवता है या अमुक स्त्री बिल्कुल देवी है, उसका यही तो तात्पर्य है, कि वह व्यक्ति या स्त्री प्रत्येक दशा में कल्याणकारी है, उसके अन्दर से राग-द्वेष, घृणा-हिंसा की भावनाएं समाप्त हो गयी हैं, फिर कोई देवी या देवता अपने भक्त या साधक के लिए घातक कैसे हो सकता है?

वस्तुतः देवी साधना या महाविद्या साधना के विषय में एक विशिष्ट प्रकार के संयम एवं आचार-विचार का प्रावधान केवल इस कारणवश किया गया था, जिससे साधक, साधना की उच्च भाव भूमि पर आसीन होते समय च्युत न हो सके और इस तथ्य का निरूपण इस प्रकार से किया गया, कि देवी साधना या महाविद्या साधना में अमर्यादा युक्त कार्य करने वाला साधक पतित हो सकता है अथवा उसे संकट का सामना करना पड़ जाता है। इस विशेष स्थिति को सामान्यीकृत करके सम्पूर्ण महाविद्या साधना अथवा देवी साधना को ही निषिद्ध घोषित कर देना अथवा उससे भयभीत होकर उसे त्याज्य मान लेना बुद्धिमता नहीं कहीं जा सकती।

इस भ्रमात्मक स्थिति को उत्पन्न करने में उन पंड़ितों-पुरोहितों की भी बहुत बड़ी भूमिका रही है, जो पूजन-अर्चन से सम्बन्धित कर्मकांड को अपनी पैतृक सम्पत्ति बनाए रखना चाहते थे और यह तभी संभव था जब सामान्य जन के मध्य भ्रम एवं भय व्याप्त हो सके। आज भी अनेक पढ़े-लिखे और अन्यथा प्रबुद्ध साधकों को यह कहते पाया जा सकता है, कि दुर्गा साधना के असफल रहने पर व्यक्ति विक्षिप्त हो जाता है या उसके मुंह से खून आने लगता है या घर-परिवार बिखर जाता है इत्यादि। सम्भवतः भ्रम की इससे अधिक कोई भी पराकाष्ठा नहीं हो सकती।

जिस प्रकार एक भीरु व्यक्ति की लड़ाई के लिए पैतरे बदलते अधिक दिखता है, उसी प्रकार 'दीन-हीन-पतित' की मानसिकता से युक्त व्यक्ति ही अधिक जोर-शोर से आगे बढ़कर ढोल पीटता, मंजीरे चमकाता अधिक दिखाई पड़ता है। वह वास्तव में दया का पात्र ही होता है, क्योंकि उसने साधना का मर्म जानकर अपने जीवन को निश्चिंतता नहीं दी है वरन इस प्रकार से वह अपने भय को छिपाने का असफल प्रयास ही तो कर रहा है। यही शक्ति साधना का महत्व स्वयमेव स्पष्ट हो जाता है। यदि यह कहा जाए, कि शक्ति की साधना ही प्रथम साधना है, तो कोई भी अतिशयोक्ति नहीं

होगी। आवश्यकता है तो केवल इस बात की, कि साधक अपने विभ्रमों से मुक्त होने की क्रिया करे तथा उसे उचित साधना-विधि प्राप्त हो सके, क्योंकि प्रायः उचित साधना-विधि प्राप्त न होने के कारण एवं तदनुसार असफल रह जाने के कारण ही व्यक्ति के मन में यह धारणा प्रबल हो जाती है, कि शक्ति साधना में सभी को प्रवेश का अधिकार नहीं है। यदि कोई आठ वर्ष का बालक स्नातक स्तर की पाठ्यपुस्तक को पढ़ कर न समझे और कहे, कि यह पुस्तक व्यर्थ है, तो इसमें त्रुटि कहां है और किसकी हैं?

चैत्र नवरात्रि

जो दुर्गति का नाश करती है वे भवगती दुर्गा है - इस बात का ज्ञान प्रत्येक साधक को है, किन्तु इस ज्ञान के उपरान्त भी क्यों नहीं सहज रूप से भगवती दुर्गा की कृपा प्राप्त होती, इसका रहस्य 'दुर्गा' शब्द के विवेचन से मिल जाता है।

''दुःखेन अष्टांगयोगकर्मोपासनारूपेण क्लेशेन गम्यते प्राप्यते या सा दुर्गा॥''

अर्थात्, जो अष्टांगयोग, कर्म एवं उपासना रूपी दुःसाध्य साधन से प्राप्त होती है, वे ही भगवती दुर्गा है।

दूसरी ओर यह भी नितान्त सत्य एवं आवश्यक है, कि साधक अपने जीवन में दुर्गा की साधना, मात्र एक साधना के रूप में ही नहीं वरन् प्रथम साधना के रूप में सिद्धि पूर्वक कर लें, क्योंकि जब तक भगवती दुर्गा की सिद्धि नहीं प्राप्त हो जाती, तब तक न जो जीवन के दुःख, तनाव, दारिद्र्य, वैमनस्य आदि दुर्गतियों की समाप्ति होती है, न ही देवी-साधना में प्रवेश का अधिकार मिल पाता है।

इन्हीं दो सर्वथा विपरीत विचारों अर्थात् भगवती दुर्गा की जीवन में परम आवश्यकता एवं भगवती दुर्गा की दुर्लभता का सामञ्जस्य करने की युक्ति ही नवरात्रि है और वह भी विशेष रूप से चैत्र नवरात्रि, क्योंकि इसी अवसर पर शिव-शक्ति के संयोग से वातावरण की चैतन्यता सामान्य दिनों से कुछ हट कर होती है। वसंत पंचमी से प्रारम्भ होकर चैत्र नवरात्रि तक का सारा काल शिव-शक्ति के मिलन और आनन्द का पर्व ही है, जिसके ठीक मध्य महाशिवरात्रि जैसा महापर्व आता है।

किन्तु योग्य साधक वही होता है, जो अपने स्तर, अपनी क्षमता का ईमानदारी से स्वीकार कर, अपने ही स्तर एवं क्षमता की विधि प्राप्त करने की चेष्टा में रत रहता है तथा उसे सम्पन्न कर भविष्य में उच्चकोटि की साधनाओं की ओर अग्रसर रहता है।

यद्यपि साधना जगत में उच्चकोटि अथवा निम्न कोटि जैसा कोई भेद नहीं है, प्रत्येक साधना ही अपने स्थान पर श्रेष्ठ है, वंदनीय है, फिर भी कुछ साधनाएं 'शक्ति प्राप्ति' की होती हैं, और कुछ '**शक्ति-सिद्धि**' की। प्रारम्भ में शक्ति प्राप्ति की ही साधनाएं करनी पड़ती है, जिस प्रकार एक डायनेमो पहले बाह्य रूप से शक्ति प्राप्त कर गतिशील होता है एवं उसके बाद तो वह स्वयं असीमित ऊर्जा का उत्पादन करने में समर्थ हो जाता है। इसी कारणवश केवल प्रारम्भिक साधक ही नहीं अपितु साधना पथ पर काफी आगे बढ़ चुके साधक भी आत्मविवेचन कर इस प्रकार की प्रारम्भिक साधनाएं, प्राप्त करने की चेष्टा में रत रहते ही हैं।

प्रस्तुत लेख में इसी श्रेणी की एक '**प्रारम्भिक साधना**' वर्णित की जा रही है, **जो साधना के किसी भी आयाम पर स्थित साधक के लिए फलप्रद सिद्ध होगी ही।** यह भगवती दुर्गा की विशेष फलप्रदा '**जया साधना**' है। भगवती दुर्गा की साधना अपने आप में पूर्ण शक्ति की साधना है मूलतः यही जगत की समस्त क्रियाओं की संचालिका है, किन्तु प्रारम्भ में सीधे भगवती दुर्गा की साधना करने से साधक को कोई भी लाभ नहीं हो सकता, क्योंकि कोई भी साधक प्रथम दिन से ही उस भावभूमि और चैतन्यता पर आसीन नहीं होता, कि वह सहज ही भगवती दुर्गा की साधना को सिद्ध कर ले।

यद्यपि पूर्व जन्म की संचित साधना एवं संस्कारों के फलस्वरूप, साधक ऐसी साधना में प्रवृत्त अवश्य होता है, किन्तु यहां एक बात ध्यान में रखने योग्य है, कि भले ही साधक के कितने ही पूर्वजन्मों के संस्कार क्यों न हो, उसे भी वर्तमान जन्म में अपने को जाग्रत करने की क्रियाएं करनी ही पड़ती हैं, क्योंकि जहां एक ओर इस चित्त पर पूर्वजन्मों के शुभ संस्कार अंकित होते हैं, वहीं एक जन्म से अगले जन्म तक की यात्रा में अनेक अशुभ संस्कार भी अंकित हो ही जाते हैं। इसी कारणवश प्रस्तुत साधना न केवल प्रारम्भिक साधकों के लिए है अपितु साधना के पथ पर कुछ समय से गतिशील साधकों के लिए भी समान रूप से फलदायक है।

यह भगवती दुर्गा की साधना में प्रवेश हेतु एक प्रकार से प्रवेश द्वार ही है और यही सिद्धेश्वरी साधना का भी रहस्य

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

है, क्योंकि जब तक साधक उस मूलभूत शक्ति को अपने अनुकूल नहीं बना लेता, जो साधना हेतु आवश्यक बल एवं तदनुकूल प्रखरता प्रदान करे, तब तक शक्ति की कोई भी साधना सफल हो ही नहीं सकती, चाहे वह कोई भी महाविद्या साधना हो अथवा भगवती दुर्गा की साधना।

भगवती जया की साधना एकान्तर से भगवती दुर्गा की ही साधना है जैसा कि **'दुर्गा सप्तशती'** से स्पष्ट होता है -

कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुलेखां,
शखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः॥

अर्थात् **''जिनके अंगों की आभा श्यामवर्णीय मेघ के समान है, जो अपने कटाक्षों से शत्रुसमूह को भय प्रदान करती है तथा अपने मस्तक पर आबद्ध चन्द्रमा की रेखा से शोभा पाती है, हाथ में शंख, चक्र, कृपाण और त्रिशूल धारण करने वाली, तीन नेत्रों से युक्त, सिंह के कंधों पर आसीन, अपने तेज से तीनों लोकों को आपूरित करने वाली उन 'जया' नाम की दुर्गा का ध्यान करें, जिनकी सेवा सिद्धि की इच्छा रखने वाले पुरुष करते हैं तथा देवता जिन्हें सब ओर से घेरे रहते हैं।''**

उपरोक्त ध्यान से यह पूर्णतयः प्रकट होता है, कि भगवती दुर्गा का ही वरदायक स्वरूप **'जया'** है। यह भगवती दुर्गा की कृपा है, कि जहां एक ओर वे साधना के माध्यम से दुःसाध्य कही गयी हैं, वहीं वे अपने एक अन्य कल्याणदायक स्वरूप **'जया'** के माध्यम से अपने भक्तों की आशा को पूर्ण करने के लिए तत्पर भी हैं। देवी एवं देवता भय की स्थिति नहीं है वरन वे तो स्वयं आतुर रहते हैं, कि कब उन्हें उचित आधार मिले और वे अपने कल्याकारी स्वरूप के माध्यम से जगत का कल्याण करें, क्योंकि किसी भी देवी या देवता का मूल चेतना तो केवल करुणामय और कल्याणमय ही होती है। साधक उचित साधना से अपने अन्दर वह पात्रता उत्पन्न करता है, जिससे फिर सम्बन्धित देवी या देवता उसके अन्दर समाहित हो सके।

स्वयं को प्रत्येक ढंग से परिपूर्ण बना लेना और जीवन की दुर्गतियों का समापन कर सकना, ये दुर्गा की साधना के सहज फल होते हैं, और यदि साधक इसे और भी सरल रूप में सिद्ध करना चाहे तो, प्रस्तुत साधना के माध्यम से सिद्ध कर सकता है।

किसी भी माह की शुक्ल पक्ष की अष्टमी को सम्पन्न की जाने वली इस साधना का मूल प्रभाव तो दुर्गा साधना का है, किन्तु अपेक्षाकृत सरल और सहज ढंग का है। इस साधना के माध्यम से ही साधक महाविद्या साधनाओं में प्रवेश का केवल अधिकारी ही नहीं वरन सुपात्र भी हो जाता है तथा भगवती जया की विशिष्ट **'जयाप्रद'** शक्ति के कारण सहज ही उन बाधाओं से मुक्त रहता है, जिनका सामना प्रत्येक महाविद्या साधक को करना ही पड़ता है।

इस साधना को सम्पन्न करने हेतु साधक के पास ताम्रपात्र पर अंकित **'जयदुर्गा यंत्र'** होना अति आवश्यक होता है, क्योंकि यही उनकी शक्तियों का वास्तविक एवं कल्याकारी अंकन जो है। इस महत्वपूर्ण यंत्र के अतिरिक्त एक **'तांत्रोक्त फल'** तथा **'हकीक माला'** भी आवश्यक है।

साधक लाल वस्त्र धारण कर पश्चिम मुख होकर लाल रंग के आसन पर बैठें। यंत्र तथा तांत्रोक्त फल को स्थापित कर दोनों का पूजन कुंकुम और अक्षत से करें।

तदुपरान्त **'हकीक माला'** से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं सिद्धिप्रदे जया दुर्गायै नमः॥

यदि साधक किसी महाविद्या साधना में प्रवृत होने की भावना रखता है, तो उसे इस मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करना आवश्यक होता है। केवल जया दुर्गा की सिद्धि की कामना रखने वाले साधकों के लिए पांच माला ही पर्याप्त है। मंत्र जप के उपरांत सभी साधना सामग्रियों को किसी देवी मन्दिर में कुछ दक्षिणा के साथ विसर्जित कर दें।

इस अद्भुत चैतन्य, शक्तिदायी एवं सिद्धिप्रद साधना को सम्पन्न कर साधकगण स्वयं अनुभव कर सकते हैं, कि देवी की साधना अपने आप में कितना अधिक प्रवाह, तृप्ति एवं मधुरता लिए हुए है, साथ ही मातृस्वरूपा होने के कारण वे अपने साधकों के उन दुखों को भी समाप्त करने में समर्थ हैं ही, जिनको साधक प्रकट करें अथवा न प्रकट करें।

अतः विशिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर 490/- की वी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

तंत्र साधना के अनूठे नौ प्रयोग

जो जीवन की उन्नति के नव द्वार है

नवरात्रि में सम्पन्न करें या कभी भी सम्पन्न करें,

लेकिन इन साधनाओं को करें अवश्य और देखें साधना का चमत्कार

१. व्याधिहन्ता जया प्रयोग

नवरात्रि से कुछ दिन पहले तक जहां प्रकृति में चारों ओर हरियाली छा जाती है, वहीं इसके विपरीत बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है, नवरात्रि मौसम में हो रहे परिवर्तन को प्रतिबिंबित करती है तथा ये दिन इन व्याधियों से पूर्णतः छुटकारा पाने का अच्छा अवसर प्रदान करते हैं।

जया प्रयोग भी इसी उद्देश्य हेतु सम्पन्न किया जाता है। एक स्वच्छ स्थान पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर, श्वेत आसन पर बैठ जाएं, सामने चौकी पर पुष्पों के आसन पर '**जया गुटिका**' स्थापित कर दें। संकल्प लें, कि आप इस विशेष व्यक्ति (नाम लें) अथवा सम्पूर्ण परिवार के सवास्थ्य लाभ हेतु यह प्रयोग कर रहे हैं। घी का दीपक जलाएं तथा '**जया माला**' से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

// ॐ ह्रीं जयायै रोगदारिण्यै फट् //

रात्रि को वही आसन पर सो जाएं। प्रातः काल उठकर, गुटिका को दक्षिण दिशा में घर के बाहर कहीं भूमि में गाड़ आएं। इक्कीस दिन तक माला रोगी को पहनाकर, फिर उसको नदी अथवा तालाब में प्रवाहित कर दें। यह प्रयोग अचूक है एवं निश्चय ही इससे समस्त व्याधियों का मूलनाश होता है तथा स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है।

साधना सामग्री - 90/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२. विजया क्लेश हारक प्रयोग

अचानक ही कभी-कभी ग्रहों की विपरीत चाल अथवा किन्हीं अनेक बाहरी कारणों के फलस्वरूप घर की शांति में विघ्न पड़ जाता है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे सभी पारिवारिक कार्य बिगड़ते जा रहे हैं। मन भी अशांत एवं अधीर हो उठता है। इस स्थिति का उन्मूलन नवरात्रि से बेहतर किसी अन्य समय में नहीं हो सकता, क्योंकि मां की शांक्ति स्वयं आपने बालक को वरदान, सुख एवं समृद्धि प्रदान करने के लिए उत्सुक रहती है।

'**विजया क्लेश हारक गुटिका**' को स्थापित कर। संकल्प करें, कि किस विशेष विघ्न निवारण हेतु आप मंत्र जप कर रहे हैं। तदोपरान्त तेल का दीपक जलाकर, निम्न मंत्र का '**विजया माला**' से 21 माला मंत्र जप करें -

// ॐ लिं विं विं विजयायै ॐ फट् //

रात्रि को ही जाकर माला एवं गुटिका को भूमि में गाड़ दे अथवा जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 210/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३. भद्रा शीघ्र विवाह प्रयोग

विवाह में बाधा विशेषकर कन्याओं के लिए विकट समस्या उत्पन्न कर देती है। उच्च शिक्षित, सुन्दर, प्रतिभावान होने के पश्चात् भी वर नहीं मिल पाता। भद्रा शीघ्र विवाह प्रयोग इस समस्या का उचित एवं अचूक समाधान है।

प्रातः काल उत्तर दिशा की ओर मुख कर पहले आसन पर बैठ जाएं। उचित तो होगा, कि विवाह की इच्छा रखने वाली कन्या अथवा युवक स्वयं प्रयोग को करें, परन्तु ऐसा संभव न हो तो कन्या अथवा युवक के माता-पिता भी उसके नाम का संकल्प ले कर इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकते है। घी का दीपक जला दें, चौकी पर सुगन्धित पुष्पों के आसन पर '**भद्रा चक्र**' को स्थापित करें। संकल्प करें तथा फिर एकाग्र चित्त हो निम्न मंत्र को '**भद्रा माला**' से 11 माला मंत्र जप करें -

//ॐ क्रीं शीघ्र विवाह सिद्धये भद्रायै ॐ शम//

मंत्र जप के पश्चात् '**भद्रा चक्र**' को कन्या/युवक के बाजू पर बांध दें तथा उसे माला भी पहना दें। नवरात्रि के पहले दिन ही प्रयोग सम्पन्न हो तो बेहतर है, क्योंकि माला और चक्र का

नवरात्रि काल में धारण करना आवश्यक है। नवरात्रि के बाद दोनों वस्तुओं को कुंआ अथवा तालाब में प्रवाहित करें। शीघ्र ही वर/वधू की प्राप्ति होगी।

साधना सामग्री - 200/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

४. भद्रकाली उच्चाटन प्रयोग

गृहस्थ जीवन की समस्याओं में, विशेषकर आज के आधुनिक युग में एक विकटतम समस्या है पुत्र अथवा पुत्री का बुरी संगति में फंस जाना। जिसके कारण पारिवारिक मर्यादाओं को त्याग, अपनी पढ़ाई-लिखाई को भुलाकर वे व्यर्थ के क्रियाकलापों - मदिरापान, जुआ खेलना आदि में संलिप्त हो जाते हैं।

ऐसी संगति से अगर उनका मोह भंग न कराया जाए, तो उनका जीवन ही बरबाद हो सकता है। इसी उद्देश्य को सिद्ध करता है, यह तीव्र भद्राकली उच्चाटन प्रयोग। रात्रि के दस बजे के बाद काले आसन पर दक्षिण की ओर मुखकर बैठ जाएं, सामने चौकी पर '**भद्रकाली गुटिका**' को स्थापित करें तथा सामने तेल का दीपक जलाकर संकल्प करें। तत्पश्चात् '**भद्रकाली उच्चाटन माला**' से निम्न मंत्र का 15 माला मंत्र जप करें -

// ॐ क्लीं ऐं क्लीं उच्चाटनं कुरु कुरु फट् //

मंत्र जप के पश्चात् गुटिका एवं माला दोनों को उस व्यक्ति अर्थात् पुत्र/पुत्री के सिरहाने, तकिये के नीचे रख दें। आप स्वयं अनुभव करेंगे, कि कुछ दिन बाद मां काली की कृपा से बालक/बालिका सही मार्ग पर लौट आये हैं। नवरात्रि समाप्त होने पर माला एवं गुटिका को दक्षिण दिशा में घर में दूर जाकर भूमि गाड़ दें।

साधना सामग्री - 195/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

५. सुमुखी सौन्दर्य प्राप्ति प्रयोग

हर युवती, हर युवक का यह मन होता है, कि वह सुन्दर तथा मनोहारक दिखे। यद्यपि सौन्दर्य प्रसाधनों से प्रकृति द्वारा प्रदत्त स्वरूप को परिवर्तित कर पाना संभव नहीं, परन्तु दैवी कृपा से शरीर को सुगंठित, त्वचा को कांतिवान तथा मुखमंडल को लावण्य-युक्त अवश्य बनाया जा सकता है। यही नहीं सुन्दर केश, लम्बा कद भी इस प्रयोग द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

रात्रि को पूर्व दिशा की ओर मुख करें, रेशमी पीले आसन पर बैठ जाएं। सामने चौकी पर गुलाब के सुगन्धित पुष्प बिछाकर उस पर '**सुमुखी सौन्दर्य मुद्रिका**' स्थापित करें, इत्र छिड़क लें तथा सुगन्ध युक्त घी का दीपक जलाएं। संकल्प कर '**सुमुखी चैतन्य सौन्दर्य माला**' से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें -

// ॐ श्रीं सौन्दर्य जूं सः ॐ //

नवरात्रि के सम्पूर्ण काल में मुद्रिका को धारण किए रहे तथा माला भी पहल लें। आप अपने शरीर में एक नवीन शक्ति संचरण का अनुभव करेंगे। नवरात्रि के बाद मुद्रिका और माला को एक स्वच्छ जल स्रोत में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 300/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

६. दुर्मुखी विपत्ति विनाशक प्रयोग

शत्रुओं की कुदृष्टि, ईर्ष्या की भावना आदि से जीवन में तनाव एवं समस्याएं उत्पन्न हो जाती है, कुछ व्यक्तियों की तो प्रवृत्ति ही इस प्रकार की होती है, कि इधर टोका नहीं उधर हानि का सामना करना पड़ जाता है। पूरे वर्ष इस प्रकार के कुप्रभावों से परिवार को सुरक्षित रखने के लिए तथा घर को कुदृष्टि से बचाने के लिए दुर्मुखी विनाशक प्रयोग अत्यत महत्वपूर्ण है।

दक्षिण दिशा की ओर मुख करके, काले आसन पर बैठ जाएं। ऐसे प्रयोगों में काले आसन का प्रयोग अपना महत्व रखता है। कोई आधुनिक भौतिकी विज्ञान का ज्ञाता है, तो वह बता देगा, कि काला रंग सभी प्रकार की तरंगों का विरोध करता है। सामने तेल का दीपक जलाएं तथा '**दुर्मुखी गुटिका**' को स्थापित करें। तत्पश्चात् '**दुर्मुखी विपत्ति हरण माला**' से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें।

// ॐ ॐ हः हः क्षौं ॐ फट् //

रात्रि को ही माला और गुटिका को आसन में लपेटकर ले जाएं तथा घर से दूर किसी निर्जन स्थान में जला दें। इससे पूरे वर्ष आपका घर ऐसी आपदाओं से सुरक्षित रहेगा।

साधना सामग्री - 200/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

७. व्याघ्रमुखी व्यापार वृद्धि प्रयोग

व्यापार का क्षेत्र एक जंगल की भांति होता है तथा उसमें जो भी व्यापारी व्याघ्र की भांति फुर्ती एवं चतुराई से कार्य करता है, सफलता की चरम सीमाओं पर पहुंच जाता है। जरा सी लापरवाही की नहीं, कि नया व्यापारी झपट कर मौका छीन ले जाते हैं, परन्तु व्यक्ति विशेष अगर व्याघ्र के समान हिम्मतवान, निडर तथा चतुर है तो कोई भी प्रतिद्वंद्वी पास

फटकने का साहस भी नहीं कर पाता और ऐसे ही व्यक्ति पर सभी विश्वास भी कर पाते है, कि वह व्यापारी है, जो कार्य का निष्पादन सूझबूझ से सफलता पूर्वक कर पाएगा।

ऐसा ही हौसला, ऐसा ही जोश प्राप्त करने वाला है यह प्रयोग व्यापार वृद्धि का। रात्रि में श्वेत आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख कर बैठें। सामने चौकी पर स्थापित हो '**व्याघ्रमुखी गुटिका**' तथा घी का दीपक, गुरु चित्र भी हो। '**व्याघ्रमुखी दिव्य माला**' से 21 माला निम्न मंत्र का जप करें -

॥ ॐ श्रीं ह्रीं व्यापार वृद्धिं ह्रीं श्रीं ॐ ॥

गुटिका को अपने व्यापार के स्थान अथवा दुकान पर स्थापित करें, जो कि वर्ष भर स्थापित रहे। माला को 21 दिन तक धारण कर जल में प्रवाहित करें। आप अनुभव करेंगे, कि आपके व्यापार में दिन दूगी रात चौगुनी प्रगति होने लगी है।

साधना सामग्री - 210/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

८. सिंहमुखी शत्रु दमन प्रयोग

पुरुष वह है, (और स्त्री भी पुरुषत्व युक्त हो सकती है) जो शत्रुओं पर सिंह की भांति झपट कर उनका संहार कर दें, जिसके एक नाद से ही शत्रु दुम दबाकर भाग खड़े हो तथा फिर समस्या उत्पन्न करने का प्रयास न करें। राजस्थान में तो वहीं व्यक्ति पौरुषवान माना जाता है, जिसके अंसख्य शत्रु हो। शत्रु किसी भी रूप में हो सकता है, प्रत्यक्ष रूप में, मित्रों के वेश में, रिश्तेदार के रूप में अथवा परिवार के सदस्यों के रूप में।

सभी पर हावी बने रहने के लिए यह अचूक प्रयोग है। मां आद्या शक्ति के आशीर्वाद से ऐसा साहस प्राप्त हो जाता है, कि शत्रु सामने टिक ही नहीं पाते, लाल आसन पर दक्षिण की ओर मुख कर बैठ जाएं तथा सामने चौकी पर तेल का दीपक जलाकर '**सिंहमुखी शत्रु दमन गुटिका**' स्थापित करें, तत्पश्चात् '**सिंहमुखी माला**' से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

॥ ॐ क्षीं शत्रुदारिण्यै क्षीं ॐ फट् ॥

गुटिका को बाजू में बांध ले तथा माला धारण कर लें। 21 दिन तक पहने रहने के पश्चात् दोनों को जल में प्रवाहित करें।

साधना सामग्री - 230/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

९. दुर्गा सर्वाकर्षण प्रयोग

मां दुर्गा का स्वरूप ही तंत्रातत्मक है तथा उनसे संबंधित सभी साधनाएं अचूक एवं तीव्र है। विपत्ति जीवन में किसी भी प्रकार से आ सकती है तथा उनके हेतु मां दुर्गा की साधना/आराधना फलदायक सिद्ध होती है। पति का पत्नी से विमुख हो जाना, प्रेमी-प्रेमिका के संबंध विच्छेद हो जाना, पुत्र-पुत्री अथवा घर के किसी सदस्य का रुष्ट हो घर छोड़कर चले जाना, अनेक समस्याएं है। सबका उचित समाधान है, दुर्गा सर्वाकर्षण प्रयोग।

रात्रि में पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख पर बैठ जाएं। सामने चौकी पर '**दुर्गा सर्वाकर्षण गुटिका**' स्थापित करें। जिस व्यक्ति विशेष के लिए प्रयोग किया जा रहा है, उसका नाम एक पर्चे पर लिखकर गुटिका के नीचे रख दें। संकल्प लें कि इस नाम के व्यक्ति के लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जा रहा है। फिर '**दुर्गा आकर्षण माला**' से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें -

॥ ॐ दुं दुर्गायै सर्वाकर्षणं कुरु कुरु ॐ ॥

इसके पश्चात् गुटिका को उसी पर्चे में लपेट दें तथा माला सहित उसे उस व्यक्ति के सिरहाने रख दें, जो कि विमुख हो गया है। अगर व्यक्ति विशेष घर पर नहीं है तो माला और गुटिका को पूजा स्थान में रख दें। कुछ दिनों के पश्चात् ही व्यक्ति के मानस में परिवर्तन होगा तथा वह लौट आयेगा एवं फिर से संबंध पूर्व के समान हो जाएगा। नवरात्रि के दिन माला गुटिका को नदी में प्रवाहित करें। प्रयोग देवी शक्ति पर आधारित है, इसलिए सच्चे मन से तथा अच्छे परिणाम के लिए ही इनका प्रयोग किया जाना चाहिए। गलत उद्देश्य से प्रयोग सम्पन्न किया गया, तो लाभ की आकांक्षा न रखें। दैविक शक्तियों का प्रयोग बुरे कार्यों के लिए नहीं किया जा सकता।

साधना सामग्री - 210/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

शक्ति साधना के ये सभी प्रयोग अपने आप में पूर्ण जाग्रत, स्वयं सिद्ध एवं शीघ्र फल देने वाले हैं। इन सभी प्रयोगों में जहां कहीं भी वस्त्र का रंग नहीं बताया है वहां सफेद वस्त्र या धोती समझें। हर प्रयोग के शरुआत में गुरु पूजन अवश्य करें और पास ही में गुरु चित्र स्थापित करें, ऐसा करने से प्रयोग सफल होने में आशंका नहीं रहती। उपरोक्त सभी प्रयोग आप नवरात्रि को किसी भी दिन या रात्रि में सम्पन्न कर सकते है, यदि आप चाहें, तो एक दिन में दो प्रयोग भी कर सकते हैं। निश्चय ही यह नवरात्रि आप सभी इन दिव्य प्रयोगों से लाभ उठाएं, यही हमारा अभीष्ट है, यही हमारा चिंतन है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

षोडश योगिनी साधना

यदि आप

अपने जीवन के शब्दकोष से

असम्भव शब्द

निकाल देना चाहते हैं, तो

सम्पन्न करें यह साधना

तंत्र के आदि रचयिता भगवान शिव है और समस्त तांत्रिक विद्याओं की रचना उन्हीं के द्वारा हुई है। बाद के विद्वानों ने शिव रचित विद्याओं में शोध कर उनमें निहित अनेक नवीन रहस्यों को खोज निकाला और अपने शिष्यों में उस ज्ञान का सञ्चरण कर आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य थाती के रूप में उन्हें सौंप दिया।

भगवान शिव ने पार्वती को योगिनी साधना के विषय में उपदेश दिया है। जब भगवान शिव से पार्वती ने पूछा, कि देवताओं के लिए तो स्वर्ग में सभी प्रकार के सुख उपलब्ध हैं, अप्सराएं नित्य उनकी सेवा करती रहती हैं, उन्हें अक्षुण्ण यौवन प्राप्त है और उनकी समस्त प्रकार की इच्छाएं पूर्ण होती हैं, जबकि पृथ्वी लोक में रहने वाले मनुष्यों की सभी इच्छाएं पूर्ण नहीं हो पाती और वे अपनी अपूर्ण इच्छाओं के जाल में उलझे जन्म-मरण के चक्र में फंसे रहते हैं। अतः आप ऐसा उपाय बतायें, जिससे मनुष्य भी देवताओं के समान तेजस्वी और पराक्रमी बन सके और अपनी समस्त प्रकार की इच्छाओं को पूर्णता प्रदान करते हुए दिव्यता के पथ पर अग्रसर हो सके।

भगवान शिव ने उत्तर दिया - योगिनी साधना ही एकमात्र ऐसा उपाय है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपनी समस्त प्रकार की इच्छाओं को पूर्णता देते हुए, भौतिक और आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकते हैं। योगिनी साधना सम्पन्न करने से भोग व मोक्ष की प्राप्ति होती है। ये योगिनियां तत्काल फल देने वाली समस्त प्रकार की अतृप्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाली होती है क्योंकि ये मेरी ही शक्ति का स्वरूप हैं।

शिव- पार्वती के इस संवाद से स्पष्ट हो जाता है, कि मानव जीवन में योगिनी साधना का महत्त्व क्या है, वास्तव में योगिनियां अर्द्ध देवियां है, देव वर्ग के इतर यक्ष, किन्नर, गंधर्व आदि योनियों के समान ही योगिनियों का महत्त्व है।

योगिनियां तो तंत्र साधनाओं की आधारभूता देवियां हैं, अपूर्व सौन्दर्य की स्वामिनी होने के साथ ही साथ इन्हें तंत्र के गोपनीय और दुरूह रहस्यों का भी ज्ञान होता है। **ये मात्र नारी आकृति ही नहीं होती, अपितु पूर्ण चैतन्यता से आपूरित एक विशिष्ट सौन्दर्य की स्वामिनी होती हैं, जिनके रोम-प्रतिरोम में साधनात्मक बल समाया होता है और नेत्रों में समाई होती है तंत्र की प्रखरता, जो कि आधार है तांत्रिक साधनाओं का।**

अत्यन्त गौर वर्ण, विद्युत आभा सा देदीप्यमान मुखमण्डल, चराचर विश्व को सम्मोहित सी करती झील सी गहरी काली आंखें और उनमें लहराती मादकता और करुणा का एक अनोखा संगम, मांसल, सुडौल, पुष्ट दूधिया बदन पर पारद भक्षण और पारद कल्प से प्राप्त चिरयौवन की अठखेलियों के फलस्वरूप सदैव षोडश वर्षीया नवयौवना का साहचर्य जिसे प्राप्त हो जाता है, उसके जीवन में फिर असम्भव जैसा कोई शब्द रह ही नहीं जाता, क्योंकि दिव्य आभा से आपूरित इन अत्यन्त तेजस्वी सौन्दर्य की मल्लिकाओं के अन्दर समाई होती है तंत्र की विलक्षण तीव्रता।

इस समय आप जो कुछ भी हैं, उसे आप व्यक्तित्व की संज्ञा तो दे सकते हैं, किन्तु अद्वितीय नहीं कह सकते हैं, क्योंकि साधारण लोगों के बीच में रहते हुए आप स्वयं को भी साधारण समझने लगे हैं।

कभी मन के किसी कोने में इस सम्बन्ध में विचार उठा भी, तो आप असक्षम होने की बात करने लगते हैं, फिर भी आप की आंतरिक भावना यही होती है, कि लोग आप की प्रशंसा करें।

आप की इस इच्छा को साकार करने के लिए पत्रिका अपने पृष्ठों पर ले कर आयी है यह गुह्य किन्तु शीघ्र फलप्रदायक साधना... इस साधना को सम्पन्न कर आप उस अद्वितीय व्यक्तित्व के स्वामी बन जायेंगे, जिसके सजदे में लाखों लोगों के सिर झुक जायेंगे।

यों तो सौन्दर्य साधनाओं के रूप में अप्सराओं, यक्षिणियों, किन्नरियों आदि की भी साधनाओं के विधान प्राप्त होते हैं, यह भी सत्य है, कि वे समस्त प्रकार के भोग प्रदान कर जीवन में आनन्द की वृष्टि करती हैं, परन्तु वे मात्र भोग प्रदान करने में ही समर्थ होती हैं, जबकि योगिनी साधना के फलस्वरूप प्राप्त होती हैं वे सौन्दर्य प्रतिमाएं, जो सहयोगिनी रूप में तंत्र की विशिष्ट क्रियाओं को सम्पन्न करने में साधक की सहायता करती हैं।

इनके सौन्दर्य की साधना की प्रखरता भी होती है ओर मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन आदि के साथ-साथ तंत्र की अनेक दुरूह और गोपनीय क्रियाओं में ये सहायता प्रदान करती हैं और साधक को खेचरी विद्या (वायु गमन), रस सिद्धि, भूगर्भ सिद्धि, वशीकरण, शत्रु स्तम्भन, मनोकामना पूर्ति, दिव्य रसों की सिद्धि, अदृश्य होने की शक्ति, यौवन और बल की प्राप्ति आदि सिद्धियां प्रदान कर उसे पल मात्र में ही सम्पूर्ण विश्व का एक अद्वितीय व्यक्तित्व बना देने में समर्थ होती हैं।

अन्य सौन्दर्य साधनाओं की अपेक्षा योगिनी साधना सहजता और तीव्रता से सिद्ध होने वाली अनुकूल फल प्रदान करने वाली होती है। पूर्ण मनोयोग पूर्वक श्रद्धा और विश्वास के साथ की गई साधना में योगिनियों से साक्षात्कार होता ही है।

इस साधना की प्रखरता व तेजस्विता और इससे प्राप्त होने वाली असीमित तांत्रिक शक्तियों व सिद्धियों के कारण ही इसे अत्यन्त गोपनीय कर गुरु मुख परम्परा तक सीमित कर दिया गया और सामान्य जनमानस में इसके विषय में अनेक भ्रम ओर किंवन्तियां फैला दिये गए तथा क्रूरता और वीभत्सता की अनेक कहानियों को इनके साथ जोड़ दिया गया, कि वे अत्यन्त भीषण आकृति वाली होती हैं, उनकी मुख मुद्रा अत्यन्त भंयकर और नेत्र भय उत्पन्न करने वाले होते हैं, वे मनुष्यों को मार कर उनका रक्त पीती है... आदि-आदि।

जबकि वास्तविकता तो यह है, कि वे अत्यन्त सौम्य स्वरूपा और निर्मल सौन्दर्य की स्वामिनी होती हैं और सिद्ध होने पर साधक की सभी प्रकार से सहायता करती हैं।

दैहिक सौन्दर्य के साथ-साथ आन्तरिक गुणों से भी सम्पन्न ये जिस किसी को भी प्रिया रूप में प्राप्त हो जाती हैं।

वह स्वयं में खेचरी विद्या, रस (पारद) सिद्धि, भूगर्भ सिद्धि, वशीकरण, शत्रु स्तम्भन, अदृश्य होने की शक्ति, यौवन और

बल की प्राप्ति, मनोकामना पूर्ति, दिव्य रसों की सिद्धि आदि अनेक सिद्धियों के साथ-साथ प्रखर और तेजस्वी व्यक्ति का स्वामी बन जाता है। यदि कहा जाय, कि योगिनी साधना सम्पन्न किये बिना तंत्र की पूर्णता नहीं प्राप्त की जा सकती, तो यह अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा।

जीवन में योगिनी साधना की पूर्ण प्रखरता केवल प्रिया रूप में ही सम्पन्न करने पर सम्भव है। प्रेमिका के रूप में सिद्ध होने पर वे प्रतिपल साधक पर प्रेम और स्नेह की वर्षा करने के साथ-साथ उसका मार्गदर्शन भी करती रहती हैं ओर साधक की साधनात्मक सहचरी मात्र न हो कर उसके सम्पूर्ण जीवन को गति प्रदान करने में समर्थ होती हैं।

परन्तु इस प्रेम में वासना का कोई स्थान नहीं होता, तंत्र अपने आपमें वासना से परे है, क्योंकि वासना अपने आपमें एक अधोगामी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से नैतिक और आध्यात्मिक पतन की क्रिया ही सम्पन्न होती है; जबकि तंत्र तो जीवन की ऊर्ध्वगामी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से 'शव' से 'शिव' बनने की क्रिया सम्भव होती है ओर जीवन का मूल ध्येय, जीवन की पूर्णता प्राप्त होती है।

तंत्र और वासना जीवन के दो विपरीत ध्रुव हैं।

अतः वासना को दूर हटा कर ही योगिनी साधना को जीवन में स्थान दिया जा सकता है और जीवन में तंत्रमयता को उतारा जा सकता है, क्योंकि तंत्र अपने आपमें भोग और मोक्ष दोनों को ही प्रदान करने वाला है, जीवन के दोनों पक्षों को साथ लेकर चलने की धारणा रखता है।

यद्यपि कुछ अनधिकारी स्वार्थी तांत्रिकों के व्यभिचारों के फलस्वरूप मोहन, उच्चाटन आदि तांत्रिक क्रियाओं को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा है, लेकिन मूलतः न तो ये क्रियाएं व्यभिचार युक्त हैं और न ही इनका उद्देश्य दूषित है।

तंत्र की पूर्णता को प्राप्त करने के लिए इस प्रकार की साधनाओं में भी दक्ष होना आवश्यक भी है।

तांत्रिक ग्रंथों में कुल चौंसठ प्रकार की योगिनियों का विवरण प्राप्त होता है। यों तो सभी का अपना अलग महत्त्व है ओर उसी के अनुरूप उनके अलग-अलग मंत्र और साधना विधान है, परन्तु जो प्रथम बार इस साधना को सम्पन्न करने का विचार करते हैं, उनके सभी ग्रंथों ने एक मत से सर्वप्रथम जिन

षोडश योगिनियों की साधना सम्पन्न करने की आवश्यकता पर बल दिया है, वे निम्न हैं -

1. **दिव्ययोगा**, 2. **महायोगा**, 3. **सिद्धयोगा**, 4. **माहेश्वरी**, 5. **कालरात्रि**, 6. **हुंकारी**, 7. **भुवनेश्वरी**, 8. **विश्वरूपा**, 9. **कामाक्षी**, 10. **हस्तिनी**, 11. **मंत्रयोगिनी**, 12. **चक्रिणी**, 13. **शुभ्रा**, 14. **शंखिनी**, 15. **पद्मिनी**, 16. **वैताली**।

ये सभी योगिनियां अपने आप में दिव्य और अलौकिक क्षमताओं से युक्त होती हैं और सिद्ध होने के साथ ही अपने साधक को भी आलौकिकता, दिव्यता और अद्वितीयता प्रदान कर उसे पल भर में ही श्रेष्ठता पर ले जा कर खड़ी कर देती हैं, जहां पहुंचना साधक के स्व के प्रयास से असम्भव ही है।

नीचे साधक की जानकारी हेतु उपरोक्त षोडश योगिनियों का ध्यान व उनसे सम्बन्धित संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है -

दिव्य योगा

संयाचे योगविद्यां त्वां दिव्य ज्ञान समन्विते।
योगप्रभावां योगेशीं योगीन्द्र हृदयस्थिताम्॥

"दिव्य ज्ञान से सुशोभित, योगियों के हृदय में निवास

करने वाली योगेश्वरी दिव्य योगा से पूर्ण योग विद्या की मैं याचना करता हूं।''

इस योगिनी का साहचर्य प्राप्त करने के उपरान्त ही योग विद्या को पूर्णता से समझ कर खेचरी विद्या में पारंगत हुआ जा सकता है व जीवन में उतारा जा सकता है।

महायोगा

योगविद्या महायोगा महातेजा महेश्वरी।
मायाधारी मानरता मान-सम्मानतत्परा॥

''महायोगेश्वरी, महातेजस्वी, अनेक मायाधारी मान-सम्मान प्रदान करने वाली महायोगा का मैं आह्वान करता हूं।''

योगिनी महायोगा का स्वरूप अत्यन्त तेजस्वी है और वह अपने साधक को मान-सम्मान से सम्बन्धित अनेक सिद्धियां और पूर्ण वैभव देने में समर्थ है। इसे सिद्ध करने पर साधक चतुर्दिक, सम्पूर्ण विश्व में अपनी कीर्ति फैलाने में समर्थ होता है।

सिद्धयोगा

आगच्छ सिद्धयोगे त्वं! नाद बिन्दु स्वरूपिणी।
सर्वज्ञा सिद्धिदात्री च सिद्धविद्यास्वरूपिणी॥

''नाद और बिन्दुरूपा, सिद्धि देने वाली, सब कुछ जानने वाली, समस्त विद्याओं की प्रतिमूर्तिरूपा सिद्धयोगा को मैं आहूत करता हूं।''

इस योगिनी को जीवन में उतारने के उपरान्त किसी भी साधना में असफलता का प्रश्न ही नहीं रह जाता, साथ ही साधक त्रिकालदर्शी बनने में समर्थ होता है।

माहेश्वरी

प्रणवाद्या महाविद्या महाविघ्न विनाशिनी।
मानदा योगमाता सा माहेश्वरी प्रचोदयात्॥

''प्रणवरूपा, सभी विद्याओं की स्वामिनी, सभी विघ्नों को दूर करने वाली, योगमाता, सभी को सम्मान दिलाने में समर्थ भगवती माहेश्वरी का मैं चिन्तन करता हूं।''

योगिनी माहेश्वरी की साधना के फलस्वरूप जीवन को सभी समस्याएं, विघ्न, बाधाएं आदि दूर हो जाते हैं और साधक अनेक गोपनीय विद्याओं को जानने में समर्थ होता है।

कालरात्रि

कालरूपा कलातीता त्रिकालज्ञा कुलात्मजा।
कुलकुण्डलिनी सैषा कैलाश नग भूषिता॥

''काल स्वरूपिणी, समस्त कलाओं से परे, त्रिकालज्ञ, श्रेष्ठतम कुल में उत्पन्न, कुण्डलिनी स्वरूपा, कैलाश पर्वत को अपनी दिव्यता से सुशोभित करने वाली देवी कालरात्रि का मैं आह्वान करता हूं।''

इस योगिनी का आश्रय लेने पर अकाल मृत्यु, किसी गुप्त शत्रु द्वारा किये गए तांत्रिक प्रयोग आदि का निराकरण होता है और किसी के भी भूत-भविष्य को जाना जा सकता है।

हुंकारी

हुं हुं हुंकाररूपां तां ह्रीं ह्रीं शक्ति स्वरूपिणी।
हूं हूं हूं हाकिनी चैव योगमाया समन्विता॥

''हुंकार रूपिणी, सभी शक्तियों से युक्त हाकिनीरूपा, समस्त योगमाया से विभूषित देवी हुंकारी का मैं आह्वान करता हूं।''

योगिनी हुंकारी की साधना सिद्धि के उपरान्त साधक अकेला ही अपने शत्रु की पूरी सेना का विनाश करने में समर्थ होता है।

भुवनेश्वरी

वाग्रीश्वरी योगरूपा योगिनी सर्वमंगला।
ध्यानातीता ध्यानगम्या ध्यानज्ञा ध्यानधारिणी॥

''सरस्वती स्वरूपा, योग स्वरूपिणी, सर्वमंगलमयी, ध्यानरूपा, ध्यान के द्वारा प्रतीत होने वाली योगिनी भुवनेश्वरी का मैं ध्यन करता हूं।

इस योगिनी के वरदायक प्रभावों से साधक वाक् सिद्धि प्राप्त करने में समर्थ होता है।

विश्वरूपा

विश्वेश्वरि विश्वमाता विश्वभावमयी शुभा।
विश्वरूपा च विश्वेशी विश्वसंहारकारिणी॥

''समस्त विश्व की मातृवत् पोषण करने वाली, विश्व की स्वामिनी, विश्व की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाली विश्वरूपा का आवाहन करता हूं।''

इस योगिनी की साधना के उपरान्त साधक को भूगर्भ सिद्धि तथा विपुल धन-वैभव की प्राप्ति होती है और वह समस्त भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होता है।

साथ ही उसके अन्दर की विषय वासनाएं समाप्त हो कर ज्ञान की उत्पत्ति होती है।

कामाक्षी

कुबेर पूज्य कुलजा काश्मीरा केशवार्चिता।
कात्यायनी कार्यकरी कलादलनिवासिनी॥

''कुबेर के द्वारा संपूजित, श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न, केशर से चर्चित, सभी कलाओं से पूर्ण कात्यायनी रूपा कामाक्षी का मैं चिन्तन करता हूं।''

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

इस योगिनी का पूजन सिर्फ केशर से किया जाता है। इसे सिद्ध करने पर साधक को कायाकल्प, कामदेव के समान यौवन व पौरुष तथा असीम बल की प्राप्ति होती है और उसके समस्त प्रकार के रोगों का नाश होता है।

हस्तिनी

सर्ववश्यंकरी शक्तिः सर्वसंस्तंभिनी तथा।
सर्वसंमोहिनी चैव कुञ्जरेश्वर गामिनी॥

"समस्त विश्व को वश में करने वाली, सभी को स्तम्भित करने वाली, सभी को सम्मोहित करने वाली, मस्त हथिनी सी चाल चलने वाली योगिनी हस्तिनी का आवाहन करता हूं।"

हस्तिनी योगिनी की साधना के फलस्वरूप साधक उच्चाटन, स्तम्भन आदि के साथ-साथ मनुष्य, पशु, पक्षी चराचर विश्व को सम्मोहित और वशीभूत करने में सक्षम होता है।

मंत्रयोगिनी

महामंत्रमयी देवी देवगन्धर्व सेविता।
योगिभिश्चैव संपूज्या मंगला च मनोहरा॥

"मंत्र स्वरूप, देव-गन्धर्वों द्वारा सेवित, योगियों के द्वारा पूजित, मंगलमयी, सौन्दर्यमयी योगिनी का मैं आवाहन् करता हूं।"

इस योगिनी के सान्निध्य में साधक को मांत्रिक साधनाओं में शीघ्र ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है और वह अदृश्य होने की विद्या का ज्ञाता हो जाता है।

चक्रिणी

यशः स्वरूपिणी चक्रे योगमार्गप्रदायिनी।
यज्ञांगी योगरूपा च योगानन्दात्म संस्तुता॥

"यश प्रदान करने वाली, ज्ञान तथा योगमार्ग में प्रवेश देने वाली, यज्ञ के अंगभूत, योग के आनन्द से सम्भूत चक्र धारण करने वाली देवी चक्रिणी का मैं आवाहन करता हूं।"

यह योगिनी योग तथा दिव्य रसों की अनेक सिद्धियां प्रदान करने में समर्थ और आनन्द प्रदान करने वाली है।

शुभ्रा

शाम्भवी सिद्धिदा सिद्धा सुषुम्नासुरनन्दिनी।
शुभ्ररूपा तथा शुद्ध शक्ति बिन्दु वासिनी॥

"शम्भुरूपा, सिद्धिमयी, अपने भक्तों को सिद्धि देने वाली, सुषुम्ना मार्ग से साधकों को प्रेरित करके आनन्द प्रदान करने वाली, समतामयी, परमशुद्धा, शक्ति बिन्दु पर निवास करने वाली देवी शुभ्रा का ध्यान करता हूं।"

इस योगिनी की साधना से कुण्डलिनी जाग्रत होती है और साधक परम पद को प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता है।

शंखिनी

शंखचक्रगदा हस्ता योगीन्द्रस्वान्तहारिणी।
शारदेन्दु प्रसन्नास्या शांकरी शिवभाषिणी॥

"शंख, चक्र तथा गदा धारण करने वाली, योगियों के हृदय को आनन्द देने वाली, शारदीय चन्द्रमा के समान प्रसन्न मुख वाली, शंकररूपा, मंगलभाषिणी देवी शंखिनी का आवाहन करता हूं।"

इस योगिनी की साधना से साधक को समस्त विपत्तियों, बाधाओं, शत्रुओं आदि से पूर्ण सुरक्षा प्राप्त होती है और साधक आनन्द पूर्वक साधनाओं में सफलता की ओर अग्रसर होता है।

पद्मिनी

प्रियव्रतपरा नित्या परमप्रेम प्रदायिनी।
प्रफुल्लपद्मवदना पद्मधर्मनिवासिनी॥

"प्रियवादिनी, प्रेम प्रदान करने वाली, खिले कमल के समान सब के ज्ञान एवं योग मार्ग में विकसित करने वाली देवी पद्मिनी का आवाहन् करता हूं।"

इस योगिनी की साधना से साधक पूर्ण कायाकल्प, पौरुष व अतीन्द्रीय क्षमताएं प्राप्त करते हुए साधनात्मक पूर्णता की ओर अग्रसर होता है।

वैताली

योगेश्वरी च वज्रांगी विभूषणभूषिता।
वेदमार्गरता वेद मन्त्ररूपा वषट् क्रिया॥

"योगेश्वरी, सुदृढ़ देह वाली, वीरता से परिपूर्ण, वैदिक मार्ग का अनुसरण करने वाली वेदमंत्रमयी देवी वैताली का आवाहन करता हूं।"

इस योगिनी की साधना के उपरान्त साधक अत्यन्त तेजस्विता प्राप्त करता हुआ अपने समस्त शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है। साथ ही साथ उसे मंत्र साधनाओं में भी सफलता प्राप्त होती है।

इस साधना को कोई भी व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, युवा हो या वृद्ध सम्पन्न कर सकता है।

इसके लिए यह आवश्यक नहीं है, कि किसी वृक्ष की मूल में बैठें या तिराहे पर मंत्र जप करें या रात्रि को श्मशान में जायें या नदी के किनारे आसन लगायें।

यह पूर्णतः सौम्य साधना है और इसे अपने पूजा कक्ष में बैठ कर सम्पन्न किया जा सकता है, आवश्यकता है गुरु और मंत्र के प्रति श्रद्धा और पूर्ण विश्वास की।

साधना विधान

- इस साधना में '**षोडश योगिनी यंत्र**' व '**योगिनी माला**' की आवश्यकता पड़ती है, जो योगिनी तंत्र के अनुसार मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठित हों।
- इस साधना को किसी भी माह के **शुक्रवार** से प्रारम्भ किया जा सकता है।
- यह ग्यारह दिवसीय साधना है।
- रात्रि में नौ बजे के बाद स्नान कर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठें, गुरु पीताम्बर भी ओढ़ लें।
- सामने लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर गुलाब के पुष्पों के आसन पर षोडश योगिनी यंत्र को स्थापित करें।
- मानसिक गुरु पूजन कर गुरु मंत्र का चार माला मंत्र जप करने के उपरान्त गुरुदेव से इस साधना को सम्पन्न करने की आज्ञा व इसमें पूर्ण सफलता हेतु आशीर्वाद प्राप्त करें।
- फिर हाथ में जल लेकर के प्रथम दिन संकल्प करें, नित्य संकल्प लेने की आवश्यकता नहीं है-

  "मैं अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक नाम का व्यक्ति, अमुक पिता का पुत्र अपने आध्यात्मिक जीवन में षोडश योगिनियों का साहचर्य प्राप्त करने हेतु इस षोडश योगिनी साधना को सम्पन्न कर रहा हूं, मुझे इस साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त हो, जिससे कि मैं साधनाओं में तीव्रता के साथ आगे बढ़ कर सफलता प्राप्त कर सकूं।"
- यंत्र के समक्ष क्रमशः प्रत्येक योगिनी का ध्यान उच्चरित कर उसका पूजन कुंकुम, अक्षत, केशर, पुष्प, धूप-दीप व नैवेद्य से करें। कामाक्षी योगिनी का पूजन मात्र केशर से करें।
- अब नीचे दिये गए प्राण प्रतिष्ठा मंत्र के द्वारा यंत्र में निहित चैतन्यता और ऊर्जस्विता को अपने शरीर के अन्दर उतारें, जिससे कि षोडश योगिनियों की चेतना आपके शरीर में स्थापित हो सके और शीघ्र सफलता प्राप्त हो सके।

पहले दाहिने हाथ में जल ले कर विनियोग करें -

ॐ अस्य प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मविष्णु महेश्वर ऋषयः, ऋग्यजुः साम छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकं प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

जल भूमि पर छोड़ दें और यंत्र पर अपना दाहिना हाथ रख कर निम्न मंत्र बोलते हुए यह भावनाकरें, कि यंत्र की समस्त चैतन्यता धीरे-धीरे आपके अन्दर समाहित होती जा रही है -

प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोऽहं अस्य प्राणाः इह प्राणाः, ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोऽहं अस्य जीव इह स्थितः, ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं हंसः सोऽहं अस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिर तिष्ठन्तु स्वाहा॥

फिर योगिनी माला से पहले मूल षोडश योगिनी मंत्र का एक माला मंत्र जप करें, फिर क्रमानुसार षोडश योगिनियों के विशिष्ट मंत्रों का एक-एक माला मंत्र जप करें। प्रत्येक योगिनी मंत्र का एक माला मंत्र जप करने से पूर्व तथा बाद में मूल षोडश योगिनी मंत्र का एक माला जप होना चाहिए। उदाहरणार्थ पहले मूल मंत्र का एक माला मंत्र जप करें, फिर दिव्य योगा योगिनी मंत्र का एक माला मंत्र जप करें, फिर मूल मंत्र का एक माला मंत्र जप करें। इसी प्रकार प्रत्येक योगिनी से सम्बन्धित मंत्र का जप करना है। ऐसा ग्यारह दिन तक नित्य करें।

मूल षोडश योगिनी मंत्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वं श्रौं घृं षं दृं क्रीं ह्रीं नूं प्रौं वं शं जुं षोडश योगिन्यै नमः॥

दिव्य योगा

॥ ॐ ऐं ऐं दिव्य आगच्छ आगच्छ ॐ फट्॥

महायोगा

॥ ॐ ह्रौं म्लौं ग्लौं महायोगा सिद्ध्ये ॐ फट् स्वाहा॥

सिद्धयोगा

॥ ॐ ह्रीं ऐं फ्रें सः आगच्छ ॐ फट्॥

माहेश्वरी

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं माहेश्वरि एहि एहि ॐ फट् स्वाहा॥

कालरात्रि

॥ ॐ क्लीं क्लीं कालरात्रि सिद्ध्ये ॐ फट् स्वाहा॥

हुंकारी

॥ ॐ हुं हुं ह्रीं ह्रीं हूं हूं फट्॥

भुवनेश्वरी

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं आगच्छ भुवनेश्वरि ॐ फट्॥

विश्वरूपा

// ॐ वं वं विश्वरूपो वं वं ॐ फट्//

कामाक्षी

// ॐ कं कं कामाक्षि एहि एहि ॐ फट्//

हस्तिनी

// ॐ ऐं क्लीं हस्तिगामिन्यै सिद्धये क्लीं ऐं ॐ//

मंत्रयोगिनी

// ॐ मं मंत्ररूपे एहि एहि ॐ//

चक्रिणी

// ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रौं चक्रेश्वर्यै सिद्धये ॐ फट्//

शुभ्रा

// ॐ शं शं शुभ्रे आगच्छ आगच्छ शं शं ॐ//

शंखिनी

// ॐ ह्रीं श्रीं शं शंखिनी आगच्छ ॐ फट्//

पद्मिनी

// ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं फं पद्मिनी एहि ॐ फट्//

वैताली

// ॐ ऐं ह्रीं वं वैतालि एहि एहि ॐ फट्//

मंत्र जप की समाप्ति पर साधक साधना कक्ष में सोयें। अगले दिन पुनः इसी प्रकार साधना सम्पन्न करें। बारहवें दिन पीले वस्त्र सहित यंत्र और माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना काल में कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है -

- इस साधना को रात्रि में ही सम्पन्न करें।
- इन ग्यारह दिनों में यथासम्भव कम से कम बोलने का प्रयास करें, मौन सर्वोत्तम है।
- मात्र एक समय ही शुद्ध शाकाहारी भोजन करें, फलाहार सबसे उत्तम है, मांस-मदिरा या उत्तेजक पदार्थों से बचें।
- मात्र गुरु चिन्तन, इष्ट चिन्तन और इस साधना विशेष से सम्बन्धित चिन्तन में ही समय व्यतीत करें।
- ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य है।

उपरोक्त सभी नियमों का पालन करते हुए निष्ठा और श्रद्धा पूर्वक किये गए मंत्र जप से सफलता प्राप्त होती ही है। यदि साधना से पूर्व साधक **'षोडश योगिनी दीक्षा'** प्राप्त कर लेता है, तो फिर उसकी सफलता में कोई सन्देह नहीं रह जाता और वह अद्वितीयता और श्रेष्ठता के मार्ग पर गतिशील हो पूर्णता की ओर अग्रसर हो जाता है।

साधना सामग्री - 360/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

साधना बिनु सिद्धि नहीं

साधना का क्षेत्र बहुत व्यापक है, बहुत विस्तार लिए हुए है।

'साधयति इति साधना'

अर्थात् खुद को साध लेना, खुद को पूर्ण कर लेना ही साधना है। इस क्षेत्र में कई प्रकार के नियम हैं, जिनके बिना साधना में व्यक्ति सफलता संदेहास्पद ही रहती है।

कई बार साधकों के पत्र आते है, कि उन्हें साधना में सफलता नहीं मिल रही है, उनको अनुभव नहीं हो रहे हैं, उनका काम नहीं बन रहा है आदि-आदि। इन सबका मुख्य कारण हो सकता है - नियमों का सही ढंग से पालन न करना। प्रत्येक साधना के अपने विशिष्ट नियम होते हैं, जिनको समझे बिना व्यक्ति को सफलता मिल ही नहीं सकती। इसलिए व्यक्ति को बिना किसी परेशानी और अधीरता के इन सबको पहले समझना चाहिए और फिर साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

इनको साधना के क्षेत्र में 'पंच साधन' कहते हैं और लगभग सभी प्रमुख साधनात्मक ग्रंथों में कहा गया है, कि जो व्यक्ति इन पंच साधनों को समझ लेता है, तो उसके लिए फिर कोई ऐसी साधना नहीं, जिसे वह सिद्ध न कर सके। इन ग्रंथों में पंच साधनों का विवरण निम्न प्रकार से प्राप्त होता है -

1. स्थान, **2.** समय, **3.** सामग्री, **4.** संख्या, **5.** संयम।

कई साधकों के उदाहरण हमारे पास ऐसे हैं, जिन्होंने साधना में सफलता पाई है। क्या आप यह सोचते हैं, कि वे पहली बार में सफल हो गए थे... नहीं, परन्तु उनमें जोश, हिम्मत और लगन थी, उन्होंने दिल छोटा नहीं किया, उन्हें पता था, कि पुराने कर्मों एवं दोषों की वजह से उन्हें सफलता प्राप्ति में विलम्ब हो रहा है। साथ ही वे यह भी जानते थे, कि जो साधना वे कर रहे हैं, वे पूर्व दूषित कर्मों के मार्जन में काम आ रही है... वे व्यर्थ नहीं जा रही हैं।

गुरु वाणी

☆ शिष्य ऐसा हो, जो समाज की परवाह नहीं करे, जो चुनौतियों को झेल सके, जिसकी आंखों में तेवर हों... अग्नि स्फुलिंग हो, जिसके हाथों में वज्र की तरह प्रहार करने की क्षमता हो, और जो सही अर्थों में गुरु चरणों में समर्पित होने की भावना रखता हो।

☆ समर्पण हाथ जोड़ ने से नहीं हो सकता और न ही गुरु की आरती उतारने से हो सकता है। समर्पण का तात्पर्य है, कि गुरु जो आज्ञा दे, उसका बिना ना नुकुर किए पालन किया जाए।

☆ जो भी बने अद्वितीय बनें, सामान्य जीवन जीना तुम्हारे लिए उचित नहीं है। सामान्य जीवन जीकर तुम अपना नाम तो डुबोते ही हो, मेरा नाम भी डुबोते हो। कोई देवता या भगवान पैदा नहीं होते, बनते हैं। जन्म आपके हाथ में नहीं था, लेकिन अगर जन्म लेकर आपको गुरु मिल जाए, तो फिर आप अद्वितीय बन सकते हैं राम बन सकते हैं, कृष्ण बन सकते हैं।

☆ इस ढंग से कोई हीरे नहीं लुटाता, जिस ढंग से मैं ज्ञान आप पर लुटा रहा हूं, यह आपका सौभाग्य है, कि मैं आपको उस जगह तक ले जाना चाहता हूं कि पूरे विश्व में आप विजयी हों, आप सफलता युक्त बन सकें और मैं अपने शब्दों पर दृढ़ हूं और मैं आपको अद्वितीय बना रहा हूं।

☆ शिष्य जितना गुरु से एकाकार होता है उतना ही गुरु उसको आगे धकेलता रहता है। शिष्य पर निर्भर है कि वह अपने आप को पूर्ण समर्पित करता है या अधूरा समर्पित करता है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

☆ समुद्र खुद आगे चलकर गंगोत्री के पास नहीं जाएगा, कि गंगा तुम आओ मुझे मिल लो, गंगोत्री से गंगा खुद उतर कर समुद्र तक जाएगी। उस गंगा को जाना है समुद्र तक, यदि गंगा नहीं जाएगी, बीच में सूख जाएगी तब भी समुद्र अपनी जगह को नहीं छोड़ेगा। समर्पण तो शिष्य को ही करना पड़ेगा।

☆ जुदाई तो अपने आप में एक तपस्या है, किसी का इंतजार है, अपने आप में पूर्ण साधना है। किसी को याद करना, किसी के चिंतन में डूबे रहना, अपने आप में ईश्वर की साधना है।

☆ अगर भगवान को साक्षात् देखना है, उस प्रभु के सामने साक्षात् नृत्य करना है, उस प्रभु को अपनी आंखों में बसा लेने की क्रिया करनी है, तो स्त्री हृदय ही धारण कर ही देखा जा सकता है। स्त्री का अर्थ है, जिसका हृदय पक्ष जाग्रत हो, क्योंकि हृदय पक्ष को जाग्रत करने की क्रिया प्रेम है।

☆ प्रेम का तात्पर्य है ईश्वर, और जब तक प्रेम के रस में भीगोगे नहीं, ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती, गुरुदेव से साक्षात्कार नहीं हो सकता... और यह अंदर उतर कर प्रभु से साक्षात्कार करने की क्रिया ही तो प्रेम है।

शिष्य धर्म

त्वं विचित्तं भवतां वदैव, देवाभवावोतु भवतं सदैव ।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि, शिष्यत्व एव भवतां भगवद् नमामि ॥

इस श्लोक में बताया गया है कि जीवन का श्रेष्ठ तत्व शिष्य होता है । सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यदि सबसे उच्च कोटि का कोई शब्द है तो वह शब्द शिष्य है । शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह गुरु से दीक्षा लिया हुआ व्यक्ति हो, शिष्य का मतलब है कि जो प्रत्येक क्षण नवीन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन में उतारता हो वह शिष्य है बालक भी शिष्य है, जो मां के गुणों को अपने जीवन में उतारता है, देख करके अनुरूप बनता है।

- ✧ गुरु चरणों के अतिरिक्त शिष्य के लिए कोई तीर्थ नहीं होता, उसी भाव से वह गुरु चरणोदक को भी अमृत समझ कर पान करता है।
- ✧ गुरु और गुरु कार्य को त्यागने वाले को कहीं शरण नहीं मिलती। इसलिए अपनी सामर्थ्य अनुसार गुरु कार्य में भी मनोभाव से सहयोगी बनें रहें।
- ✧ शिष्यता का मतलब और एक मात्र अर्थ होता है तलवार की धार पर चलना।
- ✧ यथा संभव व्यर्थ की चर्चाओं में न पड़ कर गुरुदेव का ही ध्यान मनन करें। दूसरे की आलोचना अथवा निंदा करने से शिष्य का जो बहुमूल्य समय अपने कल्याण में लगाना चाहिए, वह व्यर्थ हो जाता है, उसका प्रभाव उसके द्वारा की गई साधनाओं पर भी पड+ता है।
- ✧ शिष्य को नित्य एक नियमित समय पर नियमित संख्या में गुरु मंत्र का साधना रूप में जप अवश्य करना चाहिए, यदि वह ऐसा करता है, तो उसके जन्म, जन्मांतरीय दोषों और पापों का क्षय होता है तथा चित्र निर्मल हो जाता है, जिससे ज्ञान और सिद्धि की भी प्राप्ति हो पाती है। शिष्य को यथासंभव अधिक से अधिक जब भी समय मिले, गुरु मंत्र का जप करते ही रहना चाहिए।
- ✧ शिष्य के जीवन में चरित्र ही सफलता और असफलता का द्योतक है। चरित्र सफल है तो जीवन सफलता की ओर बढेगा, किंतु चरित्र अगर असफलता की ओर अग्रसर है तो जीवन अवश्य पतन की ओर उन्मुख होगा।
- ✧ शिष्य का महत्व इसमें नहीं कि वह कितने वर्ष जीवित रहता है। अपितु महत्व तो इसका है कि तुम किस प्रकार से जीवित रहे।
- ✧ यदि तुम्हारी साधना करने की तीव्र उत्कण्ठा है तो भगवान उसके पास सद्गुरु भेज देते हैं। सद्गुरु के लिए साधकों को चिंता करने की आवश्यकता नहीं पड+ती।
- ✧ सच्चा और वीर शिष्य तो इस संसार का बोझा उठाकर भी सद्गुरु की ओर प्रसन्न भाव से निहारता है।
- ✧ जैसे दर्पण को स्वच्छ करने पर उसमें मुंह दिखलाई देने लगता है, उसी प्रकार हृदय के स्वच्छ होते ही उसमें सद्गुरु का रूप दिखलाई देने लगता है।

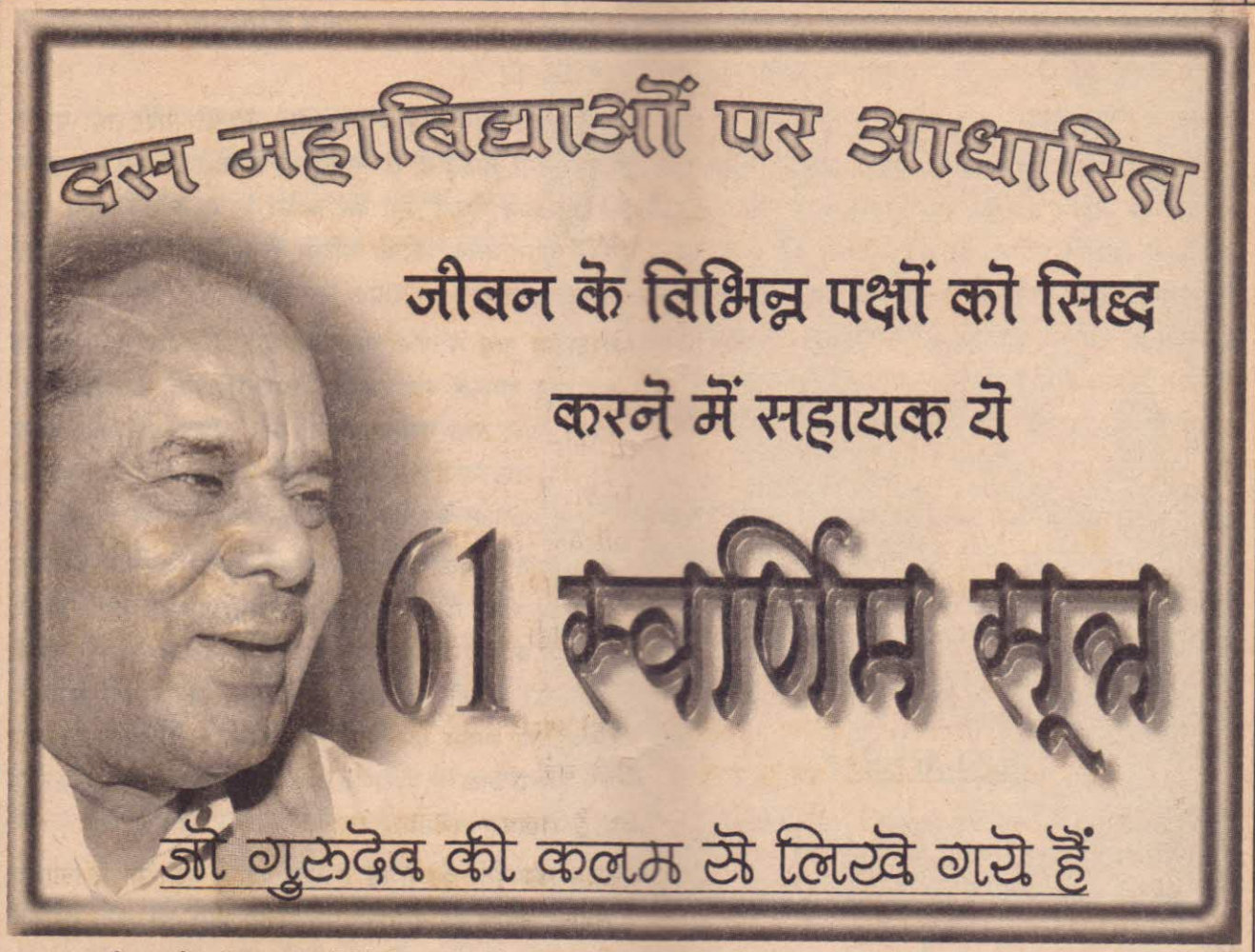

मानव जीवन को गतिमान करने में जितना मनुष्य का स्वयं का कर्म निर्भर करता है उतना ही उसका भाग्य भी और यदि मनुष्य इसके साथ ही देवी-देवताओं का आश्रय भी ले लेता है, तो स्वयं भी पुरुषार्थ से ही अपनी भाग्य लिपि को लिख लेता है।

दैविक शक्तियां भी उन्हीं को सहयोग प्रदान कर पाती हैं, जो स्वयं में दृढ़ निश्चयी हों तथा स्वयं पर और अपने कार्यों पर पूर्ण विश्वास रखते हों। ऐसे ही व्यक्तियों को साधक कहा गया है और साधक अपने जीवन में जो इच्छा, जो कामना करता है वह फलीभूत होती ही है। वह सदैव ऐसे अवसरों की ताक में रहता है, जब वह साधनाएं सम्पन्न कर अपने भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के जीवन की पूर्णता प्रदान कर सके। शिवरात्रि से नवरात्रि तक का समय अत्यन्त साधनात्मक एवं शक्ति अणुओं से संचरित है इस शुभ अवसर पर **पूज्य गुरुदेव ने अत्यन्त कृपा कर, साधकों तथा पाठकों की श्रद्धायुक्त प्रार्थना को स्वीकार कर अत्यन्त दुर्लभ और सर्वथा नूतन तथा अचूक प्रयोगों का खजाना ''अपनी डायरी'' (पूज्य गुरुदेव ने समय-समय पर विभिन्न साधुओं द्वारा सम्पन्न की गयी साधना-विधियों तथा मंत्रों का संग्रह उनके अनुभवों के आधार पर, इस डायरी में किया है।) कुछ समय पर लिए 'भैरवानन्द'' के माध्यम से प्रदान की और उस डायरी के स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित हीरक खण्डों में से 61 विशिष्ट प्रयोगों के प्रकाशन की अनुमति भी प्रदान की।**

सभी साधकों के जीवन में यह एक अत्यन्त जाज्वल्यमान अवसर होगा जब वे इन सभी प्रयोगों में से अधिक से अधिक प्रयोगों को सम्पन्न करेंगे। शिवरात्रि से नवरात्रि तक इन प्रयोगों को कभी भी अपनी सुविधानुसार कर सकते हैं। उसके बाद साधना सामग्री का विसर्जन नदी, तालाब या समुद्र में करना ही शास्त्रोचित होता है।

गुरु के मुख से उच्चरित **'आशीर्वाद'** शब्द से ही असम्भव से असम्भव कार्य भी सहज सम्भव हो जाते हैं, फिर इन प्रयोगों के बारे में और अधिक विवेचन की आवश्यकता ही कहां रही। यहां प्रस्तुत प्रयोग और मंत्र परम्परागत मंत्रों से थोड़ा हट कर हैं, अतः पाठक इस कारण भ्रमित न हों। गुरु

कृपा से प्राप्त इन अमृत बिन्दुओं का पान करने से कोई भी साधक अपने आपको तथा अपने परिवार के किसी सदस्य को वञ्चित नहीं होने देगा।

इन प्रयोगों के माध्यम से आप अपने भौतिक और आध्यात्मिक जीवन को पूर्ण रूप से अनुकूल बना सकते हैं, क्योंकि ये समस्त प्रयोग उन महाविद्याओं पर आधारित हैं, जो अत्यन्त तीक्ष्ण मानी गई है और जो सिद्ध होने पर साधक के जीवन की समस्त बाधाओं को समाप्त कर उसे पूर्णता और सफलता के उच्चतम सोपान पर प्रतिष्ठित कर देती हैं। इन साधनाओं को सम्पन्न कर निश्चय ही आप चतुर्दिक विजय और सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

ये समस्त प्रयोग आप 08-03-2005 से लेकर 18-04-2005 तक सम्पन्न कर सकते हैं। साधक चाहें तो एक ही दिन में अपनी सामर्थ्यानुसार पांच से अधिक प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

महाकाली

ध्यान

या कालिका रोगहरा सुवन्द्या वश्यैः समस्तै र्व्यवहार दक्षैः।
जनै र्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री॥

मंत्र

॥ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं॥

1. यदि आपके जीवन में निरन्तर शत्रुओं की संख्या में वृद्धि होती जा रही है और आप उनका सामना करने में स्वयं को असमर्थ अनुभव कर रहे हैं, तो निश्चय ही आप अपने शत्रुओं का सामना करने में सक्षम हो सकेंगे '**काली**' के इस प्रयोग को सम्पन्न करके।

'**काली यंत्र**' को लाल रंग के वस्त्र पर केसर से *'क्रीं'* लिख कर स्थापित कर दें। फिर यंत्र के समक्ष वीरासन में या पद्मासन में बैठ कर उपरोक्त ध्यान कर, ऊपर दिये हुए मंत्र का तीन दिन तक नित्य 21 बार जप करें। प्रयोग समाप्त होने पर '**यंत्र**' को नदी में प्रवाहित कर दें या होलिकाग्नि में डाल दें।

2. यदि कोई शत्रु अकारण आपको हानि पहुंचाने के लिए निरन्तर चेष्टारत रहता है, आपके प्रत्येक कार्य में बाधाएं उत्पन्न करता रहता है, तो उसका दमन करने के लिए आप '**काली यंत्र**' को ताम्रप्लेट में लाल रंग से रंगे चावलों पर स्थापित कर दें यंत्र का पूजन पुष्प, कुंकुम तथा अक्षत से कर उपरोक्त ध्यान करें तथा उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप 7 दिन तक नित्य करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

3. यदि आप वाक् शक्ति, धन, सम्पत्ति यश तथा पूर्णता प्राप्त करना चाहते है, तो सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से अष्टदल कमल बना कर कमल के मध्य में '**काली यंत्र**' का स्थापन करें। यंत्र का संक्षिप्त पूजन कुंकुम, पुष्प व अक्षत से करें तथा तेल का दीपक लगा दें।

दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प लें - "**हे देवी! मैं यह मंत्र जप सम्पन्न कर रहा हूं, आप मुझे वाक्-शक्ति, धन-धान्य, यश तथा पूर्णता प्रदान करें।**" फिर उपरोक्त मंत्र का 11 दिन तक नित्य 51 बार जप करें। ग्यारह दिन बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

4. यदि आपको किसी कार्य को सम्पन्न करने में निरन्तर बाधाओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ा रहा है, तो एक कागज में अपनी समस्या लिख कर उसमें '**काली यंत्र**' को मौली से बांध दें तथा उसके समक्ष भगवती काली का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 101 बार उच्चारण कर किसी जल में विसर्जन कर दें। कार्य में शीघ्र सफलता की स्थितियां बनेगी।

5. भगवती काली के प्रत्यक्ष दर्शन करने में भी साधक समस्त प्रकार की बाधाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। यदि आपको इष्ट भगवती काली हैं और आप उनके प्रत्यक्ष बिम्बात्मक दर्शन करना चाहते हैं, तो लाल रंग के वस्त्र पर काली का बीज मंत्र *'क्रीं'* केशर से लिखें। फिर उपरोक्त ध्यान करते हुए उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए '**काली यंत्र**' पर 21 पुष्प चढ़ाते हुए जप करें। यह प्रयोग 3 दिन का है, इसे नित्य रात्रि में ही सम्पन्न करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

6. साधक को प्रतिदिन अनेक प्रकार की बाधाओं को सामना करना ही पड़ता है। वह इन समस्त प्रकार की छोटी-छोटी बाधाओं से मुक्ति पाने के लिए '**काली यंत्र**' पर मंगलवार की मध्य रात्रि में लाल पुष्प चढ़ाते हुए 11 बार उपरोक्त मंत्र का जप करें। यह प्रयोग एक दिन का है, इसके पश्चात् यह मंत्र जप वह पूरे वर्ष भर नित्य अपने दैनिक साधना क्रम में प्रयुक्त कर सकता है, परन्तु यंत्र को ग्यारह दिन के पश्चात् ही नदी में प्रवाहित कर दें या किसी निर्जन स्थान पर डाल दें।

न्यौछावर 150/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

तारा

ध्यान

श्वेताम्बरां शारद-चन्द्र-कान्तिं
सद्-भूषणां चन्द्र-कलावतंसाम्।
कर्त्रीं-कपालान्वित-पाणि-पद्मां
तारां त्रिनेत्रां प्रभजेऽखिलद्वयैं॥

मंत्र

॥ ऐं ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्॥

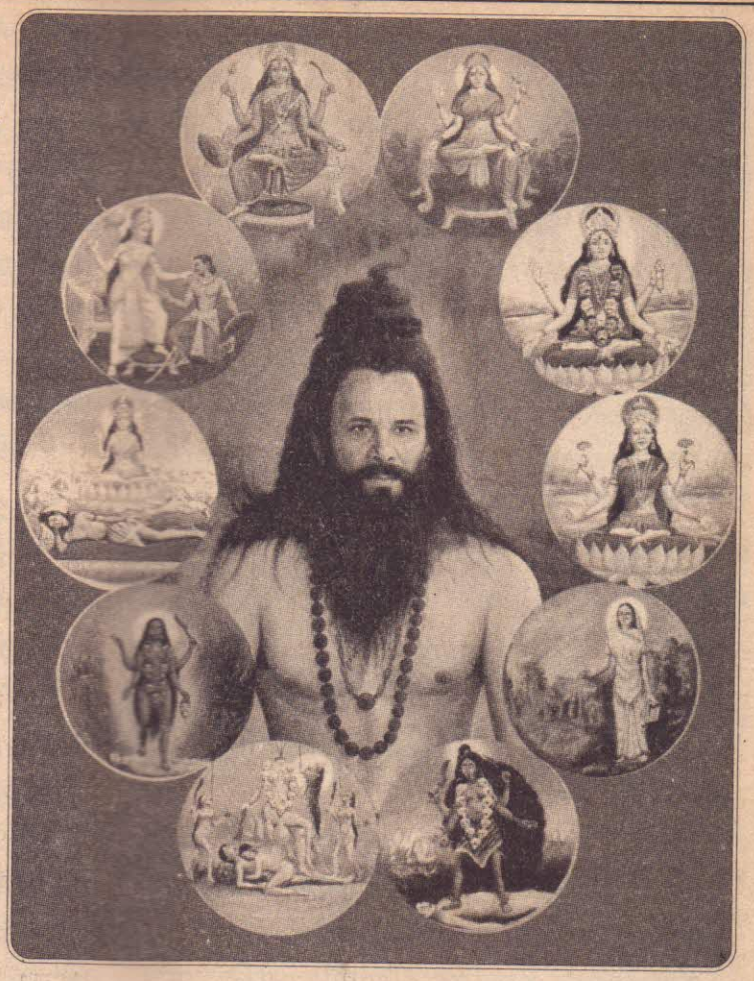

7. साधक में आलस्य या प्रमाद की अधिकता होने लगी हो, जिसके कारण साधना सम्पन्न करने में व्यवधान उत्पन्न होता हो, तो प्रमाद की समाप्ति के लिए '**तारा यंत्र**' को गुलाबी रंग के वस्त्र पर गुलाब के पुष्प का आसन बना कर स्थापित करें। फिर उपरोक्त ध्यान कर, यंत्र का पूजन केसर, पुष्प तथा अक्षत से करें। उपरोक्त मंत्र का सात दिन तक नित्य 5 माला जप करें। सात दिन पश्चात् को उसी वस्त्र में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

8. साधक जब किसी साधना को आरम्भ करता है, तो उसके आस-पास की परिस्थितियों के कारण उसका ध्यान निरन्तर प्रभावित होता रहता है। साधना के दिनों में घर में अचानक कलह हो जाना या किसी का बीमार पड़ जाना जैसी बाधाओं के फलस्वरूप साधक एकाग्रचित हो कर साधना को सम्पन्न नहीं कर पाता और अपेक्षित सफलता नहीं प्राप्त कर पाता।

इसके निदान के लिए शुक्रवार के दिन '**तारा यंत्र**' को चावल की ढेरी पर स्थापित कर दें। यंत्र के समक्ष धूप तथा दीप लगाकर यंत्र का पूजन कर भगवती तारा का ध्यान करें।

उपरोक्त ध्यान के पश्चात् उपरोक्त मंत्र का ग्यारह दिन तक नित्य 51 बार उच्चारण करें। ग्यारह दिन पश्चात् यंत्र को केले के वृक्ष की जड़ में दबा दें।

9. यदि आपके ऑफिस में परिस्थितियां आपके अनुकूल नहीं हैं या आपके विरोधी निरन्तर आपसी विरोध का वातावरण बनाये रखते हैं, तो आप ऐसी परिस्थितियों में भी अपने ऑफिस के वातावरण को अपने पूर्णतः अनुकूल बना सकते हैं, यह प्रयोग सम्पन्न करें -

'**तारा यंत्र**' को गुलाबी रंग के वस्त्र पर केशर बीज मंत्र '*स्त्रीं*' लिख कर स्थापित कर दें। यंत्र के समक्ष तारा ध्यान कर पूजन करें तथा उपरोक्त मंत्र का तीन दिन तक नित्य 51 बार जप करें। इन दिनों में यंत्र को नित्य अपने साथ ऑफिस ले जायें। तीन दिन पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

10. काव्य प्रतिभा या लेखन प्रतिभा को और अधिक निखारने के लिए '**तारा यंत्र**' को ताम्रपात्र में पान के पत्ते पर स्थापित करें। यंत्र स्थापन के बाद यंत्र के चारों ओर चावल से गोल घेरा बना दें। यंत्र के समक्ष आटे से बना कर तीन दीपक लगायें प्रत्येक दीपक पर क्रमशः पूर्ण एकाग्र हो पन्द्रह मिनट तक उपरोक्त मंत्र का जप करें। मंत्र जप समाप्ति पर तीनों दीपक को चौराहे पर रख दें।

नित्य नया दीपक बना कर यह प्रयोग सम्पन्न करें। ऐसा ग्यारह दिन तक नित्य करें। ग्यारहवें दिन यंत्र को भी दीपक के साथ रख दें।

11. यदि साधिकाएं स्वयं में प्रत्येक दृष्टि से श्रेष्ठता, सम्पन्नता प्राप्त करना चाहती हैं और साधना करें। प्रातः ही स्नान कर गुलाबी साड़ी पहन लें।

बाजोट पर गुलाबी वस्त्र बिछाकर उस पर ताम्रपात्र में स्वस्तिक का चिन्ह बना कर '**तारा यंत्र**' को स्थापित करें।

फिर गुलाब के पुष्प यंत्र पर चढ़ाकर यंत्र का पूजन करें। भगवती तारा का ध्यान करते हुए उपरोक्त मंत्र का तीन दिन तक नित्य 31 बार जप करें। तीन दिन को प्रयोग समापित के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

12. भगवती तारा के प्रत्यक्ष बिम्बात्मक दर्शन करने मात्र से साधक अनेक पाप-दोषों से मुक्त हो जाता है जो साधक भगवती तारा के उपासक है, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

सफेद रंग के वस्त्र पर उपरोक्त मंत्र को कुंकुम से लिखकर उस पर '**तारा यंत्र**' स्थापित करें। उपरोक्त भगवती तारा ध्यान के पश्चात् मंत्र का 75 बार जप करें। यह प्रयोग सात दिन करें। सात दिन पश्चात् यंत्र को किसी भी वृक्ष के नीचे दबा दें।

न्यौछावर - 150/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी

ध्यान

उद्यत्सूर्य सहस्राभां पीनोन्नत पयोधराम्
रक्तमाल्याम्बरालेप रक्तभूषण भूषितां।
पाशांकुशधनुर्बाण भास्वतपाणि चतुष्टयम्
रक्तनेत्रत्रयां स्वर्णमुकुटोद्भासि चन्द्रिकाम॥

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं ह्रीं फट्॥

13. प्रौढ़ावस्था में स्त्रियों में सौन्दर्य की न्यूनता आने लगती है, जिसके कारण कई बार वे हीन भावना से ग्रस्त हो जाती हैं, परन्तु वे चाहें तो अपने सौन्दर्य को स्थिरता दे सकती है भगवती षोडशी के इस प्रयोग से।

शुक्रवार को प्रातः काल ही स्नानादि कर लाल वस्त्र धारण करें। लाल रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से चतुर्दल कमल बनाएं तथा कमल के मध्य में कुंकुम से अपना नाम लिखें, चारों दलों में कुंकुम से बिन्दियां लगा दें। अपने नाम के ऊपर '**षोडशी यंत्र**' स्थापित कर यंत्र का पूजन केसर, पुष्प तथा अक्षत से करें। पूजन के बाद उपरोक्त षोडशी ध्यान करें, फिर कुंकुम से रंगे हुए चावल के दानों को चढ़ाते हुए नित्य सात दिनों तक उपरोक्त मंत्र का जप 51 बार करें। नित्य मंत्र जप की समाप्ति के पश्चात् चावल के दानों को चिड़ियों को डाल दें। प्रयोग समाप्ति पर यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

14. सौन्दर्य, बुद्धि तथा चातुर्य प्राप्ति की इच्छा रखने वाली स्त्रियों को भगवती षोडशी का यह प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

लाल रंग के वस्त्र पर केसर से त्रिभुज बनाएं, त्रिभुज के मध्य *'ऐं'* लिख कर उस पर षोडशी यंत्र को स्थापित कर दें। त्रिभुज के तीनों कोनों पर चावल की ढेरी बनाकर एक-एक सुपारी स्थापित करें। घी का दीपक लगायें। उपरोक्त ध्यान करने के पश्चात् मंत्र का 13 दिन तक नित्य 65 बार मंत्र जप करते समय अपनी दृष्टि यंत्र पर स्थिर रखें तथा पूर्ण श्रद्धा और विश्वासयुक्त चिन्तन बनाकर रखें। 13 दिन बाद यंत्र एवं सुपारी को उसी वस्त्र में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

15. पुरुषों में जीवन के प्रति जो सौन्दर्यानुभूति होती है, वह आयु व्यतीत होने के साथ ही समाप्त होने लगती है, जिसके कारण वे मात्र कर्त्तव्य मान कर ही दाम्पत्य जीवन का निर्वाह करते रहते हैं। पर यदि वे चाहें, तो अपने आपको जीवन के प्रति सौन्दर्ययुक्त रख सकते हैं और सौन्दर्यानुभूति को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

लाल रंग के वस्त्र पर कुंकुम से रंगे चावल की ढेरी पर '**षोडशी यंत्र**' को स्थापित करें, यंत्र के चारों ओर पांच आटे के दीपक लगायें। प्रत्येक दीपक में थोड़ी सी सरसों डाल दें। पांच दिन तक नित्य षोडशी ध्यान कर 75 बार उपरोक्त मंत्र का जप करें। प्रत्येक दिन जप समाप्ति के बाद दीपक को हटा कर अलग स्थान में रख दें। पांच दिन पश्चात् यंत्र तथा सभी दीपकों को एकत्र कर जल में प्रवाहित कर दें।

16. पूर्ण पौरुष, बल, आकर्षक देह यष्टि, बुद्धि और तीव्रता ही युवकों का सौन्दर्य होता है। यह पूर्ण पुरुषोचित सौन्दर्य आप भी प्राप्त कर सकते है भगवती षोडशी के साधक बनकर।

लाल रंग के वस्त्र पर चावल से चतुर्भुज बनाएं, फिर मध्य में '**षोडशी यंत्र**' को स्थापित करें। यंत्र के चारों किनारे पर एक-एक गुलाब का पुष्प स्थापित करें। भगवती षोडशी का ध्यान कर। '**पीली हकीक माला**' से उपरोक्त मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप करें। मंत्र जप समाप्त कर यंत्र तथा माला को जल में प्रवाहित कर दें।

17. सम्पूर्ण आन्तरिक और बाह्य सौन्दर्य की प्राप्ति भी साधक के जीवन में आवश्यक है। आन्तरिक सौन्दर्य से ही व्यक्ति का हृदय स्वच्छ और निर्मल होता है, जो कि साधना सिद्धि के लिए आवश्यक है। साधक श्रद्धा और विश्वास के साथ यदि भगवती षोडशी का यह प्रयोग सम्पन्न करता है, तो वह अनेक प्रकार से लाभान्वित होता है। साधिकाओं के लिए

तो यह प्रयोग अत्यन्त श्रेष्ठ है, इसे सम्पन्न करने के बाद उनमें उत्साह, प्रेम, वात्सल्य तथा स्त्रियोचित गुणों का पूर्ण विकास होता है तथा यह सौन्दर्य दीर्घकालीन होता है। शुक्रवार से यह प्रयोग आरम्भ करें। लाल रंग के वस्त्र पर पुष्प का आसन बनाकर '**षोडशी यंत्र**' को स्थापित करें। नित्य 21 बार उपरोक्त मंत्र का जप पांच दिन तक करें। प्रत्येक मंत्र जप के साथ एक-एक लौंग चढ़ाते जाएं पाचवें दिन यंत्र तथा लौंग को वस्त्र में बांध कर नदी में प्रवाहित करें।

न्यौछावर 150/-

✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣

भुवनेश्वरी

ध्यान

उद्यद् दिनद्युति मिन्दु किरीटां तुंग कुचां नयनत्रययुक्तां।
स्मेर मुखीं वरदांकुशपाशां भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम॥

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ॐ ॥

18. साधकों के लिए साधनात्क उन्नति के साथ-साथ सामाजिक उन्नति भी अत्यन्त आवश्यक है। उनके जीवन में सामाजिक पूर्णता भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी आध्यात्मिक पूर्णता। अतः समाज में यश, सम्मान प्राप्त कर उसे स्थिर बनाये रखने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करें। साधक प्रातः ही स्नानादि से निवृत्त होकर पीली धोती धारण करें। पूजा स्थान को स्वच्छ कर कुंकुम से त्रिदल कमल बना कर उस पर '**भुवनेश्वरी यंत्र**' स्थापित कर भुवनेश्वरी का ध्यान करें। फिर यंत्र को देखते हुए 20 मिनट तक उपरोक्त मंत्र का जप करें। यह प्रयोग तीन दिन का है, प्रयोग समाप्त होने के पश्चात् यंत्र जल में प्रवाहित कर दें।

19. यदि आप अपने मित्रों के मध्य यश, सम्मान और श्रेष्ठता पाना चाहते हैं, तो '**भुवनेश्वरी यंत्र**' को पीले रंग के वस्त्र में उपरोक्त मंत्र लिखकर बांध दें, फिर उसके समक्ष भुवनेश्वरी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 75 बार जप सात दिन नित्य करें। सात दिन पश्चात् वस्त्र में बंधे हुए यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

20. यदि सन्तान आपकी उपेक्षा कर रही हो या आपका असम्मान करती हो, तो सन्तान में सुबुद्धि तथा उससे यश व सम्मान प्राप्ति के लिएं '**भुवनेश्वरी यंत्र**' के समक्ष ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 61 बार जप करें। ग्यारह दिन पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

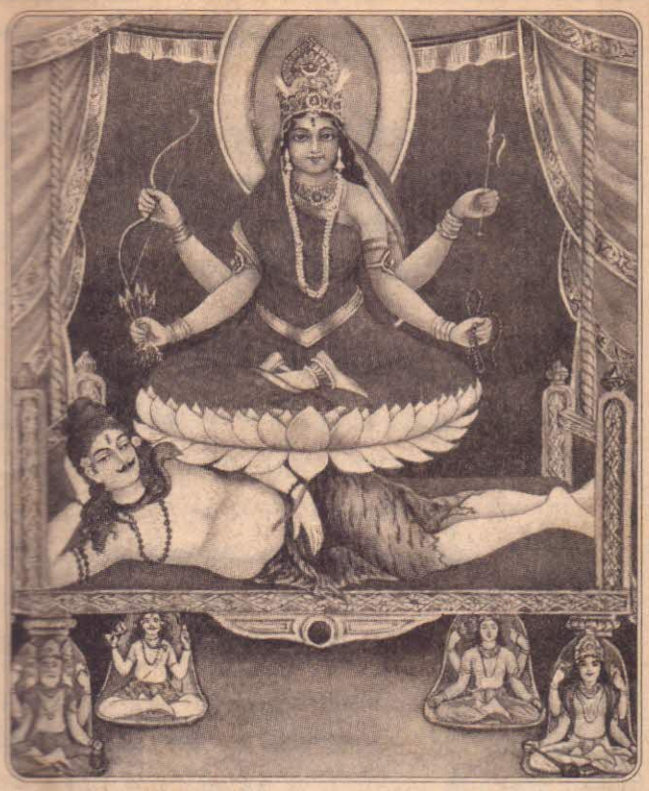

21. पत्नी आपका सम्मान नहीं कर रही हो, निरन्तर आपसे कलह के लिए प्रयत्नशली रहती हो, घर में अशान्ति बना कर रखती हो, तो आप यह प्रयोग करके अपनी पत्नी की मानसिकता में परिवर्तन ला सकते हैं। सफेद वस्त्र पर कुंकुम से अपनी पत्नी का नाम लिखें और उस पर '**भुवनेश्वरी यंत्र**' को स्थापित करें। यंत्र का पूजन कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करें। ध्यान के पश्चात् उपरोक्त मंत्र का 65 बार जप करें। यह प्रयोग दो दिन का ही है। प्रयोग समाप्त होने पर यंत्र को उसी कपड़े में बांध कर जल में प्रवाहित कर दें।

22. पति यदि पत्नी का निरन्तर अपमान करता रहता है या पत्नी के कार्यों में निरन्तर गलतियां निकालता है, उससे अकारण विवाद करता है तथा पत्नी को हर समय सशंकित निगाहों से देखता है, तो पति को अपने अनुकूल बनाने के लिए निम्न प्रयोग करें -

लाल वस्त्र पर हल्दी को घोल कर उसे एक वृत्त बनाएं, वृत्त के मध्य में अपने पत्ति का नाम लिखें, वृत्त के चारों तरफ एक-एक सुपारी स्थापित कर दें, '**भुवनेश्वरी यंत्र**' को पति के नाम के ऊपर स्थापित करें। भुवनेश्वरी ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप पांच दिन तक नित्य करें। प्रयोग समाप्ति पर यंत्र तथा सुपारी को होलिकाग्नि में डाल दें।

न्यौछावर - 150/-

✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣

छिन्नमस्ता

ध्यान

छिन्नमस्तां महाविद्यामक्षरात्म स्वरूपिणीं
विद्युदग्निसमुद्भूतां प्रसुप्तभुजगीतनुम्।
कुण्डलीरूप संयुक्तां नानातत्त्वसमन्वितां।
त्रिवलीवलयोपेतां नाना स्थानकृतां शुभाम्॥

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा ॥

23. किसी भी प्रकार की साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए छिन्नमस्ता देवी का यह प्रयोग सम्पन्न करें। छिन्नमस्ता का ध्यान कर '**छिन्नमस्ता यंत्र**' के समक्ष 51 बार मंत्र जप करें, फिर 21 बिल्व पत्र तथा हवन सामग्री के साथ उपरोक्त मंत्र की 21 आहुतियां अग्नि में डालें। साधनाओं में सफलता प्राप्त होगी।

24. धन के निरन्तर आगमन के स्रोत के लिए '**छिन्नमस्ता यंत्र**' को स्थापित करें, यंत्र का पूजन कर ध्यान करें। ध्यान के पश्चात् शहद तथा सफेद पुष्प से 21 आहुतियां अग्नि में दें। ऐसा करने से धन के आगमन का स्रोत खुलता है। यंत्र को सात दिन बाद नदी में प्रवाहित कर दें।

25. विद्या की कामना रखने वाले साधक '**छिन्नमस्ता यंत्र**' का पूजन कर ध्यान करें। फिर उपरोक्त मंत्र का 21 बार जप करें। नित्य यंत्र को अपने आज्ञा चक्र से लगाकर मंत्र का 21 बार जप करें। यह प्रयोग ग्यारह दिन तक करें। ग्यारह दिन पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें। फिर साधक विद्याभ्यास करें, उसे सफलता अवश्य मिलेगी।

26. समस्त बाधाओं को समाप्त करने के लिए साधक '**छिन्नमस्ता यंत्र**' को मिट्टी के पात्र में रखें, उसमें पांच काली मिर्च के दाने तथा पांच लौंग रखें, उस पर सिन्दूर डालें। फिर छिन्नमस्ता का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का तीन दिन तक 41 बार जप करें प्रयोग काल में धरती पर ही सोयें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् पात्र को लाल रंग में वस्त्र में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दे।

27. गृहस्थ व्यक्ति को अनेक कामनाएं ऐसी होती है, जिनकी पूर्ति करना उसके लिए सहज नहीं हो पाता है और उसे अपूर्ण इच्छाओं के साथ ही जीवन व्यतीत करना पड़ता है। ऐसी इच्छाओं की पूर्ति के लिए निम्न प्रयोग करें -

'**छिन्नमस्ता यंत्र**' को शहद लगा कर रख दें। फिर भगवती छिन्नमस्ता का ध्यान करते हुए उपरोक्त मंत्र का पांच दिन तक नित्य 31 बार जप करें। उस जल को तुलसी के पौधे में डाल दें, ऐसा नित्य करें। प्रयोग समाप्त होने के पश्चात् यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर - 150/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

त्रिपुर भैरवी

ध्यान

बालसूर्य प्रभां देवीं जवाकुसुमसन्निभां
मुण्डमालामयीं रम्यां बालसूर्यनिभां शुकाम्।
सुवर्ण कलशाकार पीनोन्नत पयोधराम्
पाशांकुशौ पुस्तकं च तथा च जपमालिकां॥

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं क्रीं फट्॥

28. यदि आप व्यापारी है और किसी व्यापारिक कार्य को सम्पन्न करना चाहते हैं, परन्तु वह कार्य सफल नहीं हो पा रहा है और आप इस कारण तनावग्रस्त है, तो अपने तनाव को अब समाप्त कर दीजिये।

किसी पात्र में कुंकुम से गोल घेरा बनाकर उसमें उपरोक्त मंत्र को लिखें तथा ऊपर '**त्रिपुर भैरवी यंत्र**' को स्थापित करें। यंत्र के समक्ष दीपक लगायें तथा मंत्र का पूजन करें। फिर त्रिपुर भैरवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप पांच दिन तक नित्य करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को अपने दाहिने हाथ में लेकर अपनी कामना बोलते नदी या सरोवर में प्रवाहित कर दें।

29. प्रमोशन पाना, नौकरी में अच्छे कार्यों के लिए सम्मान पाना एक नौकरी करने वाले व्यक्ति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यदि आपका प्रमोशन किसी कारणवश रुका हुआ है, तो आप एक कागज में अपनी इच्छा लिखकर उसमें '**त्रिपुर भैरवी यंत्र**' को बांध दें, फिर तिल तथा घी से त्रिपुर भैरवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र की 75 आहुतियां अग्नि में दें। जप समाप्ति के पश्चात् यंत्र को कागज सहित यज्ञ कुण्ड में डाल दें।

30. किसी भी प्रकार की कामना की पूर्ति के लिए साधक रात्रि में इस प्रयोग को सम्पन्न करें। लाल रंग के वस्त्र पर केसर से स्वास्तिक बनाएं, उस पर '**त्रिपुर भैरवी यंत्र**' का स्थापन करें। इच्छित कामना को बोल कर त्रिपुर भैरवी का ध्यान करें। उपरोक्त मंत्र का सात दिन तक नित्य 31 बार जप करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

31. आप जिससे विवाह करना चाहते है यदि उससे विवाह

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

करना सम्भव नहीं हो पा रहा है, तो मनोनुकूल जीवन साथी प्राप्ति के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करें। **'त्रिपुर भैरवी यंत्र'** को पीले रंग से रंगे हुए चावल की ढेरी बनाकर स्थापित कर यंत्र पर केसर से अपना नाम लिखें। त्रिपुर भैरवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का तीन दिन तक नित्य 65 बार जप करें। प्रयोग समाप्ति के दिन यंत्र तथा चावलों को नदी में प्रवाहित कर दें।

32. यदि आपका विवाह बार-बार निश्चित होकर भी टूट रहा हो या आपके विवाह में निरन्तर बाधाएं आ रही हो, तो सफेद वस्त्र पर कुंकुम से स्वास्तिक बनाएं, स्वास्तिक पर यंत्र को स्थापित करें। भगवती भैरवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का नौ दिन तक नित्य 31 बार जप करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

33. आप अपनी संतान के विवाह के लिए प्रयत्नशील है, परन्तु उसके विवाह में बाधाएं आ रही है, तो उन बाधाओं को समाप्त करने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करें -

लाल रंग के वस्त्र पर केसर से चार बिन्दियां लगायें तथा उस पर **'त्रिपुर भैरवी यंत्र'** को स्थापित करें। त्रिपुर भैरवी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का होली के दिन ही 101 बार जपकरते हुए चावल के दाने चढ़ाएं। मंत्र जप समाप्ति के पश्चात् चावल के दानों को चिड़ियों को खिला दें तथा यंत्र को मन्दिर में चढ़ा दें।

न्यौछावर - 150/-

✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤

धूमावती

ध्यान

विवर्ण चंचला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा,
विमुक्त कुन्तला रुद्रा विधवा विरलद्विजा।
काकध्वज रथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा,
शूर्पहस्तातिरक्ताक्षी धूतहस्ता वरान्विता।
प्रबुद्ध घोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा
क्षुत् पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहप्रिया॥

मंत्र

॥ धूं धूं धूमावती ठः ठः ॥

34. कोई व्यक्ति आपको अत्यधिक परेशान कर रहा है, तो उस उसके स्थान से हटाने के लिए यह उच्चाटन प्रयोग करना चाहिए। हल्दी या केसर से उस व्यक्ति का नाम **'धूमावती यंत्र'** पर लिखें। यंत्र दोनों हाथ में लेकर भगवती धूमावती का ध्यान करें तथा सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

अब परम पूज्य गुरुदेव

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

की ओजस्वी तेजस्वी दिव्य वाणी ऑडियो - सीडी में उपलब्ध

यह प्रत्येक प्रवचन अपने आप में ही ज्ञान का सागर है। नित्य प्रवचन सुनें, अपने घर परिवार को चेतना युक्त बनायें

- दुर्लभोपनिषद
- मैं गर्भस्थ बालक की चेतना देता हू भाग १-२
- गुरु गीता
- संगीत सरिता
- गुरु गंगा
- प्रातः कालीन वेद ध्वनि
- संध्या आरती
- प्रीत पायल
- बाजे कण-कण में
- गुरुनाम रस पीजे
- जब याद तुम्हारी आई
- ध्यान धारणा और समाधि
- दैनिक साधना विधि
- गुरु गति पार लगावै
- गुरु बिन ज्ञान कहां से पाऊ
- गुरु बिन गतिर्नास्ति
- शक्तिपात (पूर्वजन्म दर्शन)
- गुरु हमारी आत्मा
- गुरु पादुका पूजन
- विशेष गुरु पूजन
- निखिलेश्वरानन्द स्तवन

न्यौछावर प्रति ऑडियो - सीडी 40/-

35. कोई शत्रु आपके स्वजन तथा आपके मध्य में कलह करवाने का प्रयत्न कर रहा हो या आपके और आपके स्वजनों के मध्य द्वेष उत्पन्न करने का प्रयास कर रहा हो, तो इसकी समाप्ति के लिए यह प्रयोग करें। एक कागज पर काजल से त्रिशूल बनाकर उस पर '**धूमावती यंत्र**' को स्थापित करें। धूमावती का ध्यान कर, उपरोक्त मंत्र का 75 बार जप कर यंत्र को कागज में मौली से बांधकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।

36. टोने-टोटके यदि आप निरन्तर होते रहते हैं, तो उसके प्रभाव की समाप्ति के लिए आप एक ताम्रपात्र में कुंकुम से *'धूं'* लिखें, उस पर '**धूमावती यंत्र**' स्थापित करें। धूमावती का ध्यान कर यंत्र पर जल चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप करें, जप समाप्ति पर जल को किसी पौधे की जड़ में डाल दें। यह प्रयोग तीन दिन तक करें। प्रयोग समाप्ति के दिन यंत्र के साथ पांच लाल मिर्च तथा थोड़ा सा नमक रख कर किसी काग.ज में बांध कर निर्जन स्थान पर फेंक दें।

37. घर के सभी सदस्य को ऊपर प्रकोप से सुरक्षा प्रदान करने के लिए '**धूमावती यंत्र**' को लाल रंग के वस्त्र पर स्थापित कर भगवती धूमावती का ध्यान करें। उपरोक्त मंत्र की तीन दिन तक नित्य 71 आहुतियां घी तथा काले तिल से दें। तीन दिन पश्चात् यंत्र को नदी के किनारे गड्ढा खोद कर दबा दें।

38. कई बार घर के सदस्यों को परेशान करने के लिए शत्रु या दुष्ट प्रवृत्ति के लोग घर के शिशुओं पर तांत्रिक प्रयोग करवा देते हैं, उन छोटे-छोटे शिशुओं की सुरक्षा के लिए '**धूमावती यंत्र**' के सामने भगवती धूमावती का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 65 बार उच्चारण कर वह यंत्र शिशु के बिस्तर के नीचे सिरहाने रख दें। पांच दिन बाद शिशु के सिर पर यंत्र को तीन बार घुमाते हुए घर से दूर दक्षिण दिशा में फेंक दें।

न्यौछावर 240/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

बगलामुखी

ध्यान

वादी मूकति, रङ्कति क्षिति-पतिर्वैश्वानरः शीतति,
क्रोधी शान्तति, दुर्जनः सुजनति, क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्वी खर्वति, सर्व-विच्च जड़ति त्वद्-यन्त्रणा यन्त्रितः,
श्रीनित्ये! बगलामुखि! प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः॥

मंत्र

॥ ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां ह्लीं वाचं मुख बन्धय ह्लीं जिह्वां कीलय मारय त्रोटय ह्लीं फट्॥

39. यदि आप स्वयं के व्यक्तित्व में इतनी अधिक तीव्रता और प्रखरता प्राप्त कर लें, कि शत्रु आपका विरोध नहीं कर सकें, तो अपने व्यक्तित्व में प्रखरता और तेजस्विता लाने के लिए पीले रंग के वस्त्र पर कुंकुम से षट्कोण बना कर '**बगलामुखी यंत्र**' को स्थापित करें। षट्कोण के प्रत्येक कोण पर एक पीला पुष्प और अक्षत रखें। बगलामुखी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 75 बार जप तीन दिन तक नित्य करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें। फिर 21 दिन तक नित्य ग्यारह बार मंत्र जप करते रहें।

40. यदि शत्रु आपके विरोध में बोलता रहता है और आप जिस कार्य को सम्पन्न करना चाहते हैं, उस कार्य के सम्पादन के बाधाएं उत्पन्न करता है, तो शत्रु को स्तम्भित करने के लिए पीले रंग के वस्त्र पर कुंकुम से त्रिभुज बनाएं तथा त्रिभुज के मध्य में उस शत्रु का नाम लिखें, उसके नाम के ऊपर '**बगलामुखी यंत्र**' को स्थापित करें। यंत्र पर अपना दाहिना हाथ रखते हुए उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप करें। उसी दिन यंत्र को उसी वस्त्र में बांध कर पीपल के वृक्ष पर लटका दें या किसी नदी में प्रवाहित करें।

41. शत्रु के व्यापार को बांधने के लिए पीले वस्त्र पर '**बगलामुखी यंत्र**' को स्थापित कर दें। पीले पुष्प तथा घी से यंत्र का पूजन कर बगलामुखी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र की 101 आहुतियां दें प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

42. शत्रु ने तांत्रिक प्रयोग कर आपके व्यापार को बांध दिया हो, तो उसके प्रयोग को निष्फल करने के लिए - रात्रि के समय पीले रंग का वस्त्र बिछाकर '**बगलामुखी यंत्र**' को स्थापित करें। यंत्र पर हल्दी में रंगे हुए चावल चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का तीन दिन तक 81 बार उच्चारण करें। तीन दिन पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

43. मुकदमे में सफलता प्राप्त करने के लिए तथा शत्रु पक्ष को बल विहीन करने के लिए कागज पर हल्दी में उपरोक्त मंत्र को लिख कर '**बगलामुखी यंत्र**' को उसी कागज में मौली से बांध दें, बगलामुखी का ध्यान कर, उपरोक्त मंत्र का 35 बार जप करें। यह प्रयोग पांच दिन तक करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को दुर्गा मन्दिर में चढ़ा दें।

44. शत्रु पक्ष की बुद्धि को स्तम्भित करने के लिए **'बगलामुखी यंत्र'** पर काजल से शत्रु का नाम लिख कर यंत्र को दाहिने हाथ में रख कर बगलामुखी का ध्यान करें। उपरोक्त मंत्र का 41 बार जप कर जल में प्रवाहित कर दें। शत्रु आपके विरुद्ध कुछ नहीं कर पायेगा।

न्यौछावार - 240/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

मातंगी

ध्यान

श्यामारूप धरां देवीं मातंगी परमेश्वरीं।
नेत्रत्रययुतां दिव्यां प्रभजे वेदसंस्तुताम॥

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा॥

45. यदि आपकी सन्तान का पढ़ाई में मन नहीं लगता है, तो **'मातंगी यंत्र'** का पूजन करें। भगवती मातंगी का ध्यान कर यंत्र के समक्ष 51 बार उपरोक्त मंत्र जप करें। ऐसा ग्यारह दिनों तक नित्य करें। ग्यारह दिन के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

46. आप किसी विशेष क्षेत्र में सर्वोच्चता प्राप्त करना चाहते है, तो सफेद वस्त्र पर केसर से स्वास्तिक बनाकर उस पर **'मातंगी यंत्र'** स्थापित करें, मातंगी ध्यान कर यंत्र का 51 बार चावल के दाने चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का जप करें। मंत्र जप समाप्ति के पश्चात् यंत्र तथा चावल के दानों को किसी जल सरोवर या नदी में प्रवाहित कर दें।

47. अपने गर्भस्थ शिशु को आप पूर्णता प्रदान करना चाहते है तो सोमवार को प्रातः ही उठकर स्नानादि कर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से स्वास्तिक बना कर **'मातंगी यंत्र'** को स्थापित करें। यंत्र का पूजन सफेद पुष्प, अक्षत तथा केसर से करें। फिर उपरोक्त मंत्र का 21 बार जप करें। यह प्रयोग सात दिन का है, सात दिन के पश्चात् यंत्र का अपने पूजा स्थान में रख दें।

48. आप जिस क्षेत्र में है, उस क्षेत्र में आप पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, तो भगवती मातंगी का यह प्रयोग श्रेष्ठ है। **'मातंगी यंत्र'** को मातंगी का ध्यान कर अपने दोनों हाथ में लें। यंत्र के हृदय को स्पर्श करें। खड़े होकर उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप पांच दिन तक नित्य करें। पांचवे दिन यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

49. आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते है, पर बाधाएं

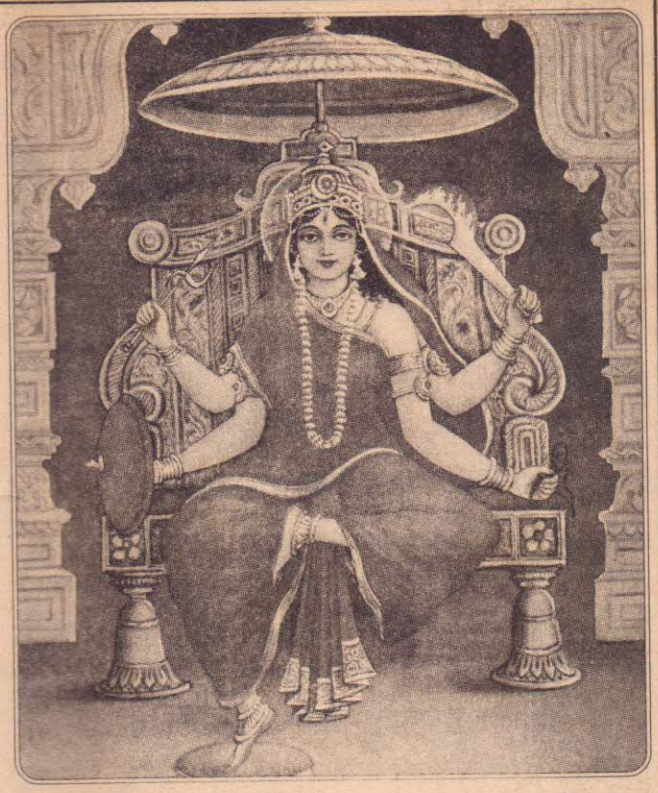

उपस्थित हो रही हैं, तो उनकी समाप्ति के लिए **'मातंगी यंत्र'** को पांच सफेद पुष्प के साथ लाल रंग के वस्त्र में बांधे। मातंगी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 51 बार उच्चारण करें, अपनी कामना बोल कर वस्त्र सहित यंत्र को घर से दूर किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें।

न्यौछावर - 150/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

कमला

ध्यान

श्वेताम्बर धरे देवि नानालंकार भूषिते।
जगत् स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोऽस्तुते॥

मंत्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसौः जगत्प्रसूत्यै नमः॥

50. आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए **'कमला यंत्र'** को लाल पुष्प पर स्थापित करें, भगवती कमला का ध्यान करते हुए पांच दिन तक नित्य उपरोक्त मंत्र का 51 बार उच्चारण करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

51. यदि आप ऋण के भार से दबे हुए है और उससे निकलने का कोई उपाय नहीं दिख रहा है, तो ऋण से मुक्ति पाने के लिए किसी पात्र में केसर से *'श्रीं'* लिख कर उस पर **'कमला यंत्र'** को स्थापित करें। यंत्र पर कुंकुम से रंगे हुए

चावल के 101 दाने चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का जप करें। यह प्रयोग तीन दिन तक करें। प्रयोग समाप्ति पर यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

52. निरन्तर धन आगमन के स्रोत के लिए '**कमला यंत्र**' को एक पात्र में पुष्प पर स्थापित करें, कमला का ध्यान कर मधु तथा घृत से उपरोक्त मंत्र की 101 आहुतियां प्रदान करें, यह प्रयोग बुधवार को करें, फिर यंत्र जल में अर्पण कर दें।

53. घर में धन-धान्य स्थिर रहे, इस हेतु '**कमला यंत्र**' को बुधवार को पूजा स्थान में स्थापित कर दें, फिर यंत्र के समक्ष 21 बार उपरोक्त मंत्र का जप ग्यारह दिन तक नित्य करें। प्रयोग समाप्ति पर यंत्र को किसी मन्दिर में चढ़ा दें।

54. जीवन में सभी प्रकार से सुखों का लाभ उठा सकें, इसके लिए '**कमला यंत्र**' पर केसर से अपना नाम लिखकर यंत्र को दाहिने हाथ में लें। यंत्र को देखते हुए कमला का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 61 बार उच्चारण करें। यह प्रयोग चार दिन तक करें। चार दिन के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

55. आप अपने जीवन में यश, मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त कर पूर्ण भौतिक सम्पन्नता प्राप्त कर सकते हैं, इस प्रयोग के द्वारा।

सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से अष्टदल कमल बनाएं। कमल के मध्य में '**कमला यंत्र**' को स्थापित कर कमला का उपरोक्त ध्यान करें। उपरोक्त मंत्र का सात दिन तक नित्य 91 बार जप करें। प्रयोग की समाप्ति के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर 240/-

✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣

वास्तु देवता

मंत्र

॥ॐ नमो वैश्वानर वास्तु रूपाय भूपति त्वं मे देहि दापय स्वाहा॥

56. अपने भवन की सुरक्षा के लिए '**वास्तु यंत्र**' को अपने आंगन में उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप कर दबा दें। यदि घर में संभव न हो, तो घर से बाहर जहां पौधे लगे हों, वहां दबा दें। ऐसा करने से घर की सुरक्षा होती है।

57. गृहदोष के कारण या स्थान दोष के कारण उन्नति नहीं हो रही हो, तो इस दोष की समाप्ति के लिए '**वास्तु यंत्र**' को ताम्रपात्र में स्थापित करें। उपरोक्त मंत्र का 61 बार उच्चारण करें। प्रयोग समाप्त होने पर यंत्र को किसी वस्त्र में लपेट कर नदी में प्रवाहित कर दें।

58. आपके घर से कलह, दुःख दारिद्र्य की समाप्ति हो, इसके लिए '**वास्तु यंत्र**' पर केसर से घर के सभी सदस्यों का नाम लिख कर उपरोक्त मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करें। यह प्रयोग पांच दिन तक करें। प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को किसी चौराहे पर रख दें।

59. व्यापार स्थल की सुरक्षा के लिए, जिससे कि कोई शत्रु आपके व्यापार स्थल को हानि न पहुंचा सके, '**वास्तु यंत्र**' का पूजन कर व्यापार स्थल पर स्थापित कर दें, नित्य यंत्र के समक्ष सात दिन तक उपरोक्त मंत्र का 31 बार उच्चारण कर लें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

60. यदि व्यापार स्थल के दोष के कारण व्यापार में वृद्धि नहीं हो रही है, तो 25 बार मंत्रोच्चारण कर '**वास्तु यंत्र**' को लाल रंग के वस्त्र में बांध कर दुकान के बाहर लटका दें, ग्यारह दिन बाद यंत्र को किसी निर्जन स्थान पर डाल दें। व्यापार में धीरे-धीरे वृद्धि होने लगेगी।

61. आप जिस स्थान पर अपना व्यापार आरम्भ करना चाहते हैं, या भवन निर्माण करना चाहते हैं, वह स्थान आपको पूर्ण रूप से अनुकूलता प्रदान करे, इसके लिए आप '**वास्तु यंत्र**' को पीले रंग के वस्त्र पर स्थापित कर उसका पूजन कर उपरोक्त मंत्र का 75 बार जप कर नींव में ही दबा दें। भवन या व्यापार स्थल आपके अनुकूल बना रहेगा।

न्यौछावर - 240/-

✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣

दीक्षा

व्यक्ति को पूर्णत्व प्रदान करने की दुर्लभ प्रक्रिया ही दीक्षा है। दीक्षाओं के माध्यम से ही शिष्य की कृतकृत्यता प्राप्त होती है। सद्गुरु की करुणा तथा शिष्य की कृतज्ञता का वह पावन सम्मिलन दीक्षा की उदात्ततम परिणति है। जगदाता कृष्ण को भी दीक्षाओं से संवलित गुरु की कलाओं ने महानतम बना दिया, सांदीपन की दीक्षाओं ने उन्हें पुरुषोत्तम बना दिया, जगद्गुरु बना दिया।

श्रद्धा और समर्पण दीक्षाओं के मूलभूत आधार तत्त्व हैं, इनके द्वारा ही गुरु से ज्ञानामृत दोहन से आप्लावित हो कर साधक अनन्त सिद्धियों का स्वतः स्वामी बनता ही है। निश्चय ही वह व्यक्ति सौभाग्यशाली एवं धन्य होता है, जिसके जीवन में सद्गुरु दीक्षाओं के लिए ऐसा क्षण उपस्थित कर दें।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत हैं, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है – जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99-9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक		श्रेष्ट समय
रविवार (मार्च 6, 13, 20, 27) (अप्रैल 3, 10)	दिन रात	06:00 से 10:00 तक 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 10:00 तक
सोमवार (मार्च 7, 14, 21, 28) (अप्रैल 4)	दिन रात	06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (मार्च 1, 8, 15, 22, 29) (अप्रैल 5)	दिन रात	06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (मार्च 2, 9, 16, 23, 30) (अप्रैल 6)	दिन रात	07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (मार्च 3, 10, 17, 24, 31) (अप्रैल 7)	दिन रात	06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (मार्च 4, 11, 18, 25) (अप्रैल 1, 8)	दिन रात	06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (मार्च 5, 12, 19, 26) (अप्रैल 2, 9)	दिन रात	10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

नक्षत्रों की वाणी

मेष -

पूर्व में चली रही महत्वपूर्ण गतिविधियों में कठोर परिश्रम से ही सफलताओं के आसार है। महत्वपूर्ण एवं भविष्य योजनाओं के कार्यों को इस माह अवश्य पूर्ण कर लें। नौकरीपेशा लोग व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें, समय विशेष अनुकूल है अतः समय का उपयोग करें। बेरोजगारों तथा विद्यार्थीयों को उनकी मेहनत का उचित फल अवश्य प्राप्त होगा। इस माह यात्राओं का योग है मनोवांछित लाभ एवं कार्य सिद्धि के लिए आपको विशेष कार्य बल की आवश्यकता है। इस माह अनुकूलता हेतु **'कालसिद्धि साधना'** (जनवरी 2005) सम्पन्न करें। तिथियां 2, 3, 7, 10, 12, 15, 19, 20, 22, 23, 27 हैं।

वृष-

अनेक नवीन कार्यों के सुअवसर आपके भाग्योदय करवाने के लिए आतुर हो रहे है जो आपके भाग्योदय में पूर्ण सहायक सिद्ध होंगे। इस माह आपका सम्पर्क अनेक नये व्यक्तियों से होगा। नये मित्रों के साथ ही साथ पुराने मित्रों तथा परिवार जनों से भी विशेष सहयोग प्राप्त होगा। इसके बावजूद भी आप विशेष निर्णय बहुत सोच समझकर ही लें। इस माह किये गये कार्य आपके भविष्य पथ का निर्धारण करेंगे। व्यर्थ के कार्यों में अपना समय व्यर्थ न करें। इस माह **'पारद शिवलिंग साधना'** (जनवरी 2005) अवश्य करें। तिथियां - 1, 4, 5, 6, 9, 14, 16, 21, 24, 26, 29 हैं।

मिथुन-

धीरे-धीरे हर कार्य बनते हुए नजर आयेंगे। अपनी क्षमता से अधिक कार्य नहीं करें तथा दूसरों के कार्यों की अपेक्षा अपने स्वयं के कार्यों को पूर्ण करने पर ध्यान दें। जल्दबाजी में कोई भी निर्णय न लें। जल्दबाजी में लिया गया निर्णय हानिप्रद सिद्ध हो सकता है। इस माह अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। परिवार में क्लेश होने की संभावना है अतः उससे बचने हेतु आप समझौते से कार्य चलाएं। इस माह आप **'पारद गणपति साधना'** (जनवरी 2005) सम्पन्न करें। तिथियां - 3, 7, 8, 9, 11, 17, 18, 22, 23, 26, 27 हैं।

कर्क-

आप अपने भविष्य निर्माण की ओर विशेष ध्यान दें। परिवर्तन संसार का नियम है, आपके विचारों में नवीनता आयेगी। जैसे-जैसे आपके विचारों में नवीनता आयेगी, आपके जीवन में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। इस माह आपको शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त होगी। समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी, संतान पक्ष से विशेष अनुकूलता प्राप्त होगी। इसके बावजूद आपके मन में अन्तर्द्वन्द जारी रहेगा उस पर विजय प्राप्त करने हेतु इस माह आप **'संकट निवारण साधना'** (नव. 2004) करें। तिथियां - 1, 5, 6, 9, 11, 14, 17, 18, 19, 28 हैं।

सिंह-

यश, मान प्रतिष्ठा, कार्य सिद्धि से भरा यह माह आपके लिये विजय माला लिये खड़ा है। फिर भी हर कार्य में श्रेष्ठ लाभ के लिए सुलह-समझौता करके ही चलते रहने में समझदारी है। फिर भी समय आपके पूर्ण अनुकूल है। पारिवारिक विवादों से बचकर अपने कार्य पर ध्यान दें। साझेदारी का कार्य हो तो अपने साझेदार से संभलकर रहे। महत्वपूर्ण निर्णयों को यथासंभव वर्तमान में निपटा लें। इस माह **'धनवर्षिणी साधना'** (अक्टूबर 2004) करें। तिथियां - 2, 5, 9, 10, 11, 14, 15, 16, 19, 29, 30, हैं।

कन्या-

आपकी जीवन को लेकर जो कल्पना है वो अवश्य पूर्ण होगी। आपको अपने मित्रों स्वजनों से सहयोग प्राप्त होगा। आपकी सफलता से समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस माह आपके यश, सम्मान, आय, लाभ, के विशेष योग बन रहे है। अतः अपना सारा समय अपनी प्रगति पर लगावें। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें। सफलता शत्रु पक्ष में भी वृद्धि करेगी अतः अपने शत्रुओं से सावधान रहे। विद्यार्थीयों को भी अपने परिश्रम का पूरा लाभ प्राप्त होगा। विशेष अनुकूलता हेतु इस माह आप **'भाग्योदय कवच साधना'** (जनवरी 2005) करें। तिथियां - 1, 5, 9, 10, 11, 19, 21, 24, 27, 30 हैं।

सर्वार्थ, अमृत, त्रिपुष्कर, सिद्धि योग

सिद्ध योग 3, 8, 10, 11, 19 मार्च/6, 23 अप्रैल ☆ सर्वार्थ सिद्ध योग 3, 16, 22 मार्च /13, 27 अप्रैल ☆ अमृत सिद्ध योग 3 मार्च / 27 अप्रैल ☆ द्विपुष्कर योग 26, 30 अप्रैल ☆ त्रिपुष्कर योग 27 मार्च ☆ रवि पुष्य योग 17 अप्रैल ☆

इस मास ज्योतिष की दृष्टि से : देश राजनीति का भविष्य बड़ा ही दुर्भाग्यपूर्ण है। शासक देश की समस्याओं का ध्यान न रखकर जोड़-तोड़, आरोप प्रत्यारोप में ही व्यस्त रहेंगे। इससे अस्थिरता का माहौल उत्पन्न होगा, केन्द्र में दो बड़े नेता बदल सकते है। मंहगाई में थोड़ी वृद्धि होगी और जल समस्या बढ़ेगी, जन आंदोलन इत्यादि तेज होंगे। अराजकता की स्थिति बढ़ेगी।

तुला –

आप में बहुत योग्यताएं है, आपका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली है। आप अपनी वाणी पर विशेष ध्यान दें। आपके व्यवसायिक कार्यों में बाधाऐं होते हुए भी आप उस पर सफलता प्राप्त कर ही लेंगे। आप की विशेष कार्य सम्बन्धी यात्रा होने की संभावना है, जो भविष्य में आपके लिये विशेष लाभप्रद सिद्ध होगी। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। परिवार में मांगलिक आयोजन होगा तथा संतान पक्ष से शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। इस माह आप सफलता हेतु '**हनुमान साधना**' (दिसम्बर 2004) अवश्य सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 4, 7, 8, 9, 11, 15, 17, 22, 24, 28, 30 हैं।

वृश्चिक –

आप आने वाले समय में होने वाले हर प्रकार के वाद-विवाद से बचें। मन में असंतोष होगा। फिर भी पूर्ण हिम्मत एवं साहस से जूटे रहें, मित्रों के सहयोग से कार्य सिद्धि, मानसिक प्रसन्नता और प्रभोत्सव बना रहेगा। आनंददायक शुभ समाचार मिलने से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। रूके हुए कार्य को गति मिलेगी, नवीन कार्यों में पूर्ण विस्तार का योग बन रहा हैं। व्यर्थ का व्यय होने से आर्थिक अभाव होने का योग है। अतः व्यर्थ की चर्चाओं से बचें। इस माह आप '**स्फटिक शिवलिंग साधना**' (फरवरी 2005) अवश्य सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियां - 2, 7, 10, 14, 15, 16, 19, 20, 21, 23, 29, 31 हैं।

धनु –

जिस समय का आप इंतजार कर रहे थे वह आपके भाग्योदय के लिए दस्तक दे रहा है। नवीन वस्तु प्राप्त होने का योग बन रहा है, पूर्ण सुख योग है। हो सकता है आपको इस माह नवीन भू-भवन, वाहन सम्बन्धी अनुकूलता हो। आपकी यात्रा आपको विशेष फलप्रद रहेगी, परन्तु यात्राओं में सावधानी रखें। अपने इष्ट की कृपा से शत्रुओं पर पूर्ण रूप से हावी होंगे और निश्चित ही उन पर विजय प्राप्त करेंगें। पारिवारिक मामले में विशेष ध्यान दें। इस माह अनुकूलता हेतु '**त्रिपुर भैरवी साधना**' (सितम्बर 2004) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 1, 5, 8, 10, 11, 14, 19, 21, 24, 29, 31 हैं।

मकर –

आप इस अच्छे समय का पूर्णवत लाभ उठायें। आने वाले समय में भी आपको नये-नये सुअवसर प्राप्त होंगे। जिसका लाभ आपको स्थायी रूप से होने का पूर्ण योग बन रहा है। आप अपनी क्षमताओं के अनुरूप ही कार्य करें। आपको हमेशा अपने गुप्त-अज्ञात शत्रुओं से बचकर रहना चाहिये। इस माह बेरोजगारों तथा विद्यार्थीयों को भी उनके परिश्रम का पूर्ण फल प्राप्त होगा। इस माह आप '**शुक्र साधना**' (मार्च 2004) अवश्य सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 1, 5, 7, 9, 11, 14, 15, 16, 19, 20, 21, 27, 29, 30 हैं।

कुंभ –

इस माह आप अत्यधिक सावधानी से हर कार्य को करें। आपको कठोर परिश्रम की अति आवश्यकता है। इस माह विशेष रूप से आपका झुकाव अध्यात्म की ओर रहेगा,जो आपको दैनिक जीवन में गति प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा। मनोवांछित लाभ की प्राप्ति नहीं होने से घबराएं नहीं। व्यय को कम करने की कोशिश करें। स्त्रियां अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें तथा अपने परिवार पर ध्यान दें। इस माह '**पुष्पदंतेश्वर शिव साधना**' (जनवरी 2005) करें। तिथियां - 4, 5, 6, 10, 11, 14, 18, 19, 20, 23, 27, 30, 31 हैं।

मीन –

नवीन यात्राओं के साथ नये कार्यों में आपका पराक्रम इस माह बढ़ेगा ही। आपका दृढ़ आत्मविश्वास ही आपके सम्मान में पूर्ण सहायक होगा। जनसंपर्क में आपकी प्रशंसा होगी। व्यापारी वर्ग जरा संभलकर ही रहे। अपने इष्ट का हमेशा स्मरण करते हुए योजनाओं का लाभ उठायें। बाधा होते हुए भी कार्य पूर्ण होने से उत्साह रहेगा। व्यर्थ की यात्राओं से बचें एवं अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। आय पक्ष को मजबूत बनाने के लिए अत्यधिक श्रम करना पड़ेगा। इस माह '**पापांकुशा दुर्गा शक्ति साधना**' (सित. 2004) करें। शुभ तिथियां - 1, 5, 7, 8, 10, 11, 14, 15, 17, 19, 20, 25, 26, 28 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

06	मार्च	फाल्गुन कृष्ण पक्ष-11	रविवार	विजया एकादशी व्रत
08	मार्च	फाल्गुन कृष्ण पक्ष-13	मंगलवार	महाशिवरात्रि पर्व
10	मार्च	फाल्गुन कृष्ण पक्ष-30	गुरुवार	अमावस्या
21	मार्च	फाल्गुन शुक्ल पक्ष-11	सोमवार	आमला एकादशी व्रत
23	मार्च	फाल्गुन शुक्ल पक्ष-13	बुधवार	प्रदोष व्रत
25	मार्च	फाल्गुन शुक्ल पक्ष-15	शुक्रवार	होली / पूर्णिमा व्रत
05	अप्रैल	चैत्र कृष्ण पक्ष-11	मंगलवार	पापमोचिनी एकादशी व्रत
06	अप्रैल	चैत्र कृष्ण पक्ष-12	बुधवार	प्रदोष व्रत

जीवन सरिता

यों तो किसी भी समस्या के समाधान हेतु अनेकों उपाय हैं। परंतु मंत्रों के माध्यम से समस्या के निवारण के पीछे धारणा यह है कि मंत्र शक्ति एवं दैवी शक्ति द्वारा साधक को वह बल प्राप्त होता है जिससे कि किसी भी समस्या का समाधान सहज हो जाता है। उदाहरण के लिए माना जाता है कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं। उसी प्रकार मन को सुदृढ़ करके किसी भी समस्या पर आप विजय प्राप्त कर सकते हैं।

1. व्यापार में उन्नति हेतु

व्यापार में उन्नति प्रत्येक व्यापारी की आकांक्षा होती है, और प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षा होती है कि वह उन्नति करे और तीव्रता के साथ उन्नति करें। व्यापार तो ऐसा क्षेत्र है जहां पल में तोला पल में माशा होता रहता है। ऐसी स्थिति में व्यापारी किसी भी प्रकार से पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता है क्योंकि आज यदि वह धन-धान्य से पूर्ण है, तो कल वह कर्ज में डूब सकता है। व्यापार के सम्बन्ध में कोई भी निश्चित तथ्य नहीं कहा जा सकता। जो अपने व्यापार को दिनों-दिन उन्नति की ओर अग्रसर करते रहना चाहते हैं, वे अवश्य ही कोई ऐसा मार्ग अपनाते हैं, जो कि उन्हें सहयोग प्रदान कर सके। इसके लिए प्रस्तुत प्रयोग अवश्य ही आपकी इस आकांक्षा को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करेगा।

सोमवार के दिन '**व्यापार वर्द्धनी**' का पूजन कर उस पर 51 बिल्व पत्र चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

मंत्र

॥ ॐ श्रीं परमज्ञ सिद्धिं व्यापार वृद्धिं ह्रीं ॐ ॥

यह प्रयोग तीन सोमवार तक करें। आखिरी सोमवार को प्रयोग सम्पन्न करने के पश्चात् '**वर्द्धनी**' को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 90/-

+ + + + + + + + + +

2. क्या पति-पत्नी में मधुरता नहीं रही है आपके घर में?

आप सामाजिक जीवन में तो अत्यन्त सम्मानीय, सभ्य व सुसंस्कृत व्यक्ति कहलाते हैं, लेकिन आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त मतभेदों से भरा हुआ है। आपके और आपके जीवनसाथी के मध्य झल्लाहट, चिड़चिड़ाहट तथा मतभेद ही बना रहता है तथा इसे दूर करने के लिए आपके सारे उपाय निष्फल हो रहे हैं। इसके कारण आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा पर भी असर पड़ रहा है और आप अत्यधिक तनावग्रस्त रहते हैं, कि घर में सामञ्जस्य किस प्रकार स्थापित करें? यदि आपके सारे उपाय असफल हो रहे हों, तो इस विधि को आजमा कर देख लीजिये। '**सुख शान्ति प्रदायक गुटिका**' को लाल रंग का वस्त्र बिछाकर स्थापित कर 51 बार चावल के दाने एक-एक कर निम्न मंत्रोच्चारण के साथ चढ़ायें -

मंत्र

॥ ॐ श्रीं श्रीं हुं ब्रं ब्रं फट् ॥

ऐसा ग्यारह दिन तक नित्य करें। प्रत्येक दिन मंत्र जप समाप्त कर चढ़ाये हुए चावलों को चिड़ियों को खिला दें। जिस दिन प्रयोग समाप्त हो, उस दिन गुटिका को भी किसी निर्जन स्थान में डाल दें।

साधना सामग्री - 150/-

+ + + + + + + + + +

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

3. आप भी भैरव साधना में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति भैरव की साधना सम्पन्न करने में सक्षम नहीं हो पाता, क्योंकि इस साधना को अपने समाहित करने के लिए अत्यधिक संयम, गम्भीरता, ओजस्विता एवं तेजस्विता की आवश्यकता होती है। फलस्वरूप कई बार प्रयत्न नहीं हो पाती और वह अपने पूर्ण प्रयत्नों के बावजूद भी असफल होता रहता है। यदि साधक भैरव साधना करने से पूर्व यह प्रयोग सम्पन्न कर लें, या भैरव दीक्षा ग्रहण कर लें, तो फिर इस असफलता को सफलता में परिवर्तित किया जा सकता है।

यह प्रयोग सात दिन का है। साधक इसे रविवार से आरम्भ करें। रविवार की रात्रि को स्नान कर अपने को शुद्ध कर लें। तत्पश्चात् काले वस्त्र धारण कर लें। अपने सामने एक बाजोट पर काला वस्त्र बिछा कर उस पर चावल की ढेरी बनाकर, उस पर '**भैरव गुटिका**' स्थापित करें, गुटिका के चारों ओर पांच तेल के दीपक प्रज्ज्वलित करें, दीपक मिट्टी के हों। फिर भैरव के जिस मंत्र को सिद्ध करना चाहते हैं, उस मंत्र को एक कागज पर **काजल** से लिख कर भैरव गुटिका के नीचे रख दें। इसके बाद निम्न मंत्र का जप 51 बार करें -

मंत्र

// ॐ भ्रं भैरवाय फट् //

मंत्र जप समाप्त होने पर वह कागज तथा दीपक किसी निर्जन स्थान पर रख दें। सात दिन बाद आप **भैरव गुटिका** को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

+ + + + + + + + + +

4. क्या शत्रु आप पर निरन्तर हावी होते जा रहे हैं?

जीवन में विरोधी या शत्रु पक्ष प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं से अधिक शक्तिशाली लगता है और उसका अधिक समय इस प्रकार के तनावों से जूझने में ही व्यतीत हो जाता है। जब शत्रु अत्यधिक प्रबल होने लगें, तो वे व्यक्ति के सम्मान को, यश को, धन को हानि पहुंचा सकते हैं। यदि आपके समक्ष ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं, तो यह आपके लिए एक श्रेष्ठतम प्रयोग है।

किसी बुधवार की रात्रि में दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जायें। सर्वप्रथम दैनिक साधना विधि के अनुसार गुरु पूजन सम्पन्न करें। गुरु से साधना में सफलता का आशीर्वाद प्राप्त करे। उसके बाद अपने सामने बाजोट पर तीन तेल के दीपक इस प्रकार रखें, कि उनसे एक त्रिभुज सा बन जाये। उन दीपकों के मध्य सिन्दूर की ढेरी पर '**दुर्गा गुटिका**' स्थापित कर दें और दाहिने हाथ में चावल के कुछ दाने लेकर निम्न मंत्र का 61 बार उच्चारण करें -

मंत्र

// ॐ जीवनैश्वर्यै ॐ //

मंत्र जप समाप्त होने पर चावल के दाने अपने घर में चारों ओर बिखेर दें। यह प्रयोग तीन दिन तक करें। तीन दिन पश्चात् दुर्गा गुटिका को किसी दुर्गा मन्दिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 150/-

+ + + + + + + + + +

5. क्या आप जानते हैं, कि आप के अन्दर कितनी योग्यताएं छिपी हैं?

आप के अन्दर क्या क्षमता है यह आपको मालूम नहीं है। हर व्यक्ति यह नहीं जान पाता है, कि उसके अन्दर क्या अच्छाईयां है। आपके अन्दर अनेक प्रकार की क्षमताएं हैं, लेकिन उनके विषय में आपको मालूम नहीं है आप अपनी योग्यता को नहीं जान पाते। वे क्षमताएं एक धूल युक्त दर्पण की तरह धुंधली अस्पष्ट प्रतीत होती हैं। आप भी अपने अन्दर छिपी क्षमताओं अथवा योग्याताओं को उजागर कर सकते हैं, क्योंकि हर किसी के अन्दर कोई न कोई अच्छाई छिपी ही रहती है। उसे मालूम नहीं होता है जब तक कोई उसे यह न बताए, कि वह योग्यताएं उसमें हैं। इस प्रयोग के माध्यम से आप अपने अन्दर छिपी हुई योग्यताओं को पहचान सकते हैं।

यह 11 दिन की साधना है। इसे आप शुक्ल पक्ष के किसी भी सोमवार को प्रारम्भ कर सकते है। प्रातः कालीन इस साधना में आप पूर्व की ओर मुख कर बैठ जाये और संक्षिप्त गुरु पूजन सम्पन्न कर, गुरु से साधना में सफलता का आशीर्वाद प्राप्त करें। अपने सामने बाजोट पर '**प्राणप्रतिष्ठा युक्त वृहदारण्य**' को स्थापित कर उसके ऊपर कुंकुम से सात बिन्दियां लगाते हुए निम्न मंत्र का जप 35 मिनट तक करें।

मंत्र

// ॐ हं ब्रह्मदेवाय आ उ सः ॐ //

बाहरवें दिन प्रयोग समाप्ति के बाद वृहदारण्य को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 90/-

+ + + + + + + + + +

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत है जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित है, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

अप्रैल

1. *'ॐ'* का ग्यारह बार उच्चारण कर घर के बारह जायें।
2. शुभ कार्य के लिए प्रातः काल बाहर जाते समय दरवाजे पर चुटकी भर नमक छिड़क दें।
3. प्रातः घर से निकलते समय जेब में **'इंगुल'** (न्यौछावर 60/-) रख दीजिये, दिन भर के अधिकांश कार्यों में सफलता मिलेगी।
4. घर से बाहर जाते समय पांच बार *'ॐ नमः शिवाय'* का उच्चारण करें।
5. प्रातः हनुमान का पूजन कर सुन्दर कांड का पाठ करें।
6. कार्यारम्भ करने से पूर्व *'श्री ह्रीं क्लीं'* का उच्चारण मन ही मन पांच बार कर, फिर कार्य आरम्भ करें।
7. स्नान करने के पश्चात् **'सुदर्शन रक्षा चक्र'** (न्यौछावर 170/-) के पूरे शरीर पर स्पर्श करायें।
8. *'ॐ ऐं ॐ ह्रीं'* का पांच बार उच्चारण कर ही घर से बाहर निकलें।
9. अपने दिन का आरम्भ करते समय जब बाहर निकलें, तो पहले आप दाहिना पांव बाहर रखें।
10. घर से बाहर निकलते समय पांच काली मिर्च सिर पर से घुमा कर दक्षिण दिशा में फेंक दें।
11. आज शिव मंदिर में मुट्ठी भर काले उड़द अर्पित करें, मनोकामना पूर्ण होगी।
12. किसी हनुमान मन्दिर में घी तथा गुड़ का भोग लगाकर अपने व्यापार स्थल या नौकरी में जायें।
13. एक मुट्ठी चावल अपने सिर पर तीन बार घुमाकर दान देवें, आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।
14. **'निखिलेश्वरानंद स्तवन'** के तीन श्लोक पढ़ कर अपना दिन आरम्भ करें।
15. **'प्रखरया'** (न्यौछावर 75/-) को अपने पर्स में रखें और अपने कार्यों को सम्पादित करें।
16. आज लोहे की वस्तु अवश्य दान करें।
17. नर्वाण मंत्र *'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै'* का पाठ करें।
18. आज भगवान राम के चित्र की पूजा अवश्य करें और सुगन्धित पुष्प अर्पण करें।
19. प्रातः घर से निकलते समय चुटकी भर हींग को अपनी पीठ की ओर फेंक दें तथा पीछे मुड़कर न देखें।
20. गणपति को लड्डू का भोग लगायें।
21. सद्गुरुदेव निखिलजन्मोत्सव के शुभ दिवस पर पूर्ण विधि विधान सहित गुरु पूजन कर एक सेवा कार्य का संकल्प लें।
22. काली सरसों के कुछ दानें जमीन पर रखकर अपना दाहिना पैर उस पर रखते हुए निकलें।
23. एक कागज पर कुंकुम से *'ॐ ह्री नमः'* लिखकर उसे अपने पास रखें।
24. प्रातः काल सूर्य को अर्घ्य अवश्य दें।
25. **'मधुरूपेण रुद्राक्ष'** (न्यौछावर 60/-) का पूजन कर उसे शिव मंदिर में अर्पित करें।
26. हनुमान चालीसा का पाठ अवश्य करें।
27. विघ्नहर्ता गणपति का संक्षिप्त पूजन कर उनके सामने *'ॐ जं गणपतये नमः'* मंत्र का एक माला जप करें।
28. प्रातः काल जब आप उठें, तो जमीन पर पांव रखने से बाद निम्न श्लोक का तीन बार उच्चारण करें -

    हेतवे जगतामेव संसारार्णव सेतवे।
    प्रभवे सर्वविद्यानां शम्भवे गुरवे नमः।
29. बगलामुखी के बीज मंत्र *'ह्लीं'* का एक माला जप करें।
30. *''ॐ शं शनैश्चराय नमः''* का 21 बार जप करें।

वास्तुकला
यह है क्या बला

फालतू का हो हल्ला है...

कुछ लोगों ने वास्तुकला के नाम पर ठगी अपना ली है,

डर भर दिया है लोगों के मन में

और वे बेचारे

हजारों लाखों रुपये खर्च करके मकान को तोड़ फोड़ कर...

आजकल पूरे भारतवर्ष में वास्तु शास्त्र के विषय में बहुत हो हल्ला है और पिछले कुछ वर्ष से लोगों में कुछ ऐसा जुनून आया है या पैदा कर दिया गया है कि आपका मकान वास्तुकला की दृष्टि से ठीक निर्मित नहीं हुआ है, इसलिए आप दुःख भोग रहे हैं या परेशानियां आ रही हैं या बाधाएं आ रही हैं या अड़चनें आ रही हैं या कठिनाइयां आ रही हैं और लोग भयभीत होकर उन वास्तुकला विज्ञों को जो वास्तुकला जानते हैं, उनसे अपने मकान को सही ढंग से वापस निर्मित कराने की कोशिश करते हैं।

मैं यह नहीं कह रहा हूं कि वास्तुकला नहीं होती है या वास्तुकला जैसी कोई चीज नहीं है। वास्तुकला का एक लम्बा इतिहास है। वास्तुकला का तात्पर्य है, कि मकान को किस प्रकार से निर्मित किया जाय या किस मुहूर्त में निर्माण आरम्भ किया जाय, किस दिशा से निर्माण किया जाय?

मकान में प्रत्येक स्थान की एक निश्चित दिशा होती है, कि रसोई किस दिशा में बनाई जाय, भोजनशाला किस दिशा में बनाया जाय, ड्राईंग रूप किस दिशा में बनवाया जाय, धन, पैसा रखने के लिए तिजोरी किस दिशा में होनी चाहिए, जिससे कि घर में निरन्तर खुशहाली, उन्नति रहे, सफलता मिले।

यह अपने आपमें सम्पूर्ण विज्ञान है, लेकिन अधकचरे लोगों ने इस विज्ञान को इतना भ्रष्ट बना दिया है, इतना स्वार्थमय बना दिया है, कि जिनको इस विषय में ज्ञान नहीं है, वे चार किताबें पढ़ कर किसी प्रकार से लिख देते है, कि इधर रसोई नहीं बननी चाहिए, उधर स्टोर रूप नहीं बनना चाहिए, इधर ड्राईंग रूप बनना चाहिए, उधर आंगन बनना चाहिए और इस प्रकार लोगों में भय और आतंक पैदा कर दिया है, कि आप पूरे भारतवर्ष में जगह-जगह पर उन लोगों के कहने से मकानों को तोड़ा जा रहा है, फिर नये सिरे से दरवाजे बनाये जा रहे हैं, नये सिरे से ड्राईंग रूम बनाये जा रहे हैं, नये सिरे से स्टोर बनाये जा रहे हैं और इस प्रकार कम से कम ढाई-तीन लाख, पांच लाख रुपये खर्च किये जा रहे हैं, उन वास्तुकला विज्ञों के कहने से।

यदि ऐसा ही होता, तो खुद वास्तुकला शास्त्री भूखे नहीं मरते, वे अपने मकान को तोड़-फोड़ कर ठीक क्यों नहीं कर लेते,

उन्होंने कौन से अपने बाप-दादा के मकान को वास्तुकला शास्त्र की दृष्टि से ही बनाया है। ऐसे लोगों को इस बात का पूर्ण रूप से ज्ञान ही नहीं है, कि मकान का निर्माण किस प्रकार से करना चाहिए। इस प्रकार लोगों का या आपका जो धन अपव्यय हो रहा है और आप जो इस प्रकार से दिग्भ्रमित होकर बार-बार मकान को तोड़ रहे हैं और जिस प्रकार से परिवर्तित कर रहे हैं, वह एक प्रकार से अनुचित है, धन का अपव्यय है, आपको निश्चित रूप से मूर्ख बनाया जा रहा है।

यदि आपके पास 'वास्तु कृत्या यंत्र' है, तो यह एक यंत्र ही वास्तु कला से सम्बन्धित सारे दोषों को मिटा देने में समर्थ है... सक्षम है, आप खुद आजमाकर देख लीजिये।

प्रश्न उठता है, कि क्या यह सब व्यर्थ है?

मैं कह रहा हूं, वास्तुकला अपने आपमें प्रामाणिक शास्त्र है, मैं यह भी कहता हूं कि वास्तु शास्त्र की दृष्टि से मकान बनना चाहिए।

मगर जिस मकान को हमारे दादा जी ने बना लिया, पिता जी ने बना दिया या हमने बना दिया, क्या हम उसके खिड़की दरवाजे तोड़ कर नये स्टाइल से, नये तरीके से बना सकते हैं, क्या रसोई की जगह स्टोर बना सकते हैं, क्या बाथरूम की जगह ड्राईंग रूम बना सकते हैं, ऐसा सम्भव नहीं हो सकता।

जब ऐसा सम्भव नहीं हो सकता, तो न तो उसका मूल स्वरूप, जैसा हमने बनाया, वह रह सकता है और न ही नये तरीके से बन पाता है और दोनों दृष्टियों से मकान अपने आपमें खराब और बरबाद हो जाता है और उसका हम किसी प्रकार से कोई लाभ नहीं उठा पाते हैं।

प्रश्न यह उठता है, कि इस सम्बन्ध में क्या किया जाय?

मैं पूरे भारत वर्ष में घूमा हूं और मैंने देखा है, कि लोग इस मामले में काफी परेशान हैं, दिग्भ्रमित हैं, उनको कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं है, वे अपने आपमें उन समस्याओं से ग्रस्त हैं, जो उनके सामने खड़ी हैं और वास्तु शास्त्री उन सारी समस्याओं का दोष मकान के ऊपर डाल रहे हैं।

यह निश्चित है, कि यदि वास्तु शास्त्र की दृष्टि से मकान का निर्माण नहीं हुआ हो या निर्मित नहीं हो रहा हो, तो निम्न 21 प्रकार की समस्याऐं व्यक्ति के जीवन में बनी ही रहती हैं और इन समस्याओं से वह जीवन भर जूझता रहता है, क्योंकि मकान के लिए निश्चित दिशा, निश्चित स्थान होता ही है और इसीलिए पुराने जमाने में मकान के निर्माण से पहले वास्तु शास्त्री को भूमि दिखाते थे ओर वह जिस प्रकार से बताता था, उसी प्रकार से नक्शा बनाया जाता था। पिछले दो सौ साल के इतिहास में यह कला, यह विद्या भूल सी गई है और अब जो मकान बन रहे हैं, वे एक नक्शे के अनुसार या आर्किटेक्ट के अनुसार ही बनाये जा रहे हैं और इसीलिए वे वास्तु शास्त्र की दृष्टि से ठीक नहीं होते।

मगर यह भी सही नहीं है, कि इसके लिए मकान में तोड़-फोड़ की जाय, मकान को एकदम से बिल्कुल बेहाल बना दिया जाय।

वास्तु शास्त्र की दृष्टि से मकान सही ढंग से निर्मित नहीं होने पर निम्न प्रकार की समस्यायें जीवन भर बनी रहती हैं -

1. उसके घर में हमेशा तनाव और कलह बना ही रहता है।
2. घर में निरन्तर बीमारी बनी ही रहती है।
3. उसके घर में खुशी और प्रसन्नता नहीं व्याप्त होती है।
4. सही ढंग से धन का आगमन नहीं होती है और वह दरिद्रि बना ही रहता है।
5. उस घर के प्रधान पर हमेशा कर्ज बना रहता है।
6. उसकी बार-बार आत्महत्या करने की इच्छा होती है।
7. वह सदैव परेशान व दुःखी रहता है।
8. उस घर की लड़कियां अक्सर गलत राह पर चली जाती हैं।
9. उसका लड़का कुपात्र बनता है और उसे जीवन में अच्छा वातावरण नहीं मिलता।
10. उसकी पत्नी और उसके मध्य निरन्तर मतभेद बना रहता है।
11. वह अपने आपमें निरन्तर एक न एक समस्याओं से घिरा ही रहता है।
12. राज्य बाधा उसे निरन्तर परेशान करती ही रहती और उसका पूरा जीवन उन राज्य बाधाओं से जुझने में व्यतीत हो जाता है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

13. उसके ऊपर कोई न कोई मुकदमा होता रहता है।
14. पड़ोस से तथा अन्य लोगों से निरन्तर लड़ाई-झगड़ा होता ही रहता है और वह उस समय अपने आपे में नहीं होता है।
15. वह कभी स्वस्थ नहीं रह पाता और निरन्तर स्वयं में बेचैनी का अनुभव करता रहता है।
16. यदि वह व्यापारी है, तो उसे व्यापार में आये दिन किसी न किसी प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ता है।
17. यदि वह नौकरी करता है तो उसे हर क्षण अपनी नौकरी का खतरा बना रहता है।
18. मान-सम्मान, यश-प्रतिष्ठा को वह प्राप्त नहीं कर पाता।
19. उसके घर में चोरी या किसी अन्य प्रकार की आकस्मिक दुर्घटनाएं घटती ही रहती है।
20. यह सदैव हीन भावना से ग्रसित रहता है।
21. ऐसे घर में अकाल मृत्यु भी सम्भव है।

अगर ये बिन्दु या इनमें से कुछ बिन्दु आपके घर में है, तो यह समझिये, कि आपका मकान वास्तु शास्त्र की दृष्टि से सही ढंग से नहीं बना है।

तो अब क्या किया जाय?

अगर ये समस्यायें है, तो इन समस्याओं से निजात पाना, राहत पाना आवश्यक है, क्योंकि इन समस्याओं के रहते व्यक्ति जीवन में खुशहाली, आनन्द, मस्ती, सुख, सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सकता है।

इसके लिए सिर्फ मकान को दोष देना उचित नहीं है। अब इसके लिए दो रास्ते हैं, कि या तो मकान को तोड़ा जाय और तोड़ने का मतलब है, कि तोड़ने में एक-डेढ़ लाख रुपये खर्च करना और फिर बनाने में आठ-दस लाख रुपये खर्च करना। एक छोटे से छोटे मकान के लिए भी कम से कम सात-आठ लाख रुपये के बिना तो मकान सही ढंग से बन ही नहीं सकता और यह भी सही नहीं है, कि वापिस बनने के पश्चात् मकान वास्तु शास्त्र की दृष्टि से सही ढंग से बनेगा भी या नहीं?

- क्योंकि आजकल वास्तु शास्त्रियों की भरमार सी हो गई है और जिस गली में देखिये, एक वास्तु शास्त्री तो मिल ही जायेगा। ऐसे वास्तुशास्त्री अपने अधकचरे ज्ञान के साथ लोगों को वास्तु शास्त्र का ज्ञान देने के लिए आतुर है। जो वास्तु शास्त्री पुस्तकों को पढ़ कर आपको दिशा निर्देश देते है, वे सही निर्देश किस प्रकार दे पायेंगे?

वास्तु का तात्पर्य है -

- ✧ नींव किस दिशा में खोदनी है?
- ✧ कब खोदनी है?
- ✧ कौन से समय खोदनी है?
- ✧ उसमें क्या रखना है?
- ✧ उसमें वास्तु स्थापन कैसे करना है...?
- ✧ क्या अब जब मकान बन गया है,
- ✧ तो फिर यह सब कुछ सम्भव है?
- ✧ क्या वापिस मकान गिरा कर नये सिरे से बनाना है?
- ✧ यह सम्भव है...?
- ✧ नहीं!!!
- ✧ ... तो फिर क्या करना है?
- ✧ ... तो फिर क्या उपाय है?

प्रत्येक वास्तु शास्त्री अपना व्यवसाय चलाने की खातिर आपके मकान में कोई न कोई कमी निकाल ही देता है। आजकल तो वास्तु शास्त्र पर सैकड़ों-हजारों किताबें बाजार में बिक रही हैं और सबमें अलग-अलग मत हैं, अलग-अलग विचार धाराएं हैं, अलग-अलग तथ्य हैं और कार्यालय में प्राप्त होने वाले पत्र इस बात के गवाह हैं, कि व्यक्ति दिग्भ्रमित हो रहा है, कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाय?

मैं आपको यह सलाह नहीं देता, कि आप मकान को तोड़ें; मैं आपको यह भी सलाह नहीं देता, कि इस प्रकार आपके धन का अपव्यय हो; मैं आपको यह भी सलाह नहीं देता, कि इस प्रकार से आप बेतहाश पैसा खर्य कर उसे फिर से बनायें। मैं आपको यह भी नहीं कह सकता, कि आप यह मकान बेच दें, क्योंकि आप जो दूसरा मकान खरीदेंगे, वह भी जरूरी नहीं है, कि वास्तु शास्त्र की दृष्टि से उचित ढंग से निर्मित हुआ हो।

इसीलिए हमारे आग्नेयोपनिषद् में बिल्कुल स्पष्ट व्याख्या है, कि मकान का निर्माण कराते समय वास्तु शास्त्र के बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए-

1. मकान बिल्कुल गौमुखी होना चाहिए, व्याघ्रमुखी नहीं होना चाहिए, यानि कि आगे से बहुत चौड़ा और पीछे से संकरा नहीं होना चाहिए।

र्गाकार या आयताकार में होनी चाहिए।

समय मकान का निर्माण आरम्भ हो, जिस दिशा में पहली बार नींव का पत्थर गाड़ा गया हो, उसी दिशा से निर्माण कार्य भी प्रारम्भ करें।

4. रसोई अग्निकोण में ही बनाई जाय।
5. पैसे रखने की जगह या तिजोरी दक्षिण दिशा की ओर बनाई जानी चाहिए।
6. उत्तर दिशा की ओर ड्राईंग रूप होना चाहिए।
7. स्त्रियों के बैठने की जगह पश्चिम दिशा की ओर होनी चाहिए।
8. आंगन चौरस होना चाहिए तथा दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए।
9. मकान की ऊंचाई उसकी लम्बाई और चौड़ाई के अनुपात में होनी चाहिए।
10. इसके अलावा मकान का निर्माण आरम्भ उस समय होना चाहिए, जब भूमि शयन नहीं हो, भूमि रजस्वला नहीं हुई हो, भूमि जाग्रत हो और भूमि का निवास स्थान मृत्यु लोक में हो।

ये कुछ बिन्दु हैं, जो वास्तु शास्त्र की दृष्टि से मान्य हैं। मगर यह तो उस समय की बात थी, जब आप मकान बना रहे थे। इसके अलावा भी सैकड़ों बिन्दु हैं, जिनका पालन करना आवश्यक होता है।

जो मकान बन चुके हैं, अब उनका क्या किया जाय, उनको किस प्रकार से अनुकूल बनाया जाय, जिससे घर में अनुकूलता प्राप्त हो सकें?

- क्योंकि पहले जो 21 बिन्दु बताये गये हैं, उन समस्याओं से आप परेशान हैं और आपको कोई रास्ता सूझ नहीं रहा है, वास्तु शास्त्री कभी इस दीवार को तुड़वाते हैं, तो कभी उस दीवार को गिरवा देते हैं, तो कभी दरवाजे को अपने स्थान पर लगा देते हैं।

... और उनके कहे अनुसार चलने के बाद भी आपको कुछ अनुकूलता प्राप्त नहीं हो पाती है और आपका इतना धन खर्च होने के बाद भी समस्यायें ज्यों की त्यों बनी रहती हैं।

इसके लिए **आग्नेयोपनिषद्** में बिल्कुल स्पष्ट व्याख्या लिखी हुई है -

वास्तुशास्त्रेण स्थापित्वं दोषा न भव विद्यते।
पूर्णत्वं भवते विद्या स वेदान्त विद्यते॥
दीर्घायुष्यं मनुष्यं च पूर्ण सुखं सौभाग्य एव च।
देवतां रम्यते तत्र स वास्तु मात्र उच्चते॥
वास्तु कृत्या च यंत्रेण निर्मितं भवने यदा।
यदिसः वास्तु मंत्र रूपेण वास्तु शास्त्रोक्त उच्चते॥
वास्तु शास्त्रोक्त उता नित्यं स नित्यं भवते पुनः।
स वास्तु कृत्या यंत्रं च निर्मिते भव उच्चते॥
स वास्तु यंत्रं विन्ते भवने गर्दभे युति।
पूर्ण वास्तु भवेनित्यं सुख सौभाग्य एव च॥
न बाध्यते एव न विपत्तिः सदा।
पूर्ण आयु आरोग्यं सुख सौभाग्य सम्पदा॥

इन श्लोकों का तात्पर्य यह है, कि यदि मकान वास्तु शास्त्र की दृष्टि से नहीं बना है, तो **'वास्तु कृत्या यंत्र'** जो ताम्रपत्र पर अंकित होता है, उस यंत्र को स्थापित करने से ही घर में सुख, सौभाग्य, धन, ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति होती है।

-किन्तु यह वास्तु कृत्या यंत्र बिल्कुल उस मुहूर्त में निर्मित होना चाहिए, जिसे **'वास्तु मुहूर्त'** कहा जाता है और इस प्रकार का यंत्र एक महीने में जाकर तैयार हो पाता है, क्योंकि यह मुहूर्त 24 घण्टों में कुल 24 या 36 मिनट का आता है।

- इस यंत्र को उसी तरह से ही बनाया जाना चाहिए, जिस प्रकार से वास्तु शास्त्र के नियमों के अनुसार भवनों का निर्माण होता है।

फिर उस यंत्र को मंत्र सिद्ध किया जाता है तथा उसकी प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। फिर उसका अंग न्यास व कर न्यास किया जाता है, उसके बाद उसमें प्राण संजीवन क्रिया

हां यह सही है, कि इसके जानने वाले मुट्ठी भर लोग हैं,
यह सही है, कि इस प्रकार का यंत्र निर्माण सहज सम्भव नहीं,
यह सही है कि ऐसा ज्ञान गोपनीय है...
पर असम्भव तो नहीं
सम्भव है,
निश्चय ही सम्भव है
और आपके लिए सहज सुगम भी है
क्योंकि हम आपके लिये ही तो हैं।

करने के बाद वास्तु देवता की स्थापना की जाती है।

फिर उसमें सुख, सौभाग्य, धन ऐश्वर्य, लक्ष्मी के मंत्रों के माध्यम से उनकी स्थापना कर उसे पूर्णता दी जाती है। इस प्रकार **'वास्तु कृत्या यंत्र'** निर्मित होता है।

इस वास्तु कृत्या यंत्र को अपने मकान में, जो वास्तु शास्त्र के निमयों के अनुसार नहीं बना हो, उस मकान में उत्तर दिशा में या तो जमीन में गाड़ दें या यदि फ्लैट बना हो, तो इसे लाल रंग के वस्त्र में लपेट कर उत्तर दिशा में रख दें।

ऐसा करने से उपरोक्त सभी 21 दोष समाप्त हो जाते हैं और वे सभी लाभ आपको मिलने लग जाते हैं, जो पूर्णतः वास्तु शास्त्र के नियमों के आधार पर बने मकानों से प्राप्त होते हैं।

इसके लिए लाखों रुपये खर्च करने की आवश्यकता नहीं है, केवल उस वास्तु कृत्या यंत्र का निर्माण करने में पण्डितों की दक्षिणा, यज्ञ करने का व्यय तथा अन्य सामग्रियों पर जो व्यय आता है, वह स्वाभाविक है, उसको व्यय कर हम लाखों रुपये बचा सकते हैं।

इस प्रकार के श्रेष्ठतम वास्तु कृत्या यंत्र का निर्माण करने में इक्कीस हजार रुपये (21,000/-) का व्यय आता है। यह 21,000/- लाख रुपयों के समक्ष नगण्य है, तुच्छ है और बुद्धिमान व्यक्ति इस प्रकार का वास्तु कृत्या यंत्र प्राप्त कर उसे अपने घर में स्थापित कर ही लेता है। इस प्रकार वह अपने खुद के लिए, आने वाली पीढ़ियों के लिए कई समस्याओं का समाधान प्राप्त कर लेता है, कई बाधाओं को दूर कर लेता है और उसी दिन से अनुकूलता प्राप्त करने लग जाता है।

इस यंत्र की न तो पूजा करने की जरूरत है, न अगरबत्ती लगाने की आवश्यकता है, केवल इसको स्थापित करना है। आवश्यकता इस बात की है, कि यह वास्तु मुहूर्त में निर्मित होना चाहिए और 99% लोगों को यह ज्ञान ही नहीं है, कि वास्तु मुहूर्त किस समय होता है, उनको यही ज्ञात नहीं है, कि उसका अंग न्यास, कर न्यास किस प्रकार से होता है, उनको यह भी ज्ञात नहीं है, कि उसका निर्माण कितना लम्बा-चौड़ा होना चाहिए। उनको यह भी ज्ञान नहीं है कि उसमें किस प्रकार से प्राण प्रतिष्ठा की जाती है और वास्तु देवता का स्थापन किस प्रकार से होना चाहिए।

जब ऐसा नहीं होता, तो वह यंत्र अपने आपमें मात्र तांबे का टुकड़ा बन कर रह जाता है, जिससे कोई लाभ नहीं होता।

हजारों पत्र आने के बाद यह निश्चय किया गया, कि आपकी समस्याओं का समाधान किया जाय और इसके लिए इस प्रकार के वास्तु कृत्या यंत्र का निर्माण किया जाय, जिससे कि आप इसे अपने मकान में स्थापित कर उसे तोड़ने और बरबाद होने से बचा सकें और अपने आपमें पूर्ण अनुकूलता प्राप्त कर सकें।

मैं समझता हूं कि लाखों रुपये खर्च करने की अपेक्षा यह यंत्र आपके लिए आपकी आने वाली पीढ़ी के लिए अद्वितीय है, अनुपमेय है, अप्रतिम है, श्रेष्ठ है।

इसको आप अपने घर में स्थापित कर दें और उसका पूर्ण रूप से लाभ उठायें।

यह यंत्र आपके जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है, यदि कोई इसमें भी चूक जाता है, तो उसके समान दुर्भाग्यशाली व्यक्ति इस संसार में कोई हो ही नहीं सकता, उसके दुर्भाग्य उसके आगे-आगे ही चलता है।

या देवी सर्व भूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

नवरात्रि में सम्पन्न करें

पराम्बा दुर्गा शक्ति साधना

और

प्रत्येक दिन दुर्गा के एक-एक स्वरूप की साधना

भगवती दुर्गा की साधना प्रत्येक साधक उनके शक्ति प्रदायिनी स्वरूप को लेकर करता है, क्योंकि दुर्गा शक्ति स्वरूपा कही गई है और साधक दुर्गा की शक्ति को स्वयं में निहित कर समस्याओं से लड़ने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

भगवती दुर्गा का शक्ति स्वरूप अत्यन्त तेजस्विता युक्त है, उनके तेज को आत्मसात् कर पाना प्रत्येक मनुष्य के बस की बात नहीं है, एक साधारण मनुष्य उनके भजन तो गा सकता है, उनकी भक्ति तो कर सकता है, लेकिन साधना करने की क्षमता सिर्फ साधकों में ही होती है, जो पूर्णता के साथ भगवती दुर्गा के शक्ति स्वरूप को स्वयं में निहित कर सकते है।

भगवती दुर्गा की तेजस्विता यदि साधक समाहित करने में सक्षम हो जाये, तो साधक के जीवन का सौभाग्योदय होता है और ऐसा सौभाग्यवर्द्धक क्षण उपस्थित हो रहा है इस बार 'चैत्र नवरात्रि' (9 अप्रैल 2005 से 18 अप्रैल 2005) पर, जब साधक नवरात्रि के प्रत्येक दिन दुर्गा के प्रत्येक स्वरूप की साधना कर अपने जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान कर सकता है।

भगवती दुर्गा की साधना के अनेक रहस्यों में से एक रहस्य यह भी है, कि जब साधक स्वयं सिंह वृत्ति धारण कर लेता है, तभी वे सिंहवाहिनी रूप में आकर उसे अपना सान्निध्य देती हैं। देंवी दुर्गा के सान्निध्य का तात्पर्य है - साधक को सर्व प्रकारेण अभय एवं वर की उपलब्धि, जिसे प्राप्त करने के लिए उच्चकोटि के योगी, यति एवं संन्यासी भी आतुर रहते है।

साधना के जगत में इस '**सिंहत्व**' का अर्थ होता है, कि साधक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किसी भी चुनौती को स्वीकार करने को तत्पर हो गया है अर्थात् उन दुर्गम पथों पर भी चलने के लिए सन्नद्ध हो गया है, जिन्हें सर्व सामान्य ने कठिन मान कर हार स्वीकार कर ली हो।

पूज्यपाद गुरुदेव ने **सिंहत्व की परिभाषा** इसी प्रकार दी है, उन्होंने एक अवसर पर स्पष्ट किया था। **"जो 'सिंह' होता है, उसे चुनौतियों से भिड़ने में ही आनन्द आता है"...** और उन्होंने इस तथ्य को एक उदाहरण से स्पष्ट किया था। उन्होंने बताया - "जब जंगल में शिकारी सामने आकर खड़ा हो जाता है, तब अन्य जानवर तो मुंह मोड़कर पीछे लौट जाते है, किंतु सिंह ठीक उसी शिकारी के सिर पर छलांग लगाकर आगे बढ़ जाता है।

साधनाओं के क्षेत्र में जो साधक इसी प्रकार अड़चनों के ऊपर से छलांग लगाने का हौसला बटोर लेता है, उसे ही श्रेयता, सफलता, सम्मान और सिंहत्व की प्राप्ति सुलभ होती है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

समस्त उच्चकोटि की साधनाओं का एक पक्ष जहां उनकी जटिलता होती है, वहीं दूसरा पक्ष यह भी होता है, कि उनके समाधान का कोई अत्यंत सरल उपाय भी होता है, जो उस देवी या देवता की ही कृपा से उस समय साधक के समक्ष उद्घटित होता है, जब वह सिंहत्व धारण कर इस समर भूमि में छलांग लगा देता है, क्योंकि किसी भी देवता का मूल स्वरूप तो करुणामय ही है। उनका उद्देश्य तो जगत का कल्याण ही है और यही बात भगवती दुर्गा के सम्बन्ध में सर्वाधिक सत्य क्यों नहीं हो सकती।

भगवती दुर्गा का स्वरूप अत्यंत भीषण माना गया है, जैसा कि उनके ध्यान से स्पष्ट होता है -

ॐ विद्युद्दाम समप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेट विलसद्धस्ताभिरा सेवितां।
हस्तैश्चक्रगदासिखेट विशिखांचापं गुणं तर्जनीं;
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

अर्थात् **"जिनके अंगों की प्रभा विद्युत-द्युति के समान है, जो सिंह के कंधों पर बैठी हुई भयंकर प्रतीत हो रही हैं, जिनके चारों ओर हाथ में तलवार एवं ढाल लिए अनेक कृत्यायें खड़ी हैं, जिन्होंने स्वयं अपने हाथों में चक्र, गदा, तलवार ढाल, बाण, धनुष, पाश आदि अस्त्र धारण कर रखे है, ऐसी अग्निमय स्वरूप वाली, माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करने वाली त्रिनेत्री दुर्गा की मैं अभ्यर्थना करता हूं।"**

भगवती दुर्गा का यह स्वरूप स्वयं प्रकट करता है, कि वे भावगम्य नहीं, अपितु साधनागम्य है, वह सत्य है कि देवी प्रत्येक दशा में ममतामयी ही हैं, किन्तु जब तक साधक उनके स्वरुप विशेष के अनुकूल स्वयं को ही सन्नद्ध नहीं कर लेगा, तब तक वह स्वयं उसके अन्दर समाहित हो भी कैसे सकेगा? इसके अतिरिक्त उस जगज्जननी को यह भली-भांति स्पष्ट होता है, कि उनका कौन सा साधक शिशुत्व की स्थिति में है और कौन केवल मुंह से ही मां-मां की रट लगा रहा है।

वह स्थिति जब कि शिशुत्व की प्रबलता के कारण साधक कुछ भी करने में असमर्थ हो जाता है और जीवन के प्रत्येक क्षण के लिए केवल भगवती जगदम्बा पर ही आश्रित हो जाता है, अत्यन्त उच्चकोटि के योगियों की ही होती है। अन्य कोई यदि इसके आधार पर साधना करने से बचना चाहे, तो यह उसकी न्यूनता होगी, श्रेष्ठता नहीं। इसी कारणवश श्रेष्ठ साधक प्रत्येक दशा में साधना करने को तत्पर रहते ही हैं, क्योंकि इसका निर्धारण तो जगदम्बा स्वयं ही कर लेगी, कि अब मेरे किस भक्त या साधक को साधना की आवश्यकता है

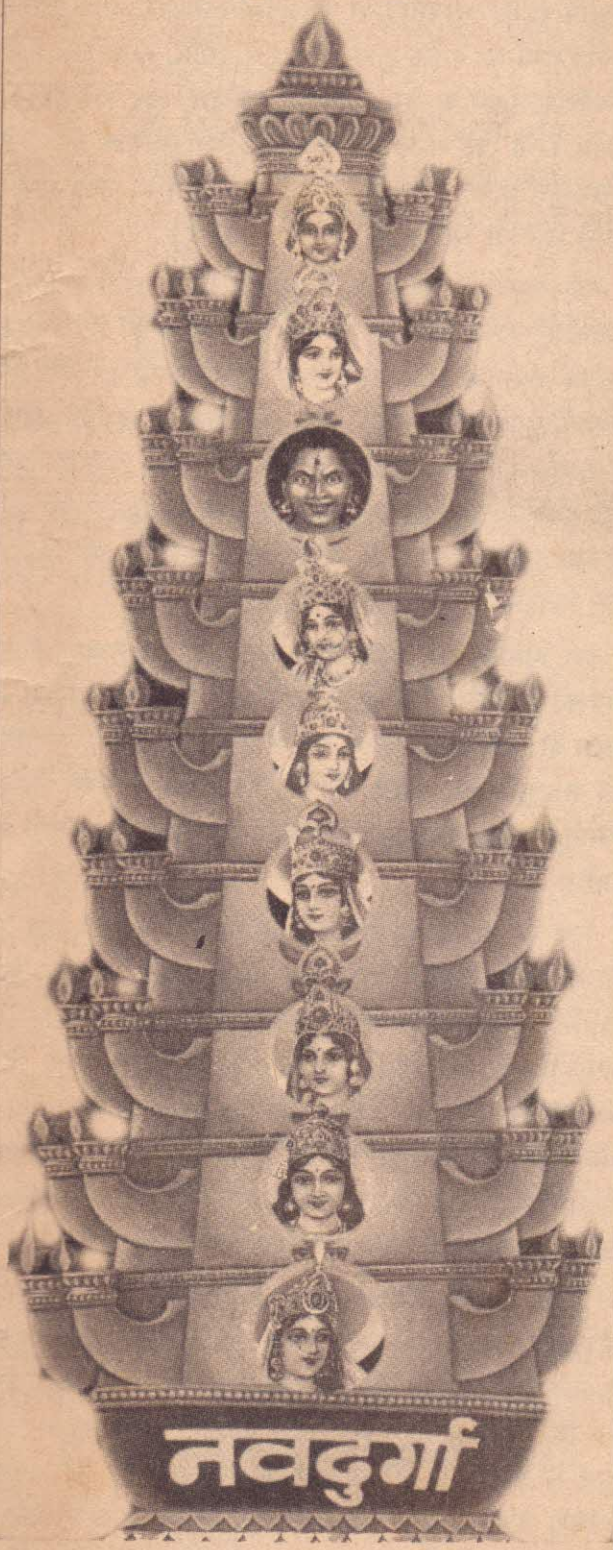

और कौन इससे मुक्त हो गया।

भगवती दुर्गा का तात्पर्य तो पूर्णतः भौतिक संकटों की समाप्ति ही है। भगवती दुर्गा को ''दुर्गति नाशक' कहा गया है अर्थात् दुर्गा वह शक्ति है जो जीवन में दुर्गति, दुःख देने वाली स्थितियों जीवन के रोग, दुर्बलता, दारिद्र्य, शत्रु जैसे विभिन्न 'दुर्गम दैत्यों' का शमन कर सकती हैं जैसे विभिन्न अस्त्रों से सुसजिज्त होकर रणभूमि में उपस्थित होती हैं, उसी प्रकार अपने भक्त या साधक की अपेक्षा करती हैं।

यही कारण है, कि भगवती दुर्गा के यथार्थ साधक अत्यंत उच्चकोटि के योद्धा, वीर एवं इतिहास पुरुष हुए हैं, क्योंकि उन्होंने अपने आप को इसी प्रकार सन्नद्ध किया था और तब भगवती दुर्गा उनके अन्दर अपनी पूर्ण प्रसन्नता, वेग एवं ओज के साथ समाहित हुई। छत्रपति शिवाजी महाराज, गुरु गोविन्द सिंह इसी श्रेणी के महापुरुष हुए हैं। साधक अपनी यही सन्नद्धता अपनी आंतरिक भावनाओं, साधना के प्रति लगन और गुरु के प्रति विश्वास से प्रकट करता है।

इस विवेचन का उद्देश्य मात्र इतना है, कि साधक जिस अवसर पर इस श्रेष्ठ दुःख, दारिद्र्य, शत्रुहंता साधना में प्रवृत्त हो, उस समय उसके मन में प्रबल संकल्प और दृढ़ता की भावभूमि हो। आधे मन से, भावनाओं में डूबते-तैरते, बलात् साधना करने से इसके फल की प्राप्ति संभव नहीं हो पाती।

सिंह की एक उपमा '**मृगपति**' भी है, जिसका अर्थ होता है, जो मृग की ही भांति चंचल मन पर आधिपत्य स्थापित कर ले। जिस प्रकार सिंह भीषण झपट्टा मार कर एक ही प्रहार में अपने शिकार का प्राणान्त कर देता है, उतनी ही दृढ़ता और प्रखरता से अपने मन दुर्बलताओं को समाप्त किया जा सके और इस लेख में जहां भगवती दुर्गा का ध्यान उल्लिखित किया गया है, वहां सिंह की इसी उपमा 'मृगपति' का उल्लेख इसी तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करने वाला है।

''**चैत्र की नवरात्रि**'' भगवती दुर्गा की साधना का वर्ष भर में सबसे अधिक सिद्ध मुहूर्त माना गया है। यही अवसर होता है, जब प्रकृति में उपस्थित उनकी चैतन्यता को उचित मंत्रों एवं विधान के द्वारा अपने अंदर उतारा जा सकता ह। देवी दुर्गा से बाह्य रूप से सहायता की प्रार्थना करने की अपेक्षा अधिक उचित तो यही होता है, कि साधक उनकी प्रखरता को स्वयं अपने शरीर के अणु-अणु में भर ले और फिर केवल किसी एक या दो समस्याओं का समाधान नहीं वरन समस्त समस्याओं का समाधान स्वयं ही कर सके।

चैत्र नवरात्रि ऋतुओं का संगम है, और शक्ति उपासकों के लिये यह महापर्व है। नवरात्रि को महारात्रि अर्थात् महोत्सव स्वरूप में सम्पन्न करने की प्रथा वेदोक्त काल से चली आ रही है। देवी भागवत् के अनुसार महाशक्ति ही शारीरिक विकार मोह, अन्धकार, आलस्य, राग, द्वेष तथा वासना के प्रतीक मधु-कैटभ, महिषासुर, शुंभ-निशुंभ, धूम्रलोचन, चण्ड-मुण्ड, रक्तबीज का नाश धर्मरूपी सिंह पर आरूढ़ होकर प्रभुत्व स्थापित करने वाले विभिन्न अस्त्र शस्त्रों से लक्ष दुष्प्रवृत्ति रूपी असुरों का विनाश कर देती है। भगवती जगदम्बा ही तृतीय नेत्र से ज्ञान की वर्षा कर ज्ञानियों को अमृत प्रदान करती है। शक्ति के इस जगदम्बा रूप का विस्तृत विवेचन मार्कण्डेय पुराण में आया है और **इसमें भगवती दुर्गा स्वयं कहती है कि जब-जब संसार में दानवी बाधा उपस्थित होगी तब-तब अवतार लेकर मैं शत्रुओं का संहार करूंगी।** मनुष्य जीवन में अज्ञान रूपी अन्धकार फैला हुआ ही है। इसमें शारीरिक विकार मोह, अन्धकार, आलस्य, राग-द्वेष, अंहकार, वासना भरी पड़ी है इनका नाश कर जीवन में चेतना प्राप्त करने हेतु नवरात्रि सर्वोत्तम पर्व है।

इस वर्ष विक्रम सम्वत् 2062 में नवरात्रि 9 अप्रैल 2005 को प्रारम्भ हो रही है और इसका समापन 18 अप्रैल 2005 को हो रहा है। इन नौ दिनों में आप साधक हैं शिष्य हैं तो शक्ति आराधना पूर्ण विधि विधान सहित नित्य सम्पन्न करें।

प्रथम दिन विशेष पूजन नीचे दी गई विधि के अनुसार सम्पन्न करना है और बाकी दिनों में गणपति पूजन, गुरु पूजन सम्पन्न करके ही प्रत्येक दिन अपनी कामना के अनुसार विशिष्ट नवदुर्गा का पूजन एवं दुर्गा मंत्र जप सम्पन्न करना है।

इस साधना में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री के साथ साथ नियमों का पालन विशेष आवश्यक है।

साधना सामग्री

'आद्या शक्ति दुर्गेश्वरी यंत्र', श्री साफल्य गुटिका, शक्ति माला।

साधना विधान

साधक प्रातः काल स्नान करके आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। सामने चौकी के ऊपर लाल वस्त्र बिछाकर भगवती दुर्गा का सुन्दर सा आकर्षक चित्र स्थापित करें। भगवती के चित्र के सामने कुंकुम से रंगे हुए लाल चावल की ढेरी बना कर उस पर '**आद्या शक्ति दुर्गेश्वरी यंत्र**' को स्थापित करें। इसके पश्चात् निम्न विधि से पूजन करें-

आचमन

दाहिने हाथ में जल लेकर स्वयं आचमन करें -

ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः ॥
ॐ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः ॥
ॐ क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः ॥

इसके बाद हाथ धो लें।

आसन शुद्धि

आसन पर जल छिड़कें।

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनं ॥

संकल्प

दाहिने हाथ में जल लें -

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतो विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अस्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेत वाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखंडे आर्यावर्ते देशान्तर्गते पुण्य क्षेत्रे कलियुगे, कलि प्रथम चरणे अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (अपना गोत्र बोलें) अमुक शर्माऽहं (अपना नाम बोलें) सकल दुःख दारिद्रय निवृत्तिमम मनोकामना पूर्ति निमित्तं भगवती दुर्गा सिद्धि प्राप्ति निमित्तं च पूजनं करिष्ये ॥

जल छोड़ दें।

गणपति पूजन

ॐ गं गणपतिम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि नमः। पुष्पासनं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। तिलकं अक्षतान् च समर्पयामि। धूपं दीपं नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥

गुरु पूजन

इसके बाद पंचोपचार से या षोड़शोपचार से गुरुदेव का पूजन करें और प्रार्थना करें -

गुरु र्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

कलश स्थापन

अपनी बायीं ओर जमीन पर कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर कलश स्थापन करें। उसमें जल भर दें। इसके बाद कलश में चारों ओर कुंकुम से चार तिलक लगा दें। उसमें सुपारी, अक्षत, दूब और पुष्प तथा गंगाजल डालें। ऊपर नारियल रख दें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यां महो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यातम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मइषाण ॥

इसके बाद कुंकुम से रंगे हुए चावल को दाहिने हाथ से निम्न मंत्र को पढ़ते हुए कलश पर चढ़ावें।

ॐ महाकाल्यै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ महासरस्वत्यै नमः। ॐ नन्दजायायै नमः। ॐ धूमायै नमः। ॐ शाकम्भर्यै नमः। ॐ भ्रामर्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः ॥

भगवती दुर्गा के चित्र को पानी की छींटा देकर साफ कपड़े से पोंछ दें और पूजन करें -

ध्यान -

दोनों हाथ जोड़ें

श्री जगदम्बायै ध्यानं समर्पयामि नमः ॥

आवाहन

भगवती का आवाहन करें -

ॐ जगदम्बायै आवाहनं समर्पयामि नमः ॥

स्वागतम

दोनों हाथ में पुष्प लेकर स्वागत करें -

ॐ जगदम्बायै स्वागतं समर्पयामि नमः ॥

पाद्य

जल में दूध मिलाकर दूब में चढ़ावें।

ॐ जगदम्बायै पाद्यं समर्पयामि नमः ॥

आचमन

लौंग तथा जायफल जल में डाल कर चढ़ायें -

ॐ जगदम्बायै आचमनं समर्पयामि नमः ॥

अर्घ्य

दूब, तिल, चावल एवं कुंकुम जल में डाल कर चढ़ायें -

ॐ जगदम्बायै अर्घ्यं समर्पयामि नमः ॥

मधुपर्क

दूध में दही, घी एवं शहद मिला कर चढ़ायें -

ॐ जगदम्बायै मधुपर्कं समर्पयामि नमः ॥

स्नान

स्नान हेतु जल चढ़ायें -

परमानन्द बोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये। सांगोपांग मिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश ते ॥

वस्त्र

वस्त्र के स्थान पर मौली चढ़ायें -

ॐ जगदम्बायै वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि नमः।
गन्धं अक्षतान् समर्पयामि नमः॥

पुष्प, धूप, दीप

ॐ जगदम्बायै पुष्पं धूपं दीपं दर्शयामि नमः॥

नैवेद्य, दक्षिणा

ॐ जगदम्बायै नैवेद्यं निवेदयामि नमः।
दक्षिणां द्रव्यं समर्पयामि नमः॥

मंत्र

'शक्ति माला' से 5 माल निम्न मंत्र का जप करें -

॥ ॐ दुं दुर्गे दुर्गतिनाशाय दुं ॐ फट्॥

दुर्गा शक्ति की यह साधना नवरात्रि में नौ दिन सम्पन्न करनी है प्रत्येक दिन पांच माला मंत्र जप के अलावा नवार्ण मंत्र *(ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे)*, **दुर्गा सप्तशती पाठ इत्यादि भी सम्पन्न करें। यथा संभव एक समय भोजन कर नौ दिन तक निरन्तर साधना करें।**

आरती

इसके पश्चात मां भगवती जगदम्बा की आरती सम्पन्न करें।

समर्पण

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान महेश्वरि॥

दोनों हाथ में पुष्प लेकर भगवती को चढ़ावें तथा प्रसाद वितरण करें।

नवरात्रि साधना के नौ दिन पूर्ण होने पर लाल वस्त्र में बांध कर यंत्र गुटिका और माला को जल में प्रवाहित कर दें। कलश के जल को सारे घर में छिड़कें, शेष जल तुलसी के पौधे में डाल दें। कलश के ऊपर जो नारियल है, उसे प्रसाद के रूप में सपरिवार ग्रहण करें।

यदि सम्भव हो, तो अन्तिम दिन किसी कुमारी कन्या को भोजन करा कर उचित दक्षिणा प्रदान करें।

साधना सामग्री - 360/-

+ + + + + + + + + + + + + + +

यह जीवन कामना परक जीवन है और कामना सिद्धि के लिये नवरात्रि से बढ़कर कोई श्रेष्ठ मुहूर्त नहीं है। दुर्गा शक्ति तो मां भगवती आद्या शक्ति है जिनका तो पूजन हमें निरन्तर करना है मां का आशीर्वाद बालक को निरन्तर चाहिये साथ ही अपने जीवन में कामनाओं की पूर्ति हेतु नवदुर्गा से सम्बन्धित विशेष मंत्र एवं साधना दी जा रही है मूल साधना तो साधक अवश्य सम्पन्न करें और उसके पश्चात् अपनी इच्छा कामना के अनुसार नवरात्रि में अलग-अलग दिनों में अलग-अलग कार्यों हेतु नवदुर्गा साधना सम्पन्न करें।

नवदुर्गा के नौ स्वरूप

नवदुर्गा के नौ स्वरूप **शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्री, महागौरी, सिद्धिरात्री** हैं। नवरात्रि के नौ दिनों में प्रत्येक दिन नवदुर्गा के एक-एक कर नौ दिन में सभी रूपों का मंत्र जप करना है। अर्थात् प्रथम दिन शैलपुत्री, दूसरे दिन ब्रह्मचारिणी ..... नवें दिन सिद्धिरात्री की साधना सम्पन्न करनी है।

प्रथम दिवस 09-04-2005

सर्वमनोकामना पूर्ति हेतु

नवरात्रि का प्रथम दिवस पर भगवती जगदम्बा **'शैलपुत्री'** के रूप में साध्य है, शैलपुत्री की साधना साधक अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु करता है। अपने जीवन की भौतिक और आध्यात्मिक समस्त इच्छाओं को पूर्णता देने के लिए यह साधना महत्वपूर्ण है, जिसे सम्पन्न कर साधक अपनी इच्छाओं को पूर्ण कर सकता है।

साधना विधानः लकड़ी के बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछायें तथा उस पर केसर से *'शं'* अंकित करें, उसके ऊपर **'मनोकामना पूर्ति गुटिका'** स्थापित करें तथा साधक शैलपुत्री का ध्यान करते हुए लाल रंग का पुष्प चढ़ाये -

वन्दे वांछितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढ़ां शूलधरं मातरं च यशस्विनीं॥

इस ध्यान के बाद गुटिका का सामान्य पूजन करे, घी का अखण्ड दीपक लगायें तथा भगवती से अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर नैवेद्य चढ़ायें, फिर 108 चिरमी के दानों को एक-एक कर निम्न मंत्र बोलते हुए गुटिका पर चढ़ायें

मंत्र

॥ ॐ शं शैलपुत्र्यै फट्॥

इसके पश्चात् पुनः मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर भगवती की आरती करें।

न्यौछावर - 95/-

+ + + + + + + + + + + + + + +

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

द्वितीय दिवस 10-04-2005

भगवती दुर्गा के बिम्बात्मक दर्शन तथा आरोग्यता प्राप्त करने हेतु

नवरात्रि के दूसरे दिन '**ब्रह्मचारिणी**' का स्वरूप का पूजन होता है। भगवती आदिशक्ति के ब्रह्मचारिणी स्वरूप की साधना करने से साधक के घर में आरोग्यता स्थापित होती है। यदि घर में कोई सदस्य निरन्तर रोगग्रस्त बना हुआ है या स्वास्थ्य ठीक होने पर भी स्वास्थ्य का अनुभव नहीं कर पाता, तो उसके लिये संकल्प कर परिवार का कोई सदस्य इस प्रयोग को सम्पन्न करे, तो वह अवश्य लाभ अनुभव करता है।

साधना विधानः लाल रंग के वस्त्र के ऊपर पीले रंग के चावलों की ढेरी बनाकर उस पर '**हरी हकीक माला**' स्थापित कर ब्रह्मचारिणी का ध्यान करें -

दधाना करपद्माभ्यामक्षमालां कमण्डलुम्।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा॥

ध्यान के पश्चात् माला का संक्षिप्त पूजन कर दूध से बना हुआ भोग अर्पित करें तथा उसी माला से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ ब्रं ब्रह्मचारिण्यै नमः॥

प्रयोग समाप्ति के बाद देवी की आरती कर प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर - 120/-

+ + + + + + + + + + + + + + +

तृतीय दिवस : 11-04-2005

समस्त बाधाओं के निराकरण तथा आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु

'**चन्द्रघंटा**' की साधना नवरात्रि के तृतीय दिवस पर सम्पन्न की जाती है। चन्द्रघंटा देवी रौद्र स्वरूपा है, जो साधक के समस्त दोष तथा पाप का क्षय कर उसके जीवन की सभी बाधाओं को समाप्त करती है। भगवती चन्द्रघंटा की कृपा प्राप्त कर साधक अपने आपमें अत्यन्त समृद्धशाली और ऐश्वर्यवान हो जाता है। आकस्मिक धन प्राप्ति और गुप्त धन प्राप्ति के लिये यह प्रयोग अत्यन्त श्रेष्ठ और अद्वितीय प्रयोग है।

साधना विधान : लकड़ी के बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर किसी ताम्रपात्र में '**चन्द्रघंटा दुर्गा यंत्र**' स्थापित कर चन्द्रघंटा देवी का ध्यान करें -

अखण्डजप्रवरारूढा चण्डकोपार्भटीयुता।

प्रसादं तनुतां मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥

ध्यान के पश्चात् साधक यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर कोई भी लाल रंग का फल अर्पित करें। इसके बाद 51 लाल पुष्प अर्पित करते हुए निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

॥ ॐ चं चं चं चन्द्रघण्टायै हुं॥

प्रयोग समाप्ति पर आरती करें।

न्यौछावर - 105/-

+ + + + + + + + + + + + + + +

चतुर्थ दिवस : 12-04-2005

सुख-सौभाग्य, धन-धान्य तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु

नवरात्रि के चतुर्थ दिवस '**कूष्माण्डा**' की साधना सम्पन्न की जाती है। कूष्माण्डा प्रयोग सम्पन्न करने वाले साधक के जीवन में धन-धान्य, ऐश्वर्य, सुख-सौभाग्य आदि की कमी नहीं रहती है। कूष्माण्डा प्रयोग गृहस्थ साधकों के लिये सौभाग्य प्राप्ति हेतु सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है।

साधना विधान : साधक पीले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर किसी ताम्रपात्र में '**सौभाग्यप्रदा यंत्र**' स्थापित कर कूष्माण्डा का ध्यान करें -

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिरप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डेति नमो नमः॥

फिर यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर, नैवेद्य अर्पण कर, 108 सफेद पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

॥ ॐ क्रीं कूष्माण्डायै क्रीं ॐ ॥

प्रयोग समाप्ति पर भगवती की आरती सम्पन्न कर प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर - 120/-

+ + + + + + + + + + + + + + +

पंचम दिवस : 13-04-2005

गृहस्थ सुख-शांति में वृद्धि तथा कलह समाप्ति हेतु

नवरात्रि के पांचवे दिन भगवती जगदम्बा के **'स्कन्द देवी'** स्वरूप की साधना सम्पन्न होती है। गृहस्थ सुख में न्यूनता हो या घर में कलह निरन्तर बना रहता हो या घर के सभी सदस्यों के मध्य कटुता और द्वेष उत्पन्न हो गया हो, तो उन सब में आपस में परस्पर प्रेम की वृद्धि तथा सुख-शांति के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाता है।

साधना विधान : अपने सामने लकड़ी का बाजोट रख कर उसके ऊपर पीले रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से *'ॐ'* लिखें, फिर उस पर किसी ताम्रपात्र में मंत्र सिद्ध **'गृहस्थ सुख यंत्र'** को स्थापित कर भगवती जगदम्बा का स्कन्द देवी स्वरूप का ध्यान करें -

सिंहासनगता नित्यं पद्माचितकरद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी॥

यंत्र का पूजन कर नैवेद्य अर्पित करें तथा 101 लाल रंग के फूल निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ायें -

मंत्र

॥ ॐ स्कन्दायै दैव्यै ॐ ॥

प्रयोग समाप्ति पर भगवती की आरती सम्पन्न करें तथा प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर - 140/-

+ + + + + + + + + + + + + + +

षष्ठम दिवस : 14-04-2005

शत्रु समाप्ति तथा अनुकूलता प्राप्ति हेतु

यदि व्यक्ति के आसपास विपरीत वातावरण निर्मित हो रहा हो और उसके शत्रु दिन-प्रतिदिन उसे हानि पहुंचाने के उपाय करते जा रहे हो, तो उसके लिए **'कात्यायनी प्रयोग'** सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है। कात्यायनी रौद्र स्वरूपा है और इनको भगवती दुर्गा का छठा स्वरूप माना जाता है।

साधना विधान : सामने रखे बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर काजल से गोल घेरा बनाकर उसमें अपने शत्रु का नाम लिखें तथा उस पर **'शत्रु मर्दन यंत्र'** स्थापित करें, इसके बाद कात्यायनी देवी का ध्यान करें -

चन्द्रासोज्ज्वकरा शार्दूलवरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्यात् देवी दानवघातिनी॥

ध्यान के बाद यंत्र का पूजन कर नैवेद्य अर्पित करें तथा **'काली हकीक माला'** से यंत्र के समक्ष निम्न मंत्र का 13 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ क्रौं क्रौं कात्यायन्यै क्रौं क्रौं फट्॥

मंत्र जप के पश्चात् आरती सम्पन्न कर प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर - 240/-

+ + + + + + + + + + + + + + +

सप्तम दिवस : 15-04-2005/16-04-2005

अकाल मृत्यु भय निवारण तथा व्यापार वर्द्धन हेतु

इस बार दो सप्तमी है अतः प्रथम सप्तमी को '**कालरात्रि**' का मंत्र जप एवं द्वितीय सप्तमी को '**दक्षिण काली**' का मंत्र जप करें।

'**कालरात्रि**' की साधना सम्पन्न करने से व्यक्ति के मन से अकाल मृत्यु भय समाप्त होता है तथा यह प्रयोग व्यापार करने वालों के लिये भी अत्यन्त उपयोगी है, इसे सम्पन्न करने पर उनके व्यापार में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि होती ही है।

नवरात्रि के सातवें दिन इस साधना को सम्पन्न करने से साधक अवश्य सफलता प्राप्त करता ही है।

साधना विधान : इस दिन साधक लाल रंग का वस्त्र बिछाकर '**कालरात्रि यंत्र**' का स्थापन कर कालरात्रि का ध्यान करें -

करालरूपा कालब्जा समानाकृतिविग्रहा।
कालरात्रि शुभं दद्याद् देवी चण्डाट्टहासिनी॥

फिर यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर नैवेद्य चढ़ाये तथा धूप-दीप-अगरबत्ती लगा कर '**हकीक माला**' से निम्न मंत्र की 9 माला मंत्र जप करें -

काल रात्रि मंत्र

॥ लीं क्रीं हुं ॥

दक्षिण काली मंत्र

॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हीं हीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हीं हीं हूं हूं स्वाहा॥

प्रयोग समाप्ति पर भगवती की आरती का प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर - 240/-

+ + + + + + + + + + + + + + +

अष्टम दिवस : 17-04-2005

श्रेष्ठ पति या पत्नी प्राप्ति तथा पूर्ण सौन्दर्य प्राप्ति हेतु

नवरात्रि के आठवें दिन '**महागौरी**' की साधना की जाती है। महागौरी परम सौभाग्य प्रदायक देवी है। स्त्रियां श्रेष्ठ पति प्राप्ति के लिये तथा पुरुष श्रेष्ठ पत्नी प्राप्ति के लिए इनकी उपासना करते है। इसके साथ गृहस्थ सुख में वृद्धि हेतु यह साधना आवश्यक है। अप्रतिम दिव्य सौन्दर्य प्राप्त करने के लिये साधक या साधिका इनकी साधना अवश्य सम्पन्न करें।

साधना विधान : अपने सामने बाजोट पर श्वेत रेशमी वस्त्र बिछाकर उस पर ताम्रपात्र में '**महागौरी यंत्र**' का स्थापन कर भगवती महागौरी का ध्यान करें -

श्वेतहस्तिसमारूढ़ा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेव प्रमोददा॥

यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर दूध से बना हुआ नैवेद्य अर्पित कर '**हकीक माला**' से निम्न मंत्र का 21 माल मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ श्रीं महागौर्यै ॐ॥

प्रयोग समाप्ति पर आरती सम्पन्न करें।

न्यौछावर - 240/-

+ + + + + + + + + + + + + + +

नवम दिवसः 18-04-2005

समस्त साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने हेतु

नवरात्रि का अंतिम दिन '**सिद्धिदायिनी दुर्गा**' का है। इस दिन साधक जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करने के लिए सिद्धिदायिनी की साधना करता है। इस दिन साधना करने से समस्त साधनाओं में सफलता

प्राप्त होने लग जाती है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद साधक वर्ष भर तक जितनी साधनायें करता है, उनमें उसे सफलता प्राप्त होती ही है। यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना सम्पन्न की जाय, तो भगवती जगदम्बा के प्रत्यक्ष बिम्बात्मक दर्शन भी सम्भव होते हैं।

साधना विधान : सफेद रंग का वस्त्र बिछाकर उस '**सिद्धिदायिनी दुर्गा यंत्र**' स्थापित करें। दुर्गा का ध्यान करें -

सिद्धि गन्धर्व यक्षाद्यैः असुरैरमरैरपि।
साध्यमाना सदाभूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी॥

यंत्र का पूजन कर, नैवेद्य अर्पित कर '**सर्व सिद्धि माला**' से 31 माला मंत्र जप करें -

मंत्र : *॥ ॐ शं सिद्धि प्रदायै शं ॐ॥*

प्रयोग समाप्ति पर आरती करें।

न्यौछावर - 240/-

+ + + + + + + + + + + + + +

साधक को तो इन सभी अद्वितीय प्रयोगों को नवरात्रि के अवसर पर अवश्य सम्पन्न करना चाहिये। प्रत्येक प्रयोग अपने आपमें साधक के जीवन को परिवर्तित करने वाला प्रयोग है। साधक चाहे तो प्रत्येक प्रयोग अथवा अपनी आवश्यकतानुसार किसी भी प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है। इतना अवश्य ध्यान रखें, कि यंत्र का स्थापन आप नवरात्रि के प्रथम दिवस पर ही करें तथा नित्य दैनिक पूजन कर निर्धारित दिवस पर साधना सम्पन्न करें तथा नवें दिन आरती कर पूर्णाहुति करें, तो अत्यधिक फलप्रद होगा। साधक प्रत्येक दिन किये गये प्रयोगों की सामग्री को नवरात्रि की समाप्ति के बाद किसी भी सोमवार के दिन नदी में प्रवाहित कर दें।

मनुष्य जीवन दुर्लभ क्यों?

हमारे ऋषि-मुनियों ने कहा है कि मनुष्य जीवन अपने आप में अद्भुत एवं महान् है। ईश्वर ने पृथ्वी पर चौरासी लाख योनियां बनाई है। जिनमें भटकने के बाद मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। क्योंकि मान्यतानुसार चौरासी लाख योनियों में पेड़ पौधों में 30 लाख, कीड़े-मकौड़ों में 27 लाख, पक्षीयों में 14 लाख, पानी के जीव जन्तुओं में 9 लाख और पशुओं में 4 लाख योनियां है। इसी कारण विवेक चुड़ामणि 5 में कहा गया है -

''दुर्लभं मानुषं देहं''

अर्थात् मनुष्य देह अत्यन्त दुर्लभ है। अतः आप स्वयं विचार कर इस दुर्लभ देह को ईश्वर भक्ति एवं शुभ कार्यों में व्यतीत करें।

दुर्गा जी की आरती

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी॥१॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोऊ नैना, चंद्रवदन नीको ॥२॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै॥३॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःखहारी॥४॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति॥५॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशिदिन मदमाती॥६॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥७॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥८॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

चौसट योगिनी गावत, नृत्य करत भैरव।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरु॥९॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहरता, सुख सम्पति करता॥१०॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

भुजा आठ अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
सब मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी॥११॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योति॥१२॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

हम अति दीन दुखी मां विपति जाल घेरे।
हम कपूत अति कपटी पर बालक तेरे॥१३॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

श्री अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै॥१४॥
ॐ जय अम्बे गौरी ....

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

नि:शुल्क उपहार

शत्रु बाधा निवारण यंत्र

व्यक्ति जब उन्नति की ओर अग्रसर होता है, तो उसकी उन्नति से, प्रतिष्ठा से ईर्ष्याग्रस्त होकर कुछ उसके मित्र ही शत्रु बन जाते हैं और उसे सहयोग देने के स्थान पर वे ही उसकी उन्नति के मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए प्रयासरत हो जाते हैं, ऐसे शत्रुओं से निपटना अत्यधिक कठिन होता है। ऐसी ही परिस्थितियों से निपटने के लिए यह "शत्रु बाधा निवारण यंत्र" आपके जीवन के लिए अत्यन्त अनुकूलता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा।

इस यंत्र को प्राप्त कर किसी भी दिन शुभ समय में (मैं समय हूं से श्रेष्ठ काल निर्धारण करें)। अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर दें तथा नित्य अगरबत्ती या दीपक दिखाते रहें और कुंकुम, अक्षत अर्पित कर *'ह्लीं'* मंत्र का 10 मिनट जप करें। एक माह तक ऐसा नित्य करें, फिर यंत्र को नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान-'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि 'मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं। एवं 20 पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप नि:शुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित **'शत्रु बाधा निवारण यंत्र'** 390/-(20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/-+ डाक व्यय 90/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमेन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें, आपका पत्र आने पर हम 300/-+ डाक व्यय 90/-=390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित **'शत्रु बाधा निवारण यंत्र'** भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें ।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - **342001,** (राजस्थान)

फोन - **0291 - 2432209, 2433623** टेलीफैक्स - **0291 - 2432010**

प्रत्येक साधना निःशुल्क

गुरुधाम दिल्ली

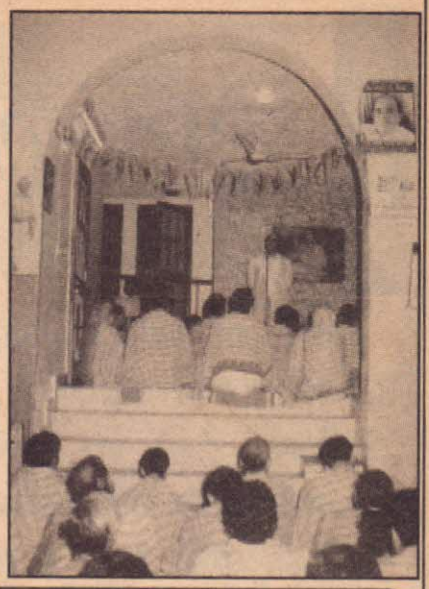

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती है, जो कि उस दिन शाम **6** से **8** बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

गुरुवार, 28-04-05 — नाभिदर्शना अप्सरा प्रत्यक्षीकरण प्रयोग

जिस प्रकार अन्य साधनाएं महत्वपूर्ण हैं, उसी प्रकार साधक के जीवन में सौन्दर्य साधनाओं का भी विशेष महत्व है, क्योंकि जिस मनुष्य में रस नहीं है, प्रेम नहीं है वह किसी अन्य साधना में भी सफल नहीं हो सकता है। किसी कवि ने कहा भी है - '**मनुष्य नहीं वो ठूंठ है, बहती जिसमें रसधार नहीं**'। अप्सरा साधना जहां देवताओं के लिए उचित मानी गई है, वहीं मनुष्य के लिए भी अत्यंत अनुकूल मानी गई है। इन्द्र दरबार की 108 अप्सराओं में नाभिदर्शना अपने आप में ही चिरयौवन, तरुणाई, और मादकता का साकार स्वरूप है। नृत्यकला, संगीत एवं मधुर वार्ता में निपुण में यह अप्सरा अपने साधक को जीवन में हर प्रकार के भोग प्रदान करती है। साधक के जीवन में धन की प्राप्ति इस साधना से स्वतः ही हो जाती है। अपनी देहयष्टि, रूप, हाव-भाव, हास्य-विनोद की शैली, सुरुचि प्रियता, श्रृंगार शैली से नाभिदर्शना अपने साधक को बरबस ही मुग्ध कर देती है। नाभिदर्शना की साधना मूलतः प्रिया अथवा मित्र रूप में सम्पन्न करने पर ही शीघ्र सफल होती है।

शुक्रवार, 29-04-05 — कुण्डलिनी षडचक्र जागरण साधना

यह किसी भी मनुष्य के जीवन का सौभाग्य होता है, जब उसे वह साधना प्राप्त होती है, क्योंकि कुण्डलिनी जागरण ही समस्त सिद्धियों का सार है। मूलाधार से लगाकर सहस्रार तक एक-एक कर चक्र जब जाग्रत होते है, तो साधक को अनेकों दिव्यानुभूतियां होती है।

सामने वाले व्यक्ति के मन की बातें जान लेना, दूर कहीं घट रही घटना को बैठे-बैठे देख लेना, अदृश्य शक्तियों से वार्तालाप करना और मानसिक तरंगों द्वारा दूरस्थ बैठे व्यक्ति से सम्पर्क करना यह सभी क्रियाएं कुण्डलिनी चक्रों के जागरण से होती है।

शनिवार, 29-04-05 — शिव कृपायुक्त पूर्णत्व प्राप्ति प्रयोग

व्यस्त जीवन, कार्यभार एवं कर्त्तव्यों के बोझ से व्यक्ति का जीवन एक मजदूर सा हो जाता है, और वह तनावों से चिन्ताओं से ग्रस्त हो जाता है।

कई बार तो वह मानसिक रोगी तक भी हो जाता है। इस प्रयोग के माध्यम से आप ध्यान की गहराई में उतरना प्रारंभ करेंगे, जिस प्रकार भगवान शिव शांत चित्त रहते है, उनकी कृपा से आप व्यस्त रहते हुए भी प्रफुल्लित रह सकेंगे, शांति का अनुभव कर सकेंगे। एक तरह से यह चिन्तामुक्ति व आनन्द सिद्धि प्रयोग भी है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्ही दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रुपये 240/- है, परन्तु आपको मात्र रुपये 460/- ही जमा करना हैं। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं है, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि परम्परा की इस पावनसाधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मंदिर में मंत्र जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें, तो और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन दिवसों को साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना केवल इन **3** दिनों के लिये **28-29-30** अप्रैल

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 240x5=Rs.1200/- **जमाकर के या उपरोक्त राशि का बैंक डाफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।**

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों के सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान **के नाम से बनाकर दिल्ली कार्यालय के पते पर भेजें आपका फोटो पांच सदस्यों के नाम पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जानी चाहिए पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।**

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊंचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का . .
* गुरु प्रदत्त शक्तिपात द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है . . .
* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों का जल से अमृत अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सांय ७ बजे प्रदान की जाएगी।

शक्तिपात युक्त दीक्षा

शीघ्र कार्य सिद्धि दीक्षा

छोटे मोटे कार्यों के लिए दैवीय सहायता की आशा रखने की अपेक्षा साधक को अपने पुरुषार्थ में विश्वास रखना चाहिए। मात्र भाग्य के भरोसे बैठने वाले की देवता भी सहायता करना पसन्द नहीं करते हैं। परन्तु कई बार ऐसा होता है, कि साधक बेहद प्रयास करने के बाद भी लक्ष्य को प्राप्त कर नहीं पाता, तब वह क्या करें?

यदि आप अपने मानस में किसी लक्ष्य को लेकर चल रहे हैं, और अभी तक उसे साकार रूप नहीं दे सके हैं, कारण कोई भी हो सकता है - साधनों का अभाव, मार्ग दर्शन का अभाव, आत्मविश्वास की कमी, प्रतिद्वन्द्विता या स्वयं के ही पूर्व व इह जन्मकृत दोष, कार्य में सैकड़ों प्रकार की बाधाएं उपस्थित होनी स्वाभाविक हैं।... परन्तु ये सभी अवरोध गुरु प्रदत्त शीघ्र कार्य सिद्धि दीक्षा द्वारा भस्मीभूत हो जाते हैं और साधक का सोचा हुआ कार्य पूरा होता है, यदि साधक पूर्ण विश्वास के साथ दीक्षा प्राप्त करें।

सम्पर्क: सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन: 011-27182248, टेली फैक्स: 011-27196700

श्रीमातङ्गी-त्रैलोक्य मङ्गल-कवच

जीवन में इच्छाऐं अनन्त है और इन इच्छाओं की पूर्ति मनुष्य की वाक् शक्ति एवं उसकी काम शक्ति से प्रकट होती है। जिसने जीवन में बोलना सीख लिया अर्थात् अपने अपने वचनों के आधार पर, दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने की कला प्राप्त कर ली वह जीवन में विशेष उन्नति की ओर अग्रसर होता है। मनुष्य के जीवन में दूसरा पक्ष आनन्द, भोग और काम का पक्ष है, जिसके जीवन में आनन्द, भोग और काम पूर्ण रूप से तृप्त नहीं हो पाते वह हर समय परेशान एवं उदास रहता है उसे अपना जीवन रसहीन लगता है।

वाक् सिद्धि और काम सिद्धि हेतु भगवान मतंग शिव की शक्ति भगवती मातंगी की साधना जीवन में वाणी और विलास प्राप्त करने की साधना है। मातंगी को 'उन्मादिनी शक्ति' कहा गया है और जीवन उन्माद, जोश प्राप्त कर ही जीवन जीया जा सकता है। जिसके जीवन में उन्माद नहीं, भाव नहीं, जोश नहीं वह व्यक्ति मृत्त प्रायः है। भगवती मातंगी के कवच का पाठ करने और गले में कवच को धारण करने से व्यक्ति के जीवन में जोश और उन्माद की स्थिति आती है। उसे ऐसा लगने लगता है कि मेरे अन्दर शक्ति का अजस्र प्रवाह है और मैं सारे कार्य कर सकता हूं। यही भगवती मातंगी के कवच का रहस्य है। जिसने धारण कर लिया और जो इसे नित्य पढ़ता है वह कामदेव-रति समान सौन्दर्ययुक्त बन कर जीवन में नित्य प्रति बसंत का भाव गीत प्रवाहित करता है और उसके आज्ञा चक्र में सरस्वती स्थापित होती है। ऐसे ही व्यक्ति समाज को नेतृत्व दे सकते है। इस कवच का सप्ताह में एक दिन पाठ अवश्य करें -

शुक्रवार की रात्रि को स्नान कर पीले वस्त्र धारण करें और अपने सामने मातंगी चित्र एवं कवच रख दें तथा गुरु पूजन कर मातंगी महाविद्या का पूजन करें। संकल्प, विनियोग के पश्चात् एक माला मंत्र जप करें और फिर कवच का पाठ प्रारम्भ करें। पांच बार पाठ करने के पश्चात् कवच को लाल डोरे में धारण कर लें।

विनियोग - *ॐ अस्य श्रीमातङ्गी-कवचस्य श्रीदक्षिणा-मूर्तिः ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीमातङ्गी देवता, चतुर्वर्ग-सिद्धये पाठे विनियोगः।*

ऋष्यादि-न्यास- *श्रीदक्षिणा-मूर्ति-ऋषये नमः शिरसि, विराट्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीमातङ्गी-देवतायै नमः हृदि, चतुर्वर्ग-सिद्धये पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।*

ध्यान

श्यामाङ्गी शशि-शेखरां त्रि-नयनां रत्न-सिंहासन-स्थिताम्।
ध्यायेऽहं वेदैर्बाहु-दण्डैरसि-खेटक-पाशांकुश-धराम्! ॥

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्ये फट् स्वाहा॥

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

श्रीमातङ्गी-त्रैलोक्य-मङ्गल-कवच

ॐ शिरो मातङ्गिनी पातु भुवनेशी तु चक्षुषी।
तोडला कर्ण-युगलं, त्रिपुरा वदनं मम॥१॥

पातु कण्ठे महा-माया, हृदि माहेश्वरी तथा।
त्रिपुरा पार्श्वयोः पातु, गुदे कामेश्वरी मम॥२॥

ऊरु-द्वये तथा चण्डी, जङ्घयां च रति-प्रिया।
महा-माया पद-युग्मे, सर्वाङ्गेषु कुलेश्वरी॥३॥

अङ्ग-प्रत्यङ्ग चैव, सदा रक्षन्तु वैष्णवी।
ब्रह्म-रन्ध्रे सदा रक्षेन्, मातङ्गी नाम-संस्थिता॥४॥

ललाटे रक्षयेन्नित्यं महा-पिशाचिनीति च।
नेत्राभ्यां सुमुखी रक्षेद्, देवी रक्षेत् तु नासिका॥५॥

महा-पिशाचिनी पश्चात् मुखे रक्षतु सर्वदा।
लज्जा रक्षतु मां दन्ते, चोष्ठौ सम्मार्जनी-करी॥६॥

चिबुके कण्ठ-देशे च, ठङ्कार-त्रितयं पुनः।
स-विसर्गं महा-देवि! हृदयं पातु सर्वदा॥७॥

नाभिं रक्षतु मां लोला, कालिकाऽवतु लोचने।
उदरे पातु चामुण्डा, लिङ्गे कात्यायनी तथा॥८॥

उग्र-तारा गुदे पातु, पादौ रक्षतु चाम्बिका।
भुजौ रक्षतु शर्वाणी, हृदयं चण्ड-भूषणा॥९॥

जिह्वायां मातृका रक्षेत्, पूर्वे रक्षतु पुष्टिका।
विजया दक्षिणे पातु, मेधा रक्षतु वारुणे॥१०॥

नैर्ऋत्यां श्रद्धया रक्षेत्, वायव्यां पातु लक्ष्मणा।
ऐशान्यं रक्षयेद् देवी, मातङ्गी शुभ-कारिणी॥११॥

सुवेशा चाग्नेयें रक्षेद्, बगला पातु चोत्तरे।
ऊर्ध्वं पातु महा-देवी, देवानां हित-कारिणी॥१२॥

पाताले पातु मां नित्यं, विशानी विश्व-रूपिणी।
प्रणवं च ततो माया, काम-बीजं च कूर्चकम्॥१३॥

मातङ्गिनी ङे-युतास्त्रं, वह्नि-जायाऽवधिर्मनुः।
सौर्द्वैकादश-वर्णा सा, सर्वत्र पातु मां सदा॥१४॥

॥ ध्यान ॥

श्याम अंगों वाली अपने शीर्ष भाग में चन्द्रमा को धारण की हुई, तीन नेत्रों वाली, रत्न सिंहासन पर विराजमान, चारों भुजाओं में दण्ड, तलवार, पाश और अंकुश धारण की हुई, भगवती मातंगी का मैं ध्यान करता हूं।

॥ मातंगी-त्रैलोक्य-मंगल-कवच ॥

हे भगवती मातंगी! आप मेरे सिर की रक्षा करें। भगवती भुवनेश्वरी मेरे दोनों नेत्रों की रक्षा करें। दोनों कानों की तोडला तथा मेरे मुख की रक्षा भगवती त्रिपुरा करें। ऐसी भगवती मातंगी को मैं बार-बार नमस्कार करता हूं॥१॥

हे भगवती महामाया! आप मेरे कंठ की रक्षा करें। देवी माहेश्वरी मेरे हृदय की रक्षा करें। भगवती त्रिपुरा मेरे बगलों की त्रिपुरा तथा गुदा की रक्षा कामेश्वरी करें। ऐसी भगवती मातंगी को मैं नमन करता हूं॥२॥

हे भगवती चण्डी! आप मेरे दोनों जंघाओं की रक्षा करें। भगवती रति-प्रिया मेरी जिह्वा की रक्षा करें। मरे दोनों पैरों की रक्षा महामाया करें तथा सभी अंगों की रक्षा भगवती कुलेश्वरी करें। ऐसी भगवती मातंगी को मैं बार-बार नमन करता हूं॥३॥

हे भगवती वैष्णवी! आप मेरे अंग-प्रत्यंगों की रक्षा करें। भगवती मातंगी मेरे बाह्य रंध्र की रक्षा करें। ऐसी भगवती मातंगी को मैं नमन करता हूं॥४॥

हे महा पिशाचनी! आप मेरे ललाट की रक्षा करें। मेरे दोनों नेत्रों की रक्षा भगवती सुमुखी करें तथा नासिका की रक्षा देवी करें। ऐसी कल्याणकारी भगवती मातंगी को मैं नमन करता हूं॥५॥

हमारे पुष्ठ भाग की रक्षा महापिशाचनी करें तथा हृदय भाग की सदैव सुरक्षा करें। मेरे दांतों की रक्षा लज्जादेवी सदैव करें तथा दोनों अशष्ट भागों की सुरक्षा समाजनी करें। ऐसी भगवती मातंगी को मैं नमन करता हूं॥६॥

हे महादेवी! आप मेरे चिबुक भाग की रक्षा करें। आप मेरे कंठ की सदैव रक्षा करें तथा हे महादेवी! आप मेरे हृदय भाग की रक्षा करें। ऐसी भगवती मातंगी को मैं नमन करता हूं॥७॥

हे भगवती लोला! आप मेरे नाभि भाग की रक्षा करें। मेरे दोनों नेत्रों की रक्षा कालिका देवी करें। हे भगवती चामुण्डा! आप मेरे उदर भाग की रक्षा करें तथा गुप्त अंगों की रक्षा भगवती कात्यायनी करें। इस महादेवी को मैं नमस्कार करता हूं॥८॥

हे भगवती उग्रतारा! आप मेरे गुदा भाग की रक्षा करें। मेरे दोनों पैरों की रक्षा अम्बिका तथा दोनों भुजाओं की रक्षा सर्वाणी करें। मेरे हृदय भाग की रक्ष चण्ड-मुण्ड देवी करें। ऐसी कल्याणकारी भगवती मातंगी को मैं नमन करता हूं॥९॥

हे भगवती मातृका! आप मेरे जिह्वा की रक्षा करें। पूर्व दिशा में मेरी रक्षा भगवती पुष्टि करें। दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा भगवती विजया करें तथा उत्तर दिशा में मेरी रक्षा भगवती मेधा करें। ऐसी भगवती मातंगी को मैं बार-बार नमस्कार करता हूं॥१०॥

हे भगवती श्रद्धा! आप मेरी नैऋत्य दिशा में रक्षा करें। भगवती लक्ष्मणा वायव्य दिशा में मेरी रक्षा करें। भगवती शुभकारणी ईशान दिशा में मेरी रक्षा करें। ऐसी भगवती मातंगी को मैं नमन करता हूं॥११॥

हे भगवती सुवेशा! अग्निकोण में आप मेरी रक्षा करें। उत्तर दिशा में भगवती बगलादेवी मेरी रक्षा करें। देवों की हितकारणी उर्ध्व दिशा में मेरी रक्षा करें। ऐसी भगवती मातंगी को मैं नमस्कार करता हूं॥१२॥

हे भगवती विश्व रूपिणी! पाताल में आप मेरी रक्षा करें। भगवती माया मेरे प्रणय भाग तथा काम बीज की रक्षा करें। ऐसी भगवती मातंगी को मैं नमन करता हूं॥१३॥

हे भगवती मातंगी! आप एकादश वर्णों से युक्त मंत्रों से सदैव मेरी रक्षा करें। ऐसी भगवती मातंगी को मैं नमन करता हू॥१४॥

इस प्रकार कवच का पाठ कर अपने सामने रखें मातंगी कवच को आज्ञा चक्र, ललाट और दोनों चक्षुओं को स्पर्श करा कर धारण कर लें। इस कवच को धारण करने से ही देह में अद्भुत शक्ति का संचार होने लगता है।

न्यौछावर - 600/-

नवरात्रि साधना शिविर

09-10 अप्रैल 2005

मां भगवती महामाया साधना शिविर, सक्ती

शिविर स्थल: सरस्वती शिशु मंदिर, सक्ती (छ.ग.)

आयोजकः रायपुरः दिनेश सैनी - 0771-2534279/5095279/5052028 ○वव्ला उपाध्याय - 0771-2241314 ○**बिलासपुरः** आर.सी.सिंह - 07817-234343 ○लाकेश राठौर - 09300-321783 ○आर.आर.साहू - 07752-252273 ○रंजना शर्मा - 0775-224444 ○**सक्तीः** सुदामा चन्द्रा - 07757-208476 ○वेद प्रकाश श्रीवास - 283759 ○नारायण आठवानी - 208437 ○गजानंद गोयल - 233062 ○लोचन प्रसाद राठौर - 274004 ○चितरंजन पटेल - 233045 ○विजय अग्रवाल ○जवाहर लाल धिरहे ○शिव देवांगन ○**कोरबाः** आर. के. सोनी - 07759-226851 ○**दीपिकाः** भोला शंकर निषाद - 07815-271680 ○**जांजगीरः** राधेश्याम साहू - 07817-222251○**चाँपाः** संतोष सोनी - 098265-16245 ○**रायगढ़ः** खुशीराम डडसेना - 07762-221698 ○**खरसिंयाः** जी.एल.दुबे - 07762-202359 ○**छालः** मुण्डा सिंह ठाकुर - 07762-277845 ○**राजापालीः** भूपेन्द्र वर्मा - 07757-283493 ○**अंबिकापुरः** विवेक श्रीवास्तव - 07774-240168 ○**रानीपरतेवाः** गंगा राम साहू - 07701-260190 ○**शिवरीनारायणः** जीवन लाल कुंभकार ○**तुमान (पाली):** सिया राम लरेठ ○**रामपुर (कोरबा):** कु. गौरी पार्वती साहू ○**जैजैपुरः** खम्मन सिंह कंवर ○**डबराः** जयचंद पटेल ○**खरसियाः** अमृत लाल पटेल ○**राजनगरः** के.के.चन्द्रा - 07658-267017 ○**संबलपुरः** सदानंद पंडा - 094371-58514 ○**टाटानगरः** रामबाबू सोनकर - 0657-3104480 ○**जगदलपुरः** संजय सोम - 07782-221737** ○

✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

15-16 अप्रैल 2005

महारुद्राभिषेक साधना शिविर, कन्हान

शिविर स्थल: जवाहर हॉस्पीटल के आगे, टेकाडी बस स्टॉप के पास, कन्हान

कन्हान रेल्वे स्टेशन और बस स्टॉप से २ कि.मी. दुरी पर नागपुर - जबलपुर रोड़ पर है।

आयोजकः कन्हानः भाऊराव जी ठाकरे - 098235-85275 ○रामराव गुरारी साहब - 07102-234177 ○छावड़े गुरुजी- 236023 ○दिलीप बेलसेर ○बागड़ी सर ○विनायक हिवसे ○रामकृष्ण चौधरी - 236796 ○**पारशिवनीः** अनिल साठवणे - 225503 ○**नागपुरः** एन. आर. निनावे - 09822722055 ○किशोर सिंग बैंस - 09225224818 ○ठाकुर छत्रपाल सिंग ○पडोके साहेब - 09422105236 ○एम.आर.माकोडे - 2706839 ○चेतन सिंग चौहान - 07123492584 ○नरेन्द्र दे. पटेल - 09422147983 ○**ब्रह्मपुरीः** सुधिर भाउ सेलोकर - 07177272328 ○**टेकाड़ीः** सुरेश गुरब - 07102234252 ○उमराव मोहाडे ○**वाघोलीः** मारोतराव काकड़े ○बाबुराव काकळे ○**बखारीः** राजाराम गौतम ○भगवान कडू ○**माहूलीः** निककंठराव कुसुबे - 244117 ○**बेलडोंगरीः** ठाकरे साहेब ○घनश्याम हिवसे ○**सावनेरः** गिताबाई बाली - 07113232715 ○**येरखेड़ाः** वसंतरावजी काळे - 07109-?286350 ○**वाघोडाः** रमेश चौधरी ○**कामठी कॉलरीः** कन्हैया बाबू - 234003 ○**मौदाः** रवि ढोमणे ○**पिपळा ब्रा.:** दशरथ जी वानखेडे - 07165-226667 ○**मोहपाः** प्रशांत भिखंडे ○**यवतमालः** विनोद कापड़े - 07238-264118 ○बाकासाहेब जोल्हे - 264164 ○**भंडाराः** दिनेश निकम ○प्रशांत परसोडकर ○**गोंदियाः** वसंत ठाकुर ○**कोराडीः** परमानंद बोरकर - 07109-263001 ○कापसेजी साहेब ○मोहन बेलेकर ○**चंद्रपुरः** सुभाष सिंह गौर ○**कामठीः** प्रकाश लाखे ○**सावंगीः** ईश्वर मेलूरकर ○विठ्ठलराव काकडे ○**काटोलः** नरेश महूकर - 07112223076 ○**वर्धाः** डॉ पटेल - 07152248704 ○

✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

07-08 मार्च 2005

महाशिवरात्रि साधना शिविर, वाराणसी

शिविर स्थल: कुश स्थली मैदान, वाराणसी

आयोजकः वाराणसी : शिव नाथ अग्रवाल - 0542-3268559 ○आर.सी.सिंह - 09415343066 ○जटा शंकर सिंह - 3411462 ○मदन मोहन श्रीवास्तव- 09839073474 ○डॉ.ए.के.सिंह- 0941300185 ○आनन्द मूर्ति मिश्रा - 2224751 ○रामदुलार सर्राफ - 09415076862 ○वेद प्रकाश जायसवाल- 09415446682 ○के.के.मिश्रा - 2506289 ○एच.एन.सिंह बिसेन - 09415318363 ○शशिकांत अस्थाना - 3410240 ○कैलाश सिंह - 09415018944 ○संदीप कुमार - 2224295 ○ओमप्रकाश सिंह एवं **सिद्धाश्रम साधक परिवार, रेवसां, चन्दौली** - 09415444536 ○**मिर्जापुरः** संजय मिश्रा - 09810195379 ○**शाहजहांपुरः** शक्ति प्रताप सिंह - 09415119323 ○रामबाबू सक्सेना ○प्रमोद मिश्रा ○**लखीमपुरः** राजकुमार रस्तोगी - 05872-257568 ○**कटनीः** एस.पी.सिंह ○**शहडोलः** कश्यप श्रीवास्तव - 094251-83471 ○**पटनाः** संजय कुमार सिंह ○**कानपुरः** प्रमोद यादव - 0512-2216571 ○भदोही : झगड़ू प्रसाद ○मेवा लाला ○**जमनियाँः** शैलेन्द्र कुमार सिंह - 09415389079 ○मनीष श्रीवास्तव - 09415242455 ○**रायबरेलीः** एन.सी.सिंह ○**रामनगरः** अच्छे लाल यादव ○अशोक कुमार शुक्ला - 05474-275007 ○कैलाश सिंह - 09415648215 ○**बिलासपुरः** दिनेश सैनी - 09425211588 ○**अम्बिकापुरः** विवेक श्रीवास्तव - 07744-223168 ○**बहराइचः** राजेन्द्र त्रिपाठी - 09415165411 ○**फैजाबादः** मणिन्द्र पाण्डे - 09415076905 ○**रायपुरः** के.के.तिवारी - 0771-2442680○ **विदिशा** : एन.के.श्रीवास्तव - 0942549852○**राजनगर** : के.के.चन्द्रा - 07658-267017○बी.के.गोस्वामी - 264822○**बोकारो** : एस.के.बरीयार-06654-334376 ○**मधुबनीः** गगनदेव - 287280○

✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

24-25 मार्च 2005

होली महोत्सव, जोधपुर

परमपूज्य गुरुदेव डॉ.नारायण दत्त श्रीमाली जी की कृपा तले एवम् वन्दनीय माता भगवति के चरणारविन्दों तले जोधपुर की दिव्यतम भूमि में आप सभी गुरु भाई बहनों को प्यार भरा आंमत्रण, हम तो केवल अपने हृदय के भावों के द्वारा आपसे निवदेन कर सकते है। आप सभी सद्गुरुदेव के आत्म अंश है। आप अवश्य ही आएंगे। - समस्त जोधपुर स्टॉफ

✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

19, 20, 21 अप्रैल 2005

निखिल जयन्ती महोत्सव, फैजाबाद

शिविर स्थल: जी.आई.सी ग्राउण्ड, फैजाबाद

आयोजकः फैजाबादः अलख कुमार पाण्डेय - 05278-245851/323395 ○डॉ. रुद्र प्रताप सिंह - 09415047594 ○मणीन्द्र कुमार पाण्डेय - 09415076905 ○दीनानाथ शुक्ला ○राकेश कुमार पाण्डेय - 09839580058 ○राम खेलावन ○रमेशचन्द्र गर्ग ○रवीन्द्र कुमार पाण्डेय ○गणेश शंकर गुप्ता ○रमेश चन्द्र गुप्ता ○राजेन्द्र गुप्ता ○राज कपूर ○गोकुल प्रसाद ○राजू माझी ○विनय कुमार ○बाबू भाई ○रामतेज ○अनिल कुमार गुप्ता ○अंजनी सिंह ○राज कुमार तिवारी ○एम.पी.यादव ○निशाकान्त पाण्डेय ○डॉ. सोनी सावित्री ○राम आधार ○राम इकबाल ○दीवानचन्द्र ○हरिप्रसाद ○आनन्द ○ओम प्रकाश जायसवाल ○सभापति पाठक ○विद्यापति सहाय ○रमेश गुप्ता ○अंगद पटेल ○**सिद्धाश्रम सहायक परिवार, रामनगरः** अशोक कुमार शुक्ला एवं श्रीमती सरोज शुक्ला - 05274-275007 ○अच्छेलाल यादव ○कैलाश सिंह ○श्रीमती सरोज शुक्ला ○**सिद्धाश्रम सहायक परिवार, जहाँगीरगंजः** अरुण कुमार तिवारी ○**अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, शाहजहाँपुरः** वी.के.भाई - 05842-311908 ○रामबाबू ○सुनील टण्डन ○मदल लाल गुप्ता ○राम नरेश ○प्रमोद मिश्रा ○**अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, लखनऊः** बी.सी.शर्मा ○बसन्त श्रीवास्तव - 09415001514 ○विवेक मिश्रा - 09839133188 ○**अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, रायबरेलीः** एन.सी.सिंह ○ जगदम्बा सिंह ○**अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, सुल्तानपुरः** भरतलाल गुप्ता ○राज कुमार तिवारी ○**अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, प्रतापगढ़ः** कमलेश्वर पाण्डेय - 09415188288 ○डॉ. रवि श्रीवास्तव ○**अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, मिर्जापुरः** संजय मिश्रा ○ अमृतांशु मिश्र ○**अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, बहराइचः** अखिलेश्वर कुमार पाण्डेय - 09415160759 ○पतन्जलि कुमार पाण्डेय ○आशीश कुमार मौर्या ○राजेन्द्र त्रिपाठी ○**अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, इलाहाबादः** एस.के.मिश्रा - 09415237197 ○अजीत कुमार - 0532-250006 ○**अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, बस्ती (खलीलाबाद):** धीरेन्द्र कुमार पाण्डेय एवं श्रीमति किरन पाण्डेय - 09415717002 ○शैलेन्द्र मिश्रा ○**बनारसः** शिवनाथ अग्रवाल ○एच. एन सिंह बिसेन ○आर. सी. सिंह ○जटाशंकर सिंह ○के.के. मिश्रा ○सन्दीप कुमार ○**जमानियाँः** मनीष श्रीवास्तव ○शैलेन्द्र सिंह ○

✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

क्या आप शनि दोष से पीड़ित है?
क्या आप हर समय चिन्ता ग्रसत रहते है?
क्या आपके परिवार में कलह होती रहती है?
क्या आपको दुर्घटना का भय बना रहता है?

जो जान लीजिए आप पर शनि भारी है

तो शनि सिद्ध कीजिए

धारण करें

शनि साफल्य माला

शनि चिंतन प्रदान ग्रह है। इस कारण हर व्यक्ति शनि से डरता है और शनि बाधा का उपाय ढूंढ़ता है। वास्तव में बलवान शनि मनुष्य को विपति में भी लड़ने की क्षमता और ऐसे गुणों का विकास करता है जिससे वह व्यक्ति दूसरों पर हावी रह सकता है। किसी भी देवता को अनुकूल किया जा सकता है तो शनि को भी अनुकूल किया जा सकता है। वैसे विपरीत शनि होने पर मनुष्य उन्माद, रोग, अकारण क्रोध, वात रोग, स्नायु रोग इत्यादि से ग्रसित हो सकता है। शनि जीवन में आकस्मिकता की स्थिति लाता है और जीवन में जो अकस्मात् घटनाएं होती है चाहे वे अच्छे फल की तरफ हों अथवा बुरे फल की ओर, उनका मूल कारक शनि ही है। शनि की पूजा जप साधना, और मंत्र द्वारा इसे तीव्रता से अनुकूल बनाया जा सकता है। और जब यह अनुकूल होता है तो व्यक्ति को रंक से राजा बना देता है। जितने भी राजनीति में उच्च स्थान पर पहुंचते हैं उनका शनि प्रबल होता है। परिवार में भी शनि प्रधान व्यक्ति का वर्चस्व रहता है।

साधना विधान : शनिवार की रात्रि को **9** बजे के बाद साधक गहरे नीले अथवा काले वस्त्र धारण कर नीले रंग के आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुख कर बैठ जाएं। इसके पश्चात् साधक '**शनि साफल्य माला**' को अपने सामने रख कर विनियोग ध्यान करें -

ध्यान : *नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिनं, गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्द्धरम्। चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं, वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम्॥*

ध्यान में पूर्णता होने पर साधक '**शनि साफल्य माला**' से शनि के गायत्री मंत्र एवं शनि सात्विक मंत्र की एक-एक माला मंत्र करें -

शनि गायत्री मंत्र : *॥ ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युपुरुषाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्॥*

शनि सात्विक मंत्र : *॥ ॐ शं शनैश्चराय नमः॥*

इसके बाद शनि के निम्न तांत्रोक्त मंत्र की **7** माला इसी '**शनि साफल्य माला**' से जप करें - *॥ ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।*

शनि साधना के लाभ

- ✧ चिन्तक कारक ग्रह होने से यह व्यक्तित्व में सदैव चिंता प्रदान करता है। लेकिन शनि साधना से अकाल मृत्यु दोष दूर होता है।
- ✧ इसके अलावा शनि साधना से धन हानि, घाटा, मुकदमा, शत्रुता में भी विजय प्राप्त होती है।
- ✧ शनि साधना से मशीनी व्यापार, लोहे का व्यापार अथवा काले रंग की वस्तु के व्यापार में विशेष सफलता प्राप्त होती है।
- ✧ शनि व्यक्ति में उन्माद पैदा करता है और इसकी साधना से स्नायु रोग, अकारण क्रोध, वात-रोग शांत होते हैं।
- ✧ शनि साधना से व्यक्ति की जान-पहचान निम्न स्तरीय लोगों से होकर उन पर वह प्रभुत्व स्थापित करता है। साथ ही यह नेतृत्व का विकास करता है।
- ✧ अकस्मात् होने वाली हानि से भी शनि साधना से ही रक्षा होती है।

शनि साफल्य माला 300/-

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)
फोन : 0291-2432209, 2433623 फैक्स : 0291-2432010

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

A.H.W

रजिस्ट्रेशन नं- 35305/81
With Registrar Newspapers of India
Posting Date 29-30 every Month

Postal No. RJ/WR/19/65/2003-05
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2003-05

माह : अप्रैल में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगें व दीक्षा प्रदान करेंगें। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएगी।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
01-02-03 अप्रैल

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

दिनांक
28-29-30 अप्रैल

वर्ष - 25

अंक - 03

:: संपर्क ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209,2433623, टेलीफैक्स-0291-2432010
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्क्लेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27182248, टेली फैक्स 11-27196700